हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला १३५

# लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी

'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेता

चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन
पोस्ट बाक्स संख्या ११३८
वाराणसी-२२१००१ ( भारत )

## चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन के परीक्षोपयोगी ग्रन्थ

रघुवंशमहाकाव्यम् । "इन्दुकला" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित ।
पं० वैद्यनाथ झा । प्रथम सर्ग ३–००, द्वितीय सर्ग ३–००
षष्ठ सप्तम सर्ग ६–०० तृतीय सर्ग ४–००

विक्रमाङ्कदेव चरितम् । सटिप्पण 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् । आचार्य श्री शेषराज शर्मा रेग्मी । प्रथम सर्ग ६–००

अलङ्कारसारमञ्जरी । 'इन्दुश्री' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
पं० श्री हरेकान्त मिश्र साहित्याचार्य २–५०

काव्यदोष । काव्यदोष एक अनुशीलन । डॉ० जनार्दनस्वरूप अग्रवाल ३०–००

काव्यमीमांसा । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । १–५ अध्याय ३–००

शिशुपालवधम् । सुधा संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । १–४ सर्ग १४–००

कुमारसम्भवमहाकाव्यम् । संस्कृत-हिन्दी टीका । १–५ सर्ग, प्रत्येकसर्ग २–५०
षष्ठ सर्ग ५–००, ६–७ सर्ग ७–००, १–७ सर्ग १६–००

दशकुमारचरितम् । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । पूर्वपीठिका ४–५०
विश्रुतचरित १–२५ सम्पूर्ण २५–००

किरातार्जुनीयम् । 'घण्टापथ' संस्कृत तथा 'प्रकाश' हिन्दी टीकासहित
सम्पूर्ण २०–०० १–५ सर्ग ४–००

छन्दोमञ्जरी । 'प्रभा'-'रुचिरा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १०–००

सूक्तिसंग्रहः । राक्षसकृतः । संस्कृत हिन्दी टीका सहित ३–००

पिंगलछन्दः सूत्रम् । 'हलायुधवृत्ति' तथा 'कादम्बिनी' हिन्दी व्याख्या २–५०

नैषधमहाकाव्यम् । 'जीवातु' 'मणिप्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
१ला सर्ग २–५०, १–३ सर्ग ६–००, १–५ सर्ग १०, १–९ सर्ग १५–००
१०–११ सर्ग १०·००, पूर्वार्ध २५·००, उत्तरार्ध ३५·००, सम्पूर्ण ६०–००

काव्यदीपिका । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित अष्टशिखा २–५०, संपूर्ण ८–००

रसगङ्गाधररहस्य । प्रश्नोत्तरी । पं० मदनमोहन झा ४–००

ध्वन्यालोकरहस्यम् । प्रश्नोत्तरी । पं० शोभितमिश्र ८–००

रघुवंशमहाकाव्यम् । चन्द्रकला संस्कृत-हिन्दीटीकासहित १३–१४ सर्ग ६–००

प्राप्तिस्थान—चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, कचौड़ीगली, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

१३५

# लघुपाराशरी–मध्यपाराशरी

'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेता

व्याख्याकारः—

ज्यौतिषाचार्य–पोस्टाचार्य–

पण्डित श्री अच्युतानन्द

चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रकाशक व विक्रेता,

पोस्ट बाक्स संख्या ११३८

के. ३७/१३०, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी—२२१००१ ( भारत )

# भूमिका

ज्ञात्वा पाराशरकृतं ह्युडुदायदीपं
सम्यङ्न को भवति भाग्यविधौ समर्थः ।
नूनं वदन्ति विबुधा अमुना समानं
शास्त्रं न चास्ति किमपीह फलाय लोके ॥ १ ॥

तत्र ह्यनेकविधिकौशलकीलितान्तै-
र्यद्यप्यकारि विशदा रुचिराऽस्य टीका ।
पूर्वं तथाप्यहमकार्षममूं किमर्थं
व्यर्था विविच्य विबुधा विमुखा न सन्तु ॥ २ ॥

पद्यार्थबोधकरणे ह्यतिमन्दमन्दां
पूर्वैः कृताञ्च बहुलेखसुविस्तृताङ्गीम् ।
ज्ञात्वा मया निखिललोकसुबोधवामा
संक्षेपतः सुविहिताऽत्र सुबोधिनी सा ॥ ३ ॥

तत्रातिमन्दधिषणान्वितमानवानां
ज्ञातुं मयाऽत्र विहिता च पदार्थटीका ।
हिन्द्यां तया यदि भवेदखिलोपकारो
मन्ये श्रमं हि विबुधाः सुफलाय लोके ॥ ४ ॥

मध्यपाराशरी भाषया टीकया
संयुता निर्मिता प्राज्यबोधाय हि ।
तत्र दृष्ट्वा त्रुटिं सज्जनाः संमुदा
शोधयन्त्वाशु सुस्निग्धबुद्ध्या बुधाः ॥ ५ ॥

चै० शु० रामनवमी
सन् १९५१

प्रार्थी—
श्री अच्युतानन्द झा

॥ श्रीः ॥

# लघुपाराशरी

## 'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेता

## अथ संज्ञाध्यायः

अथ मङ्गलाचरणम् —

**सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः।**
**शोणाधरं महः किञ्चद् वीणाधरमुपास्महे ॥ १ ॥**

टीकाकर्तृमङ्गलाचरणम् —

विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणिं कृत्स्नैः सदा सेवितं
श्रीविघ्नेशपदारविन्दयुगलं ध्यात्वा तथा भक्तितः।
स्वान्ते श्रीगुरुपादपद्मयुगलं कल्याणकल्पद्रुमं
टीकामत्र सुबोधिनीं प्रकुरुते भावार्थयुक्तां स्फुटाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—औपनिषदं सिद्धान्तं परमेष्ठिनः शुद्धान्तं वीणाधरं शोणाधरं किञ्चत् महः उपास्महे ॥ १ ॥

सुबोधिनी—ग्रन्थारम्भे विघ्नविघाताय शिष्यशिक्षायै च "समाप्तिकामो मङ्गलमाचरेत्' 'विघ्नध्वंसकामो मङ्गलमाचरे'दिति शिष्टाचारानुमितश्रुतिविहितं मङ्गलमाचरन् स्वेष्टदेवतां समुपास्ते सिद्धान्तमिति। उपनिषदि भवम् औपनिषदं तदौपनिषदं श्रुतिप्रतिपाद्यम्, वादिप्रतिवादिभ्यां निर्णीतोऽर्थः सिद्धान्तस्तत्सिद्धान्तं राद्धान्तम्, "समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ" इत्यमरः परमेष्ठिनः। हिरण्यगर्भस्य सकलजगदुत्पादकस्य शुद्धान्तं स्त्रीस्वरूपम्, शोणो रक्तवर्णोऽधरोऽधरोष्ठो यस्तं यच्छोणाधरं रक्ताधरम्, वीणां धरतीति वीणाधरं वाद्यविशेषहस्तम्, किञ्चित् अनिर्वचनीयम्, । महः तेजः, उपास्महे वयमुपासयामः, अत्र वयमित्यग्रिमश्लोकेन सम्बन्धः। अर्थात्-सरस्वतीमुपासयाम इत्यर्थः।

भाषा—वेदप्रतिपादित वादी और प्रतिवादी से निर्णीत, ब्रह्मा का श्री स्वरूप रक्त अधर वीणा को धारण किए हुए जो कोई तेज है उसकी उपासना करते हैं (अर्थात् सरस्वती की उपासना करते हैं।

अथ प्रतिपाद्यविषयः—

**वयं पाराशरीं होरामनुसृत्य यथामति।**
**उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्मो दैवविदां मुदे ॥ २ ॥**

अ०—वयं यथामति पाराशरीं होराम् अनुसृत्य दैवविदां मुदे उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्मः ॥ २ ॥

सु०—यमिति। वयं यथामति स्वबुद्ध्यनुसारं यथा स्यात्तथा, पाराशरीं पराशरप्रोक्तां, होरां जातकशास्त्रम्, अनुसृत्य यथावद्विविच्य, दैवं विदन्तीति दैवविदस्तेषां दैवविदां=ज्योतिर्विदाम्, मुदे हर्षाय, उडूनि नक्षत्राणि तैर्यो दाय आयुर्दायस्तस्य प्रदीप इव प्रकाशिका आख्या यस्य तमुडुदायप्रदीपाख्यम् "उडुदायप्रदीप" नामकं ग्रन्थं कुर्मः ॥ २ ॥

भा०—हम अपनी बुद्धि के अनुसार पराशर ऋषि के प्रणीत जातकशास्त्रों को यथावद्विचार करके ज्योतिषियों के आनन्द के लिए उडुदायप्रदीप नामक ग्रन्थ रचते हैं ॥ २ ॥

अथ फलकथनार्थमाह—

**फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे।**
**दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता ॥३॥**

अ०—अत्र फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे विंशोत्तरी दशा ग्राह्या अष्टोत्तरी न मता न ग्राह्येत्यर्थः ॥ ३ ॥

सु०—फलानीति। अत्र अस्मिन्ग्रन्थे, फलानि जातकफलानि, नक्षत्रदशाप्रकारेण नक्षत्रदशावशात्, विवृण्महे प्रतिपादयामः, विंशोत्तरी दशा ग्राह्या, अष्टोत्तरी न मता न ग्राह्येत्यर्थः ॥ ३ ॥

भा०—इस ग्रन्थको नक्षत्रदशाके प्रकार से कहते हैं। यहाँ फल कहने में विंशोत्तरी दशा ग्रहण करनी चाहिये, अष्टोत्तरी नहीं ॥ ३ ॥

कति दशा भवन्तीत्याह—

दशा चान्तर्दशा चैव तत्तदन्तर्दशा तथा।
सूक्ष्मभुक्तिः प्राणदशाप्येवं पञ्च दशाः स्मृताः ॥

अथ नक्षत्राद् दशापतिज्ञानार्थमाह—

गणयेत् कृत्तिकाभाच्च यावद्वै जन्मभावधि ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं ग्रहदशा भवेत् ।।
आ चङ् कु रा जी श बु के शु पूर्वाः क्रमाद्भवेयुः स्वदशाधिनाथाः ।

भाषा—कृत्तिका नक्षत्र से अपने जन्मनक्षत्र तक गिने और नौ का भाग देने से एकादि शेष में क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है।

अथ नवग्रहाणां दशावर्षप्रमाणमाह—

रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता—
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ।
रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये
बुधे केतौ शुक्रे क्रमश उदिताः पाकशरदः ।।

भाषा—सूर्य के (६) चन्द्रमा के (१०) मंगल के (७), राहु के (१८), बृहस्पति के (१६), शनि के (१९), केतु के (७), शुक्र के (२०) वर्ष नियत हैं।

### स्फुटार्थंदशाज्ञानचक्रम्—

| नक्षत्र | कृ. उ.फा. उ.षा. | रो. ह. श्र. | मृ. चि. ध. | आ. स्वा. श. | पु. वि. पू. भा. | पु अ. उ. भा. | श्ले. ज्ये. रे. | म. मू. अ. | पू. फा. पू. षा. भ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दशापति | र. | चं. | मं. | रा. | बृ. | शे. | बु. | के. | शु. |
| वर्ष | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २० |

उदाहरण—शाके १८३० सम्वत् १९६५ सन् १३१६ साल, आश्विन शुक्ल सप्तमी शुक्रवार में किसी का जन्म है। उस समय ज्येष्ठा गतर्क्ष है, उसका घट्यादिमान = ५१।५८, वर्तमान नक्षत्र मूल का घट्यादिमान==५०।७ है। अब कृत्तिका से मूल नक्षत्र पर्यन्त १७ हुआ। इसमें ९ का भाग देने से शेष ८ रहा, अतः क्रम-गणना से केतु की दशा हुई।

अथ भयातभभोगसाधनार्थमाह—

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहिता भभोगः ।।

भाषा—पञ्चांग में गत नक्षत्र की घटी और पल जो लिखा हो उसको ६० में घटा कर जो शेष बचे उसमें इष्ट-घटी-पल जोड़ देने से भयात होता है और उसी शेष में इष्टकालिक नक्षत्र-घटी-पल जोड़ देने से भभोग होता है।

अत्र विशेषो मदीयः—

गतर्क्षप्रमाणाद्यदाभीष्टमानं न चाल्पं भवेत्तर्हि साध्यं तदेवम्।
अभीष्टाद्विशोध्यं गतर्क्षप्रमाणं भयातं भभोगो भवेत्पूर्वरीत्या॥

भाषा—अगर पञ्चाङ्ग में गत नक्षत्र के मान से इष्ट घटी-पल अधिक हो तो इष्ट-घटी-पल में गतनक्षत्र के घटी-पल को घटा कर शेष भयात होता है। भभोग का साधन पूर्ववत् यहाँ भी करना चाहिए।

उदाहरण—पूर्वोक्त उदाहरण में गत नक्षत्र ज्येष्ठा का घट्यादिमान=५१। ५८, वर्तमान मूल नक्षत्र का घट्यादिमान=५०।७ और इष्टघटी=१७।२६ इतना है। अब गतर्क्ष घट्यादिमान (५१।५८) को ६० में घटाया शेष ८।२ इतना रहा, इसको इष्ट घटी में जोड़ा जाय तो भयात=२५।२९, फिर उसी शेष को वर्तमान नक्षत्र घट्यादि में जोड़ा तो भभोग=५८।९, इतना हुआ। जहाँ पर गत नक्षत्र के घट्यादिमान से इष्टघटी का मान ज्यादा हो वहाँ उन दोनों का अन्तर भयात होता है। भभोग पूर्ववत् साधन करें।

अथ भुक्तभोग्यदशावर्षानयनमाह

भयातनाडी निहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहृता फलं यत्।
वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम्* ॥ १ ॥

भाषा—भयातनाडी को जिस ग्रह की दशा प्रथम है उसके वर्षों से गुणाकर भभोग से भाग देवे लब्धि वर्ष, मास, दिन, दण्ड, पल, क्रमसे उस ग्रह का भुक्त दशामान होता है। इसको ग्रह के दशावर्ष में घटाने से भोग्य दशामान होता है।
उदाहरण-पूर्वानीत भयात=२५।२९ भभोग=५८।९ और तात्कालिक रवि=

---

* अत्रोपपत्तिः—यदि भभोगघटीभिर्दशावर्षाणि लभ्यन्ते तदा भयातघटीभिः कानीति लब्धानि भुक्तदशावर्षाणि $=\frac{\text{दशाव॰} \times \text{भयातघ॰}}{\text{भभोगघ॰}}$, एवं भोग्यवर्षाणि =

$$\frac{\text{दशाव॰} \times \text{भभोगघ॰}}{\text{भभोगघ॰}} = \frac{\text{दशाव॰} \, (\text{भभोगघ॰} - \text{भयातघ॰})}{\text{भभोगघ॰}} = \frac{\text{दशा॰} \times \text{भभोग॰}}{\text{भभोगघ॰}}$$

$$\frac{\text{दशाव॰} \times \text{भयातघ॰}}{\text{भभोगघ॰}} \; \text{दशाव॰} - \frac{\text{दशाव॰} \times \text{भयातघ॰}}{\text{भभोगघ॰}}, \text{दशाव॰} - \text{भुक्तव॰},$$ इत्युपपन्नम्।

२।१२।४९।२१, यहाँ दशापति केतु है। इसलिये केतु की दशावर्षसंख्या ७ को भयात के एकजातीय १५२१ से गुणा किया तो १०७०३, हुआ, इसमें भभोग के एकजातीय से भाग देने पर लब्ध वर्षादि = ३।००।२४।२१।३ दशा का भुक्त हुआ। इसको दशावर्ष में घटाने से भोग्य वर्षादि = ३।११।५।३८।३७ हुआ।

## स्फुटार्थविंशोत्तरीमहादशा चक्रम्—

| अ. | के. | शु. | र. | चं. | म. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ३ | २० | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ |
| मा. | ११ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दि | ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| द | ३८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| प | ३७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| वर्षोगत | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा. | बृ. | श. | बु. |
| वर्ष | ३ | २३ | २९ | ३९ | ४६ | ६४ | ८० | ९९ | ११६ |
| मा. | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| दि. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| द | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ |
| पं | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ |
| शाके | शाके | शाके | शाके | शाके | शाके | शाके | शाके | शाके | शाके |
| १८ ७ | १८४० | १८६० | १८६६ | १८७६ | १८८३ | ९०१ | १९१७ | १९३६ | १९५३ |
| सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश | सूर्यांश |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ |
| २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |

अथान्तर्दशानयनपद्यम्—

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासस्त्रिंशन्निघ्नं दिनं भवेत्* ॥

भाषा—जिस ग्रह की अन्तर्दशा करनी हो उस ग्रह की दशा के वर्षों को ग्रह के दशावर्ष से गुणा करे। उसमें दस का भाग देवे, लब्धि मास, शेष को तीस से गुणाकर दश का भाग दे तो दिन। इसी प्रकार घटी-पलादि निकल आते हैं।

उदाहरण—यथा रवि की दशा में रव्यादि ग्रहों की अन्तर्दशा लानी है, तो रविदशावर्ष ६ को रवि के दशावर्ष ६ से गुणा किया तो ३६ हुए, इसमें १० का भाग दिया लब्धि मास ३, शेष ६ को ३० से गुणाकर दश का भाग देने से दिन = १८, इस प्रकार रवि को दशा में रवि की अन्तर्दशा मासादि = ३।१८।००।००, इसी प्रकार रवि की दशा में चन्द्रादिग्रह की अन्तर्दशा करनी चाहिए।

अथान्तर्दशायां ध्रुवानयने मदीयपद्यम्—

पाकवर्षप्रमाणं यत्त्रिघ्नं रूपहृतं फलम् । अन्तर्दशायां विज्ञेयं दिनाद्यं ध्रुवकं बुधैः ॥
यद्दशावर्षमानेन विनिघ्नं ध्रुवकं भवेत् । अन्तर्दशादिनाद्यास्तद्दशायां हि ध्रुवापतेः ॥

भाषा—महादशा वर्ष को तीन से गुणा करे अन्तर्दशा में दिनादि ध्रुवा होगी। जिस ग्रह के दशा-वर्ष मानसे ध्रुवा को गुणा करे उस ग्रह की अन्तर्दशा होगी।

उदाहरण—जैसे रवि महादशा वर्ष ६ को ३ से गुणा करने से सूर्य का ध्रुवक दिन १८ हुए। अब सूर्य की दशा-वर्ष संख्या से इसको गुणा किया तो अन्तर्दशा दिन १०८ हुए, इसमें ३० का भाग देने से सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा मासादि-३।१८, इसी तरह सब ग्रहों की अन्तर्दशा सूर्य की दशा में लानी चाहिए।

एवं चन्द्रादि ग्रहों के ध्रुवा पर से सब ग्रहों की अन्तर्दशा लानी चाहिए। जो आगे चक्र में स्पष्ट है।

अथ प्रत्यन्तर्दशायां ध्रुवानयने मदीयपद्यम्—

दशापतिसमामानं समयान्तर्दशापतेः ।

---

* अत्रोपपत्तिः—यदि सर्वग्रहदशावर्षयोगैः ग्रहदशामानं लभ्यते तदा इष्ट-ग्रहदशावर्षैः किमिति लब्धमन्तर्दशावर्षमानम् = $\frac{\text{इ द. ग्र. द.}}{१२०}$, त्रिंशद्गुणितं मासात्मकं जातं = $\frac{\text{इ. द ग्र. द}}{४}$ इत्युपपन्नम् ।

निघ्नं खवेदभक्तं या लब्धिः प्रत्यन्तरे ध्रुवा ॥

अथ सूक्ष्मदशायां ध्रुवानयने मदीयपद्यम्—

दशान्तर्दशावर्षघातेन निघ्नं स्वप्रत्यन्तरस्वामिनो वर्षमानम् ।
फलं तष्टमाकाशनागैर्यदाप्तं घटीपूर्विका सूक्ष्मभुक्तौ ध्रुवा सा ॥

भाषा—दशा और अन्तर्दशा के स्वामियों के वर्ष घात में ४० का भाग देने से प्रत्यन्तर्दशा की दिनादिक ध्रुवा होती है ।

महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यतरर्दशा के स्वामियों के वर्ष के घात में ८० का भाग देवे लब्धि सूक्ष्मदशा की घट्यादिक ध्रुवा होती है ।

सूर्य की दशा में सूर्यादि नवग्रहों की अन्तर्दशा

| ग्र. | सू. | च. | म. | रा. | बृ. | श. | बु. | के | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| व. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| मा | ३ | ६ | ४ | १० | ९ | ११ | १० | ४ | ० |
| दि. | १८ | ० | ६ | २४ | १८ | १२ | ६ | ६ | ० |

चन्द्र की दशा में चन्द्र आदि ग्रहों की अन्तर्दशा

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० |
| १० | ७ | ६ | ४ | ७ | ५ | ७ | ८ | ६ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

मंगल की दशा में मंगलादि ग्रहों की अन्तर्दशा

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० |
| ४ | ० | ११ | १ | ११ | ४ | २ | ४ | ७ |
| २७ | १८ | ६ | ९ | २७ | २७ | ० | ६ | ० |

राहु की दशा मे राहु आदि की अन्तर्दशा

| रा. | बृ. | श. | बु | के. | शु. | सू. | चं. | मं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ |
| ८ | ४ | १० | ६ | ० | ० | १० | ६ | ० |
| १२ | २४ | ४ | १८ | १८ | ० | २४ | ० | १८ |

बृहस्पति की दशा में बृहस्पति आदि की अन्तर्दशा

| बृ | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ |
| १ | ६ | ३ | ११ | ८ | ९ | ४ | ११ | ४ |
| १८ | १२ | ६ | ६ | ० | १८ | ० | ६ | २४ |

शनि की दशा में शनि आदि की अन्तर्दशा

| श. | बु. | के. | शु | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ |
| ० | ८ | १ | २ | ११ | ७ | १ | १० | ६ |
| ३ | ९ | ९ | ० | १२ | ० | ९ | ६ | १२ |

बुध की दशा में बुध आदि की अन्तर्दशा

| बु. | के | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | ० | २ |
| ४ | ११ | १० | १० | ५ | ११ | ६ | ३ | ८ |
| २७ | २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ |

केतु की दशा में केतु आदि की अन्तर्दशा

| के. | शु. | सू. | चं. | म. | रा. | बृ | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | ० | ० | १ | ० | १ | ० |
| ४ | २ | ४ | ७ | ४ | ० | ११ | १ | ११ |
| २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ | २७ |

शुक्र की दशा में शुक्र आदि की अन्तर्दशा

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| ४ | ० | ८ | २ | ० | ८ | २ | १० | २ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### सूर्य की महादशा में सूर्य का अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| ग्र. | सू. | च. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मा. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दि. | ५ | ९ | ६ | १६ | ४ | १७ | १५ | ६ | १८ |
| घ. | २४ | ० | १८ | १२ | २४ | ६ | १८ | १८ | ० |

### चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |
| १५ | १० | २७ | २४ | २८ | २५ | १० | ० | ९ |
| ० | ३० |  | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० |

### मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | १८ | ५६ | १९ | १७ | ७ | २१ | ६ | १० |
| २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० | १८ | ३० |

### राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० |
| १८ | १३ | २१ | १५ | १८ | २४ | १६ | २७ | १८ |
| ३६ | १२ | १८ | ५४ | ५४ | ० | १२ | ० | ५४ |

### वृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ |
| ८ | १५ | १० | १६ | १८ | १४ | २४ | १६ | १३ |
| २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० | २४ | ० | ४८ | १२ |

### शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ |
| २४ | १८ | १९ | २७ | १७ | २८ | १९ | २१ | १५ |
| ९ | २७ | ५७ | ० | ६ | ३० | ५७ | १८ | ३६ |

### बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| १३ | २७ | २१ | १५ | २५ | १७ | १५ | १० | १८ |
| २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ | २७ |

### केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | म. | रा. | वृ. | श. | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | २१ | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ |
| २१ | ० | १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ |

### शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० |
| ० | १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### चन्द्रमा की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० |
| २५ | १७ | १५ | १० | १७ | १२ | १७ | २० | १५ |
| ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० |

### मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | १ | ० | १ | ० | ० |
| १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० | १७ |
| १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० | ३० |

राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ |
| २१ | १२ | २५ | १६ | १ | ० | २७ | १५ | १ |
| ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० |

बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ |
| ४ | १६ | ८ | २८ | २० | २४ | १० | २८ | १२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ |
| ० | २० | ३ | ५ | २८ | १७ | ३ | २५ | १९ |
| १५ | ४५ | १५ | ० | ३० | ३० | १५ | ३० | ० |

बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | २ | २ |
| १२ | २९ | २५ | २५ | १२ | २९ | १६ | ८ | २० |
| १५ | ४५ | ० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ० | ४५ |

केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | ० | ० | १ | ० | १ | ० |
| १२ | ५ | २५ | १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ |
| १५ | ० | ३० | ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| १० | ० | २० | ५ | ० | २० | ५ | २५ | ५ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

## सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| ९ | १५ | १० | २७ | २४ | २८ | २५ | १० | ० |
| ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | १० | ० |

## मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | २२ | १९ | २३ | २० | ८ | २४ | ७ | १२ |
| ३४ | ३ | ३१ | १६ | ४९ | २४ | ३० | २१ | १५ |
| ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

## राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | [illegible] | ० | १ | ० |
| २६ | २० | २९ | २३ | २१ | ३ | १८ | १ | २१ |
| ४२ | २४ | ५१ | ० | ३ | ० | ५४ | ३० | ३ |

## बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ |
| १४ | २३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ | १९ | २० |
| ४८ | १२ | ३६ | ३१ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ |

## शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ |
| ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ |
| १० | ३१ | १६ | ३० | ५७ | १५ | १६ | ५१ | १२ |
| ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | [illegible] | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| २० | २० | २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ |
| ३४ | ४९ | ३० | ५१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ | ३१ |
| ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

केतु की अन्तदशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | २४ | ७ | १२ | ८ | २२ | १९ | २३ | २० |
| ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ | ३ | ३६ | १६ | ४९ |
| ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | स. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | १ | ० | २ | १ | २ | १ | ० |
| १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २६ | ६ | २९ | २४ |
| ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | म. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २१ |
| १८ | १० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० |
| १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० |
| ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

### राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| २५ | ९ | ३ | १७ | २६ | १२ | १८ | २१ | २६ |
| ४८ | ३६ | ५४ | ४२ | ४२ | ० | ३६ | ० | ४२ |

### बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के, | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| २५ | १६ | २ | २० | २४ | १३ | १२ | २० | ९ |
| १२ | ४८ | २४ | २४ | ० | १२ | ० | २४ | ३६ |

### शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ५ | ४ |
| १२ | २५ | २९ | २१ | २१ | २५ | २९ | ६ | १६ |
| २७ | २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ |

### बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ |
| २० | २३ | ३ | १५ | १६ | २३ | १७ | २ | २५ |
| ३ | ३३ | ० | ५४ | ३० | ३३ | ४२ | २४ | २१ |

### केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ |
| २२ | ३ | १८ | १ | २२ | २६ | २० | २९ | २३ |
| ३ | ० | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३१ |

### शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | १ | ३ | २ | ० | ४ | ५ | ५ | २ |
| ० | २४ | ० | ३ | १२ | २४ | २१ | ३ | ३ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
| ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| १६ | २७ | १८ | १८ | १३ | २१ | १५ | १८ | २४ |
| १२ | ० | ५४ | ३६ | १२ | १८ | ५४ | ५४ | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
| १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० |
| १५ | १ | २१ | १२ | २५ | १६ | १ | ० | २७ |
| ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० |

मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
| ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ |
| २१ | २६ | २० | २९ | २३ | २१ | ३ | ८ | १ |
| ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ० | ५४ | ३० |

---

बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
| ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | १ |
| १२ | १ | १८ | १४ | ८ | ८ | ४ | १४ | २५ |
| २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० | २४ | ० | ४८ | १२ |

शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
| ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| २४ | ९ | २३ | २ | १५ | १६ | २३ | १९ | १ |
| ५४ | १२ | १२ | ० | ३६ | ० | १२ | ४८ | ३६ |

बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | ४ | १ | १ | १ | ४ | ३ | ४ |
| २५ | १७ | १६ | १० | ८ | १७ | २ | १८ | ९ |
| ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ | ४८ | १२ |

केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ |
| १९ | २६ | १६ | २८ | १९ | २० | १४ | २१ | १७ |
| ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ | ४८ | १२ | ३६ |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ५ | १ | ० |
| १० | १८ | २० | २६ | २४ | ८ | २ | १६ | २६ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| १४ | २४ | १६ | १३ | ८ | १५ | १० | ५६ | १८ |
| २४ | ० | ४८ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | २ | २ | २ | १ | ० | २ | ० |
| १० | २८ | १२ | ४ | १६ | ८ | २८ | २० | २४ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० |
| १८ | २० | १४ | २३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ |
| ३६ | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० |

राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ |
| ९ | २५ | १६ | २ | २० | २४ | १३ | १२ | २० |
| ३६ | १२ | ४८ | २४ | २४ | ० | २२ | ० | २४ |

शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ४ |
| २१ | ३ | ३ | ० | २४ | ० | ३ | १२ | २४ |
| २८ | २५ | १० | ३० | ९ | १५ | १० | २७ | २४ |
| ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ५ |
| १७ | २६ | ११ | १८ | २० | २६ | २५ | ९ | ३ |
| १६ | २१ | ३० | २७ | ४५ | ३१ | २१ | १२ | २५ |
| ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ | २ | १ |
| २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ | ३ | २६ |
| १६ | ३० | ५७ | १५ | १६ | ५१ | १२ | १० | ३१ |
| १० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | १ | ३ | २ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ |
| १० | २७ | ५ | ५ | २१ | २ | ० | ११ | ६ |
| ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

### सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| १७ | २८ | १९ | २१ | १५ | २४ | १८ | १९ | २७ |
| ६ | ३० | ५७ | १८ | ३६ | ९ | २७ | ५७ | ० |

### चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | २ | २ | ३ | २ | १ | १ | ० |
| १७ | ३ | २५ | १६ | ० | २० | ३ | ५ | २८ |
| ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

### मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | २ | १ | ० | २ | ० | १ |
| २३ | २९ | २३ | ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ |
| १६ | ५१ | १२ | १० | ५१ | १६ | ३० | ५७ | १५ |
| ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

### राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| १ | १६ | १२ | २५ | २९ | २१ | २१ | २५ | २९ |
| ५४ | ४८ | २७ | २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ |

### गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ |
| १ | २४ | ९ | २३ | २ | १५ | १६ | २३ | १६ |
| ३६ | २४ | १२ | १२ | ० | ३१ | ० | १२ | ४८ |

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ |
| २० | २४ | १३ | १२ | २० | १० | २५ | १७ |
| ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ | ३ | ३६ | १६ |
| ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ |
| २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ | २० |
| ३० | ३१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ |
| ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १ | ५ | ४ | ५ | ४ | १ |
| २१ | २५ | २९ | ३ | १६ | ११ | २४ | २९ |
| ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| २५ | १७ | १५ | १० | १८ | १३ | १७ | २१ |
| ३० | ५१ | ५४ | ४८ | २७ | २१ | ५१ | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | २ | २ | ० | २ | ० |
| २९ | १६ | ८ | २० | १२ | २९ | २५ | २९ |
| ४५ | ३० | ० | ४५ | १५ | ४५ | ० | ३० |

### मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० |
| २० | २३ | १७ | २६ | २० | २० | २९ | १७ | २१ |
| ४९ | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ४९ | ३० | ५१ | ४५ |
| ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

### राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| १७ | २ | ३५ | १० | २३ | | १५ | १६ | २३ |
| ४१ | २४ | २१ | १ | ३३ | ० | ५४ | ३० | ३३ |

### गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| १८ | ९ | २५ | ११ | १६ | १० | ८ | १७ | २ |
| ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ |

### शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| ३ | १७ | २६ | ११ | १८ | २० | २६ | २५ | ९ |
| २५ | १६ | ३१ | ३० | २७ | ४५ | ३१ | २१ | १२ |
| ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

---

### केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | २४ | ७ | १२ | ८ | २२ | १९ | २३ | २० |
| ३४ | ३० | २१ | १५ | ३ | ३ | ३६ | १६ | ४९ |
| ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ० | १ | ० | ० | १ | २ | ० | ० |
| १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २६ | ० | २९ | २४ |
| ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २१ |
| १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० |
| १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० |
| ३० | १५ | ३० | ० | २५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | २२ | १९ | २३ | २४ | ८ | २४ | १७ | १२ |
| ३४ | ३ | ३६ | ६ | ४९ | ३४ | ३० | २१ | १५ |
| ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | म. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ | ० |
| २६ | २० | २९ | २३ | २२ | ३ | १८ | १ | २२ |
| २४ | २४ | ४१ | ३३ | ३ | ० | ५४ | ३० | ३ |

गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ |
| १४ | १३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ | १९ | २० |
| ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ७ | ३६ | २४ |

शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ |
| ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ |
| १० | ३१ | १६ | ३० | ५७ | १५ | १६ | ५१ | १२ |
| ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| २० | २० | २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ |
| २४ | ४२ | ३० | ५१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ | ३१ |
| ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

---

शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | २ | ३ | २ | ६ | ५ | ६ | ५ | २ |
| २० | ० | १० | १० | ० | १० | १० | २० | १० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

रवि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ |
| १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | ३ | १ |
| २५ | ५ | ० | २० | ५ | २७ | ५ | १० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### मङ्गल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | १ | २ | १ | ० | २ | ० | १ |
| २४ | ३ | २६ | ६ | २९ | २४ | ४० | २१ | ५ |
| ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

### राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ५ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ |
| १२ | २४ | २१ | ३ | ३ | ० | २४ | ० | ३ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ |
| ८ | २ | १६ | २६ | १० | १८ | १० | २६ | २४ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ५ |
| ० | ११ | ८ | १० | २७ | ५ | ६ | २१ | २ |
| ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

### बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ५ | ४ | ५ |
| २४ | २९ | २० | २१ | २५ | २६ | ३ | १६ | ११ |
| ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

### केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

| के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ० | १ | ० | २ | १ | २ | १ |
| २४ | १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २५ | ६ | २९ |
| ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

अथास्मिन् शास्त्रेऽन्यशास्त्रतो विशेषतामाह—

**बुधैर्भावादयः सर्वे ज्ञेयाः सामान्यशास्त्रतः ।**
**एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमो विशेषतः ॥ ४ ॥**

अ० – बुधैः सर्वे भावादयः सामान्यशास्त्रतः ज्ञेयाः, एतच्छास्त्रानुसारेण विशेषतः संज्ञां ब्रूमः ॥ ४ ॥

सु० —बुधैरिति । बुधैः, पण्डितैः, सर्वे भावादयः तन्वादयो व्ययान्ताः, आदिशब्देन राशयः स्वस्वामिकाः, ग्रहाः स्फुटाः, गृहादिषड्वर्गाः, त्रिकोणकेन्द्रादिसंज्ञाः सहेतवः, इत्यादयः सर्वे पदार्थाः, सामान्यशास्त्रतः माननीयान्यग्रन्थेभ्यः ज्ञेयाः ज्ञातव्याः, एतच्छास्त्रानुसारेण एतस्य पराशरस्य शास्त्रस्य मतेन, विशेषतः संज्ञाम् अन्यशास्त्राद्विशिष्टां संज्ञां ब्रूमः कथयामः ॥ ४ ॥

भाषा पण्डितों को लग्न से लेकर व्यय भावतक द्वादश भाव, स्वामी सहित राशि, ग्रहस्पष्ट, गृहादिषड्वर्ग, त्रिकोण, केन्द्र इत्यादि सब माननीय ग्रन्थों से जानना, इस शास्त्र के अनुसार विशेष जानने योग्य हम कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ प्रसंगात्तन्वादिद्वादशभावसंज्ञामाह—

कल्पोदयाद्यतनुजन्मविलग्नहोरा वागर्थभुक्तिनयनस्वकुटुम्बभानि ।
दुश्चिक्यविक्रमसहोदरवीर्यधैर्यकर्णास्तृतीयभवनस्य भवन्ति संज्ञाः ॥
पातालवृद्धिहिबुकक्षितिमातृविद्यायानाम्बुगेहसुखबन्धुचतुष्टयानि ।
धीदेवराजपितृनन्दनपञ्चमानि रोगांगशस्त्रभयषष्ठरिपुक्षतानि ॥
जामित्रकामगमनानि कलत्रसम्पद् द्यूनास्तसप्तमगृहाणि वदन्ति चार्याः ।
रन्ध्रायुरष्टरणमृत्युविनाशनानि धर्मो गुरुः शुभतपोनवभाग्यभानि ॥
व्यापारमेषूरणमध्यमानं ज्ञानञ्च राज्यास्पदकर्मसंज्ञा ।
एकादशोपान्त्यभवायलाभा रिष्फव्ययद्वादशकान्त्यमानि ॥

भाषा कल्प, उदय, आद्य, तनु, जन्म, लग्न और होरा ये लग्न की वाक्, अर्थ, भुक्ति, नयन स्व और कुटुम्ब ये धनभावकी, दुश्चिक्य, विक्रम, सहोदर, वीर्य, कर्ण और धैर्य ये तृतीय भाव की, पाताल, वृद्धि, हिबुक, क्षिति, माता, विद्या, यान, अम्बु, गेह, सुख और बन्धु ये चतुर्थ भाव की, धी, देव, राज, पिता, और नन्दन ये पञ्चम भाव की, रोग, अंग, शस्त्र, षष्ठ, रिपु और क्षत ये षष्ठ भाव की, द्यून,

और अस्त सप्तम गृह की, रन्ध्र, आयु, अष्ट, रण, मृत्यु और विनाश अष्टम भाव की, धर्म, गुरु, शुभ, तप और नव, ये नवम भाव की, व्यापार, मेषूरण मध्य, मान, ज्ञान, राज्य, आस्पद और कर्म ये दशम भाव की, एकादश, उत्पान्त्य, भव, आय, और लाभ ये एकादश भाव की, रिष्फ, व्यय, द्वादश और अन्त्य ये बारहवें भाव की संज्ञायें हैं।

अथ रव्यादीनामुदयप्रकारमाह—

रव्यारराहुमन्दाश्च पृष्ठेनोद्यन्ति सर्वदा।
शिरसा शुक्रचन्द्रज्ञा जीवस्तूभयतो व्रजेत्॥

भाषा—रवि, मङ्गल, राहु और शनि पृष्ठ से उदय लेते हैं। शुक्र, चन्द्रमा और बुध शीर्ष से उदय लेते हैं। वृहस्पति शीर्ष पृष्ठ दोनों से उदय लेते हैं।

अथ कालनरस्यात्मादिविभागमाह—

आत्मा रविः शीतकरस्तु चेतः सत्त्वं धराजः शशिजोऽथ वाणी।
ज्ञानं सुखं चेन्द्रगुरुर्मदश्च शुक्रः शनिः कालनरस्य दुःखम्॥
आत्मादयो गगनगैर्बलिभिर्बलवत्तराः। दुर्बलैर्दुर्बलाज्ञेया विपरीतःशनिःस्मृतः॥
राजा रविः शशधरश्च बुधः कुमारः सेनापतिः क्षितिसुतः सचिवौ सितेज्यौ।
भृत्यस्तथा तरणिजः सबला ग्रहाश्च कुर्वन्ति जन्मसमये निजमेव रूपम्॥

भाषा—कालपुरुष का सूर्य आत्मा, चन्द्रमा, मन, मंगल, सत्त्व, बुध वाणी, वृहस्पति ज्ञान और सुख, शुक्र वीर्य और शनि दुःख है। जन्मसमय में जिसके रव्यादि ग्रह बलवान् हो तो उस मनुष्य की आत्मा इत्यादि क्रमशः बलवान् होते हैं। जैसे सूर्य बलवान् हो तो मनुष्य की आत्मा बलवान् होती है, एवं भौमादि को भी जानना चाहिए। तथा यदि सूर्यादिग्रह निर्बल हो तो आत्मा इत्यादि निर्बल होता है। शनि का फल उलटा होता है, जैसे शनि निर्बल हो तो सुख और सबल हो तो दुःख करता है। रवि और चन्द्रमा राजा, बुध राजकुमार, मंगल सेनापति, वृहस्पति और शुक्र ये दोनों मन्त्री और शनि भृत्य है। जन्म समय में जो ग्रह बलवान् हो वह अपने सादृश्य रूप को बनाता है।

अथ राश्याधिपानाह—

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कर्कस्याधिपतिः शशी।
मेषवृश्चिकयोर्भौमो बुधो मिथुनकन्ययोः॥
जीवो मीनधनुः-स्वामी शुक्रो वृषतुलाधिपः।
प्राज्ञैरधिपतिः प्रोक्तः शनिर्मकरकुम्भयोः॥

भाषा—सिंह का रवि, कर्क का चन्द्रमा, मेष और वृश्चिक का मंगल, मिथुन और कन्या का बुध, मीन और धनु का बृहस्पति, वृष और तुला का शुक्र, मकर और कुम्भ का शनि स्वामी होता है।

अब यहाँ शंका होती है कि रवि और चन्द्रमा ग्रहों में प्रधान होकर भी एक-एक राशि के स्वामी हुए, पर अन्य ग्रह अप्रधान होकर भी दो-दो राशियों के स्वामी क्यों हुए।

अत्र युक्तिः

कण्ठीरवं विक्रमिणं विलोक्य स्वीयं पदं तत्र चकार सूर्यः।
मेध्या स्वान्तशतया कुलीरे निर्ज वबन्धालयमेणलक्ष्मा॥
अन्ये ग्रहा गृहयियाचिषवः क्रमेण शीतांशुतिग्ममहसोः सदनं समीयुः।
प्रासक्रमेण ददतुर्भवनानि तौ तु ताराग्रहाद्विभवनास्तत एव जाताः॥

अथ राशिसंज्ञां दिक्स्वामिनश्चाह

पुंस्त्री क्रूराक्रूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाश्च।
अजवृषमिथुनकुलीराः पञ्चमनवमैः सहैन्द्राद्याः॥

भाषा—मेष आदि राशियों की पुरुष-स्त्री, क्रूर-अक्रूर, चर-स्थिर-द्विस्वभाव क्रमसे संज्ञा होती है।

यथा—मेष की पुरुष, वृष की स्त्री, मिथुन की पुरुष, कर्क की स्त्री इत्यादि। तथा मेष की क्रूर, वृष की अक्रूर, मिथुन की क्रूर, कर्क की अक्रूर इत्यादि। एवं मेष की चर, वृष की स्थिर, मिथुन की द्विस्वभाव, कर्क की चर सिंह की स्थिर, कन्या की द्विस्वभाव इत्यादि संज्ञा होती है।

मेष' वृष, मिथुन, कर्क ये राशियाँ अपने पाचवें और नवें राशि के साथ पूर्वादि दिशाओं के स्वामी होती हैं। अर्थात् मेष, सिंह, धनु पूर्वदिशा का, वृष, कन्या, मकर, दक्षिण दिशा का, मिथुन, तुला, कुम्भ, पश्चिम दिशा का और कर्क' वृश्चिक, मीन उत्तर दिशा का स्वामी है।

अथ मीनादीनां सलिलादिविशेषसंज्ञामाह—

मीनालिकर्कटमृगाः सलिलाभिधानाः तोयाश्रया घटवधूयुगगोपसंज्ञाः।
निस्तोयभूतलचराः क्रियचापतौलिकण्ठी रवाश्च बहवः प्रवदन्ति सन्तः॥

स्फुटार्थं राशीनां संज्ञाचक्रम्

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
| क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य |
| पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |
| चर | स्थिर | द्विस्व. | चर | स्थिर | द्विस्व. | चर | स्थिर | द्विस्व. | चर | स्थिर | द्विस्व. |
| पृष्ठो. | पृष्ठो. | शीर्षो. | पृष्ठो. | शीर्षो | शीर्षो. | शीर्षो. | शीर्षो. | पृष्ठो. | पृष्ठो. | शीर्षो. | उभयो. |
| रात्रि. | रात्रि. | रात्रि. | रात्रि. | दिन | दिन | दिन | दिन | रात्रि. | रात्रि. | दिन | रात्रि. |
| क्षत्री | ब्राह्म. | वैश्य | शूद्र | क्षत्री. | शूद्र | वैश्य | ब्राह्म | क्षत्री | शूद्र | वैश्य | ब्राह्म. |
| अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल | अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल | अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल |
| निर्ज | जला. | जला | कीट | निर्ज. | जला. | निर्ज. | कीट | निर्ज. | वन | जला. | जला. |
| खनिज | उद्भिज्ज | प्राणिज | खनिज | उद्भिज्ज | प्राणिज | खनिज | उद्भिज्ज | प्राणिज | खनिज | उद्भिज्ज | प्राणिज |

अथ प्रसङ्गात्सूर्यादिभ्यः फलविशेषचिन्तामाह—

सूर्यादात्मपितृप्रभावनिहजा शक्तिश्रियश्चिन्तयेत्—
चेतोबुद्धिनृप-प्रसादजननीसम्पत्करश्चन्द्रमाः ।
सत्वं रोगगुणानुजावनिसुतज्ञातीर्धरासूनुना
विद्या बन्धुविवेकमातुलसुहृत्स्वक्कर्म—कृद्बोधनः ।।
प्रज्ञानित्यशरीरपुष्टितनयज्ञानानि वागीश्वरात्
पत्नीवाहन-भूषणानि मदनव्यापारसौख्यं भृगोः ।
आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्सम्पत्प्रदाता शनिः
सर्पेणैव पितामहं तु शिखिना मातामहं चिन्तयेत् ।।

अथ रव्यादीनां स्थिरत्वादिमाह—

रविः स्थिरः शीतकरश्चरः स्यादुग्रः कुजश्चन्द्रसुतस्तु मिश्रः ।
मृदुःसुरेज्यो भृगुजो लघुश्च शनिः सुतीक्ष्णः कथितो मुनीन्द्रैः ।।

क्रमाच्च रागद्विशरीरभानामुपान्त्यधर्मस्मयरगास्तदीशाः ।
खरेशमादिस्थितराशिनाथावतीव बाधाकरखेचराः स्युः ।।

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यो शुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः ।
दिनकरदिविजेज्यौ जीवभानुज्ञमन्दाः सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात् ।।

स्थानविशेषे शुभाशुभफलमाह—

कामावनीनन्दनराशियाताः सिते दुपुत्रामरवन्द्यमानाः ।
अरिष्टदास्तेऽखिलजातकेषु सदाष्टमस्थः शनिरिष्टदः स्यात् ।।

अथेतरग्रहयोगे ग्रहाणां विशेषफलदायित्वमाह—

अर्केण मन्दः शनिना महीसुतः कुजेन जीवो गुरुणा निशाकरः ।
सोमेन शुक्रोऽसुरमन्त्रिणा बुधो बुधेन चन्द्रः खलु वर्द्धते सदा ।।

भाषा—सूर्य से शनि, शनि से मङ्गल, मङ्गल से बृहस्पति, बृहस्पति से चन्द्रमा, चन्द्रमा से शुक्र, शुक्र से बुध और बुध से चन्द्रमा बढ़ते हैं । अर्थात् सूर्य से शनि का दोष नाश होता है । इसी तरह सब ग्रह एक दूसरे के दोष को नाश करते हैं ।

अथ दोषापहरणमाह—

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः । त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ।।
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषं तु चन्द्रमाः । सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे ।।

भाषा—राहुजन्य जो कुछ दोष होता है उसको बुध नाश करता है ।

राहु और बुध इन दोनों के दोष को शनि नाश करता है ।

राहु, बुध और शनि इन तीनों के दोषों को मङ्गल नाश करता है ।

राहु, बुध ,शनि, मगंल और शुक्र इन पाँचों के दोषों का गुरु नाश करता हैं ।

राहु, बुध, शनि, मगंल, शुक्र, और गुरु इन छ ग्रहों के दोषों को चन्द्रमा नाश करता है ।

राहु, बुध, शनि, मगंल, शुक्र, गुरु और चन्द्रमा इन सात ग्रहों के दोषों को विशेष कर उत्तरायण में रवि नाश करता है ।

स्थानविशेषे स्थितिक्रमविशेषे ग्रहाणां विफलत्वमाह—

सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे ।
भृगुः सपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्ति ॥

भाषा—रवि से युक्त चन्द्र निष्फल होता है। बुध लग्न से चतुर्थ स्थान में, गुरु पञ्चम में, मङ्गल दूसरे में, शुक्र छठे में, शनि सप्तम स्थान में विफल होता है। अर्थात् कुछ फल नहीं देता है।

अथ ग्रहाणां स्वरूपमाह—

भानुर्युगात् प्राङ्कितदेहरक्तश्यामान्वितः पिङ्गलनेत्रकान्तिः ।
पित्तात्मकोऽयं समगात्रयष्टिः प्रतापयुक् सत्त्वगुणोऽल्परोमा ॥
सञ्चारयुक् संकुचितार्थवाक्यः स्वल्पप्रदो दैविकबुद्धियुक्तः ।
चन्द्रः सितांगः समगात्रयष्टिर्वाग्मी परिव्यङ्गविवेकयुक्तः ॥
क्वचित्कृशः शीतलवाक्ययुक्तः सत्त्वाश्रयो वातकफानिलात्मा ।
कोपाग्निनेत्रः सितरक्तगात्रः पित्तात्मकश्चञ्चलबुद्धियुक्तः ॥
कृशाङ्गयुक्तो नलबुद्धियुक्तो भौमः प्रतापी रतिकेलिलोलः ।
दूर्वादलाभः शशिजोऽतिविद्वान् रजोगुणः सूनृतवाक्यजालः ॥
हास्यप्रियः पित्तकफानिलात्मा सद्यः प्रतापी ननु पुंश्चलश्च ।
बृहस्पतिस्तुन्दिलगात्रयष्ठिः कफात्मकः श्रेष्ठमतिः सुविद्वान् ॥
सत्त्वाश्रयः सर्वगुणाभिरामः पिङ्गाक्षमूर्धन्यकचाभिरामः ।
सुलोचनश्चास्फुजिदात्तकामः सुखी बली सुन्दरकान्तिपूर्णः ॥
आनीलवर्णाङ्कितरोमयुक्तो रजोगुणः सर्वगुणाभिरामः ।
जात्मस्तु मन्दः कृशदीर्घगात्रः पिंगेक्षणः क्रूरकथाभिरामः ॥
स्थूलद्विजस्तामसबुद्धियुक्तो वातात्मको वाक्कठिनस्तु निन्द्यः ।
बलेन निश्चित्य वदेद् ग्रहाणां, तत्प्राश्निके जन्मनि तद्गुणांस्तु ॥

भाषा—सूर्य-चतुरस्रशरीर, रक्तश्यामवर्ण, नेत्रकान्ति पीतवर्ण, पित्तात्मक, समान शरीर, प्रतापी, सत्यगुणवान् अल्पकेश, घूमनेवाला, वाक्य का अर्थ संकोच युक्त थोड़ा देने वाला और दैवी बुद्धि युक्त है।

चन्द्रमा—श्वेतवर्ण, समशरीर, बोलने में चतुर, गोलाकार अंग, विवेकी, कहीं कृश कहीं स्थूल, ठढे वाक्य बोलने वाबा, सत्वगुणी, कफवायुप्रकृति।

मंगल—कोप से रक्तनेत्र, श्वेतरक्त (पाटल) रंग, पित्तात्मक, चञ्चलबुद्धियुक्त कृश, तामसबुद्धियुक्त, प्रतापी और काम के लिए अति चञ्चल।

बुध—दूर्वादलश्याम, अतिविद्वान्, रजोगुणी, सत्यवादी, हास्यप्रिय, पित्त-कफ-वायुप्रकृति, तत्काल प्रताप वाला और व्यभिचारी।

बृहस्पति—बड़ा पेटवाला, कफात्मक, श्रेष्ठबुद्धिवाला, अच्छा विद्वान्, सत्वगुणी, संपूर्ण गुणों को जानने वाला, शिर, केश और नेत्र पीले और प्रसन्न।

शुक्र—सुन्दर नेत्रवाला, पूर्णकाम, सुखी, बलवान्, सुन्दरकान्ति, समृद्धिपूर्ण, नीलरंग से चिह्नित, बहुत रोम, रजोगुणी, सम्पूर्ण गुण जानने वाला।

शनि—दुष्टस्वभाव, झूठ-फरेब वाला, कृशलम्बा शरीर, पीले नेत्र वाला, क्रूर स्वभाव, कठिन केश से सुन्दर, मोटे दाँत वाला, तामसबुद्धियुक्त, वातात्मक, कठोर वाणी बोलने वाला, निन्दा के योग्य।

ग्रहों के बल का निश्चय करके जो बलाधिक ग्रह हो उनके गुण को प्रश्न और जन्म में कहना चाहिए।

अथ ग्रहाणां पीडाकारणप्रकारमाह

सदाग्निरोगज्वरवृद्धिदीपनक्षयातिसारादिकरोगसंकुलैः।
नृपालदेवावनिदेवकिंकरैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः॥
पाण्डुदोषजलदोषकामलापीनसादिरमणीकृतामयैः।
कालिकासुरसुवासिनीगणैराकुलं च कुरुते तु चन्द्रमाः॥
पित्तवातकफशास्त्रपावकग्रन्थिरुग्व्रणदरिद्रजामयैः।
वीरशैवगणभैरवरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः॥
गुह्योदराद्रुक्श्वसमीरकुष्ठमन्दाग्निशूलग्रहणीरुगाद्यैः।
बुधादिविष्णुप्रियदासभूतैरतीव दुःखं शशिजः करोति॥
आचार्यदेवगुरुभूसुरशापदोषैः शोकं च गुल्मरुजमिन्द्रगुरुः करोति।
कान्ताविकारजनिमेहरुगासुराद्यैः स्वेष्टाङ्गनाजनकृतैर्भृशमासुरेज्यः।
दारिद्र्यदोषनिजकर्मपिशाचचोरैः क्लेशं करोति रविजः सह सन्धिरोगैः।
कण्डूयसूरिरिपुकृत्रिमकर्मरोगैः सञ्चारहीनलघुजातिगणैश्च केतुः॥
करोत्यपस्मारवसूरिरज्जुदद्रुकृमिप्रेतपिशाचभूतैः।
उद्बन्धनेनाथ विषुकुष्ठरोगैर्विधुन्तुदश्चातिभयं नराणाम्॥
आद्यन्तमध्यभवनोपगता नभोगाश्चादित्यभूमितनयौ शनिशीतरश्मी।
जीवासुरेन्द्रसचिवौ फलदाः क्रमेण शुभ्रांशुजः सकलफलप्रदः स्यात्॥

अथैतच्छास्त्रे दृष्टौ विशेषमाह—

**पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजाः पुनः ।**
**विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् ॥ ५ ॥**

अ०—सर्वे सप्तमं पश्यन्ति, पुनः शनिजीवकुजाः त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् विशेषतः पश्यन्ति ॥ ५ ॥

सु०—पश्यन्तीति । सर्वे रव्यादयो ग्रहाः सप्तमं पश्यन्ति स्वाधिष्ठितस्थानात् सप्तमं स्थानं तत्रस्थं खेटं चावलोकयन्ति पुनः शनिजीवकुजाः सौरिगुरुभौमाः, क्रमेण क्रमशश्च, त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् पश्यन्ति । तद्यथा शनिस्त्रिदशं तृतीयं दशमं पूर्णदृशा पश्यति । जीवः त्रिकोणं पञ्चमं नवमं पूर्णदृशावलोकयति । कुजश्चतुर्थाष्टमं पूर्णदृशा पश्यति ।

नन्वयं विशेषतः संज्ञां ब्रूम इति महत्त्वारम्भत्या को विशेषोऽभिहितः, सर्वजातकपुस्तकेष्वीदृश्या एव दृष्टेरुक्तत्वात् सामान्यशास्त्रादेव तज्ज्ञानं शक्यमिति चेन्न । अन्यजातकपुस्तकेषु पादार्धपादोनादिदृष्टेरुक्तत्वादत्र केवलं पूर्णदृष्टेरेव ग्रहणात् तद्वैलक्षण्येन विशेषाववोधनात्तज्ज्ञानस्य सामान्यशास्त्रेणानभ्युपगमात् ।

अथ पूर्वैरेतेषां ग्रहाणां पूर्णावलोकने विशेषत्वे कारणं कल्पितम्, तथा स्वस्थानात्सप्तमस्थानं तद्रक्षणं सर्वेषामावश्यकम् । उक्तञ्च —

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ।
स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन् हि रक्षति ॥

अतः सर्वे ग्रहाः सप्तमस्थानं पूर्णदृशा पश्यन्ति, एवञ्च तृतीयं पराक्रमस्थानं दशमं राज्यस्थानञ्चास्ति, अनयो रक्षणं भृत्यकार्यं मुख्यम् अतो भृत्यग्रहः शनिस्तृतीयं दशमं च पूर्णदृशा पश्यति ।

पञ्चमं विद्यास्थानं नवमं धर्मस्थानं विद्याशिक्षणं धर्मशिक्षणं च गुरोर्मुख्यं कर्म तेन गुरुः नवमं च पूर्णदृशावलोकयति ।

चतुर्थं सुखस्थानम् अष्टमम् आयुःस्थानम् अनयोः परिरक्षणं सेनानायकस्य मुख्यं कर्म, अतः सेनानायको भौमः चतुरष्टमं पूर्णदृशावलोकयति ॥ ५ ॥

भाषा—सूर्यादि समस्त ग्रह सप्तमस्थान को पूर्णदृष्टि से देखते हैं। फिर विशेष करके क्रम से तृतीय । दशम को शनि, पञ्चम को बृहस्पति, और चतुर्थ अष्टम भवन को मंगल पूर्णदृष्टि से देखते हैं। इस ग्रन्थ में पूर्णदृष्टि ही प्रधान है पाददृष्टि नहीं ॥ ५ ॥

अत्र वराहमिहिर एवमाह—

पूर्णं पश्यति रविजस्तृतीयदशमे त्रिकोणमपि जीवः ।
चतुरस्रं भूमिसुतः सिताकबुधहिमकराः कलत्रं च ।। स्पष्टम्

तत्रैव सामान्यमाह—

दशमतृतीये नवपञ्चमे चतुर्थाष्टमे कलत्रं च ।
पश्यन्ति पादवृद्धया फलानि चैवं प्रयच्छन्ति ।।

भाषा—ग्रह जहाँ पर स्थित रहता है, वहाँ से दशम और तृतीय स्थान को एक चरण की दृष्टि से, नवम और पञ्चम स्थान को दो चरण की दृष्टि से, चतुर्थ और अष्टम गृह को तीन चरण की दृष्टि से और सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है । और फल भी इसी तरह देता है । अर्थात् जो ग्रह एकचरण की दृष्टि से देखता है वह चतुर्थांश फल को देता है । जो दो चरण की दृष्टि से देखता है वह आधा फल देता है । जो तीन चरण की दृष्टि से देखता है वह पादोन फल देता है । जो पूर्ण दृष्टि से देखता है वह पूर्ण फल देता है ।

एवमन्यत्रप्याह—

पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्योरर्धं त्रिकोणयुगलेऽखिलखेचराणाम् ।
पादोनदृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति ।। स्पष्टम् ।

तत्र विशेषः

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभः स्यात् ।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमारः समर्थः सकलगगनवासाः सप्तमे दृग्बलाढ्याः ।।

अथ ग्रहाणामूर्ध्वदृष्ट्यादिमाह—

अथोर्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षेण कवीन्दुसून्वोः ।
शशाङ्कगुर्वोः समभागदृष्टिरधोक्षिपातस्त्वहिनाथशून्योः ।।

अथ तात्कालिकशुभत्वविचारे त्रिकोणाधिपतीनां शुभत्वं त्रिषडायाधिपतीनामशुभत्वं चाह—

**सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।**
**पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः ।। ६ ।।**

अ०—त्रिकोणनेतारः सर्वे ग्रहाः शुभफलप्रदाः भवन्ति । यदि त्रिषडायानां पतयस्तदा पापफलप्रदाः भवन्ति ।। ६ ।।

सु०—सर्वं इति। त्रिकोणनेतारः पञ्चमनवमाधीशाः, सर्वे ग्रहाः शुभा अशुभाश्च, शुभफलप्रदा भवन्ति। ग्रहा इत्यनेनैव सिद्धे शुभपापग्रहभेदेन फलस्य पुरतो वक्ष्यमाणत्वादत्र सर्वं इति। तेन सर्वे स्वभावतः शुभाः पापाश्च ग्रहास्त्रिकोणस्वामिनश्चेत् शुभफलप्रदा भवन्तीति फलितोऽर्थः।

यदि त्रिषडायानां तृतीयषष्ठैकादशानां पतयः स्युस्तदा पापफलप्रदा भवन्ति। एतेन त्रिकोणं शुभस्थानमशुभं च त्रिषडायस्थानमिति ॥ ६ ॥

भाषा—त्रिकोण ( ९,५ ) के स्वामी शुभफलदायक होते हैं। और त्रिषडाय ( ३, ६, ११ ) भवनों के स्वामी अशुभफल देते हैं। अर्थात् त्रिकोण शुभ स्थान है, और त्रिषडाय अशुभ स्थान है ॥ ६ ॥

अथापरं विशेषमाह—

**न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि।**
**क्रूराश्चेदशुभं ह्येते प्रबलाश्चोत्तरोत्तरम् ॥ ७ ॥**

अ०—सौम्याः यदि केन्द्राधिपाः तर्हि नृणां शुभं न दिशन्ति। चेत् क्रूराः केन्द्राधिपाः तर्हि अशुभं न दिशन्ति हि एते उत्तरोत्तरं प्रबलाः ॥ ७ ॥

सु०—न दिशन्तीति। सौम्याः स्वाभाविकशुभग्रहाः पूर्णचन्द्रबुधगुरुशुक्राः, यदि चेत्, केन्द्राधिपाः लग्नचतुर्थसप्तमदशमराशिपतयः स्युस्तदा नृणां मनुष्याणां, शुभं शुभफलं, न दिशन्ति न प्रयच्छन्ति। शुभग्रहा अपि केन्द्राधिपतित्वेन निमित्तेन अशुभफलमेव दिशन्तीत्यर्थः। चेदपि क्रूराः स्वाभाविकपापग्रहाः सूर्यभौमशनयः केन्द्राधिपाः केन्द्रपतयः स्युस्तदा अशुभम् अशुभफलं न दिशन्ति। अशुभग्रहा अपि केन्द्राधिपतित्वेन निमित्तेन शुभं दिशन्तीत्यर्थः। अथैषां बलाबलमाह, हि निश्चयेन एते त्रिकोणपतयस्त्रिषडायपतयः केन्द्रपतयश्च उत्तरोत्तरं प्रबलाः बलवन्तो भवन्ति। अर्थात् पञ्चमेशान्नवमेशः प्रबलः तथा तृतीयेशाद् षष्ठेशः प्रबलः षष्ठेशादेकादशेशश्च, एवं लग्नेशाच्चतुर्थेशश्चतुर्थेशात्सप्तमेशः सप्तमेशाद् दशमेशः प्रबल इति। अत्र तदुक्तं भवति—यो ग्रह उक्तरीत्या बलवांस्तस्यैव फलं वाच्यं नान्यस्येति ॥ ७ ॥

भाषा—जो शुभग्रह पूर्णचन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र केन्द्र ( १।४।७।१० ) भवनों के अधिपति हों तो मनुष्य को शुभ फल नहीं देते हैं। और यदि क्रूर ग्रह-सूर्य, मङ्गल और शनि केन्द्रभवनों के स्वामी हों तो अशुभ फल नहीं देते हैं, अर्थात् शुभग्रह के समान फल देते हैं ये उत्तरोत्तर क्रम से बली हैं। जैसे पञ्चमेश से नव-

मेश बली है। और तृतीयेश से षष्ठेश, षष्ठेश से एकादशेश बली है। और लग्नेश से चतुर्थेश, चतुर्थेश से सप्तमेश, सप्तमेश से दशमेश बली है। इस तरह जो ग्रह बलवान् हो उसी का फल कहना ॥ ७ ॥

अथ सम्बन्धवशाद् ग्रहाणां शुभाशुभफलप्रदत्वमाह—

**लग्नाद् व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः।**
**स्थानान्तरानुगुण्येन भवतः फलदायकौ ॥ ८ ॥**

अ०—लग्नात् व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः स्थानान्तरानुगुण्येन फलदायकौ भवतः ॥ ८ ॥

सु०—लग्नाद्व्ययेति। लग्नात् जन्मलग्नात्, व्ययद्वितीयेशौ द्वादशद्वितीयराशिस्वामिनौ, परेषाम् अन्येषां ग्रहाणां, साहचर्यतः सहचरस्य भावः साहचर्यं तस्मात् साहचर्यतः सहावस्थानात्, तथा स्थानान्तरानुगुण्येन अन्यत्स्थानं स्थानान्तरं तस्यानुगुण्यं साहाय्यं तेन फलदायकौ भवत। अयं तदुक्तं भवति—शुभग्रहसाहचर्ये सति द्वितीयद्वादशेशयोः शुभफलत्वम् अशुभग्रहसाहचर्ये चाशुभफलप्रदत्वमिति। इदं शुभाशुभफलप्रदत्वं यस्मिन्भावे तावुभौ तिष्ठतस्तद्भावद्वारैव ददत इत्याह—स्थानान्तरानुगुण्येनेति। मित्रादिस्थानस्थत्वे मित्रादिद्वारा शुभफलप्रदत्वं शत्रुभावस्थत्वे शत्रुद्वारैवाशुभफलप्रदत्वमित्यर्थः। ८ ॥

भाषा—लग्न द्वादशेश और द्वितीयेश अन्यग्रहों के साहचर्य से जिस स्थान पर बैठे हों उस स्थान के अनुसार फल देते हैं। जैसे मित्र गृह में बैठे हों तो मित्र द्वारा, शत्रु भवन में बैठे हो तो शत्रु द्वारा शुभाशुभ फल को देते हैं ॥ ८ ॥

अथाष्टमेशस्य शुभाशुभत्वमाह—

**भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः।**
**स एव शुभसन्धाता लग्नाधीशोऽपि चेत्स्वयम् ॥ ९ ॥**

अ०—भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशः शुभप्रदो न भवति, स एव स्वयं लग्नाधीशः अपि चेत् तदा शुभसन्धाता भवति ॥ ९ ॥

सु०—भाग्यव्ययाधिपत्येनेति। भाग्यव्ययाधिपत्येन भाग्यान्नवमाद्व्ययो द्वादशः अर्थादष्टमस्थानं तस्य आधिपत्यं स्वामित्वं तेन हेतुना रन्ध्रेशोऽष्टमभवनाधीशः शुभप्रदो न भवति। स एव अष्टमेश एव स्वयं, लग्नाधीशो लग्नस्वामी, अपि निश्चयेन, चेद्यदि तदा शुभसंधाता शुभस्यैव कारको भवतीति। ९ ॥

भाषा—भाग्यस्थान से द्वादशस्थान के स्वामी होने के कारण अष्टमेश शुभ फल को नहीं देता है। पर वही अष्टमेश यदि लग्न का स्वामी हो तो शुभ फल को देता है ॥ ९ ॥

अथ केन्द्रेशत्वमशुभं सौम्यग्रहाणामुक्तं तत्र गुरुशुक्रयोर्विशेषमाह—

**केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः।**
**मारकत्वेऽपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः ॥ १० ॥**

अ०—गुरुशुक्रयोः केन्द्राधिपत्यदोषः तु बलवान्, अपि च तयोः मारकस्थानसंस्थितिः मारकत्वे बलवती ॥ १० ॥

सु०—केन्द्राधिपत्येति। गुरुशुक्रयोः केन्द्राधिपत्यदोषः लग्नचतुर्थसप्तमदशमेशत्वप्रयुक्तो दोषः ( न दिशन्ति शुभं नृणामित्यादिना प्रतिपादितदोषः ) बलवान् बलिष्ठो भवति। अत्र विशेषमाह—अपि निश्चयेन च, तयोः पूर्वोक्तयोः गुरुशुक्रयोः मारकस्थानसंस्थितिः लग्नात्सप्तमद्वितीयस्थानसंस्थितिः "द्वितीय' सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते इति" मारकत्वे बलवती भवति। अर्थादन्यापेक्षया तौ बलवन्तौ मारकग्रहाविति। १० ॥

भाषा—बृहस्पति और शुक्र का केन्द्रा ( १।४।७।१० ) धिपत्यजन्यदोष प्रबल है। यहां विशेष यह है कि अगर केन्द्रस्वामी होकर गुरु शुक्र मारकस्थान ( २।७ ) में पड़े तो दूसरों की अपेक्षा ये प्रबल मारकेश होते हैं ॥ १० ॥

अथ सूर्यचन्द्रयोरष्टमेशत्वदोषे विशेषमाह—

**बुधस्तदनु चन्द्रोऽपि भवेत्तदनु तद्विधः।**
**न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत् ॥ ११ ॥**

अ०—तदनु बुधः तद्विधो भवेत्, तदनु चन्द्रोऽपि भवेत्, सूर्याचन्द्रमसोः तु रन्ध्रेशत्वदोषो न भवेदिति ॥ ११ ॥

सु०—बुध इति। तदनु गुरुशुक्रयोरनन्तरं, बुधः तद्विधः भवेत्, केन्द्रेशत्वदोषवान् भवेत्, गुरुशुक्रयोरपेक्षयाऽल्पानिष्टकरो भवेदित्यर्थः। तदनु बुधादनन्तरं, चन्द्रः चन्द्रमास्तद्विधः अल्पानिष्टकरो भवेदिति। मारकस्थानसंस्थितिदोषोऽपि गुरुशुक्रयोरपेक्षया बुधस्याल्पानिष्टकरस्तस्मादपि न्यूनदोषकरश्चन्द्रस्य। सूर्याचन्द्रमसोः सूर्यचन्द्रयोः, रन्ध्रेशत्वदोषः लग्नादष्टमेशत्वदोषः। ( भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो नेत्यादिना प्रतिपादितः ) न भवेत् ॥ ११ ॥

भाषा—बृहस्पति और शुक्र की अपेक्षा बुध केन्द्र का स्वामी हो तो अल्प दोषवाला है। बुध से चन्द्रमा अल्प दोष वाला है। मारकस्थान-स्थितिजन्य दोष भी इसी प्रकार जानना, सूर्य और चन्द्रमा यदि अष्टमेश हो तो अष्टमेश-जन्य दोष नहीं होता है ॥ ११ ॥

अथ पापग्रहाणां केन्द्राधिपतित्वेन शुभकारित्वं यदुक्तं तत्र विशेषमाह—

**कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता।**

**त्रिकोणस्यापि नेतृत्वे न कर्मेशत्वमात्रतः ॥१२॥**

अ०—कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्तता शुभकारिता त्रिकोणस्य अपि नेतृत्वे (सति) भवति कर्मेशत्वमात्रतो न ॥ १२ ॥

सु०—कुजस्येति। कुजस्य कुत्सितं जन्म जायते यस्मादसौ कुजः पापस्तस्य पापग्रहस्य, कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता केन्द्रेशत्वप्रयुक्ता "न दिशन्ति शुभं नृणामित्यादौ प्रतिपादिता" या शुभकारिता शुभकारित्वं, सा त्रिकोणस्य अपि निश्चयेन, नेतृत्वे आधिपत्ये ज्ञेया, कर्मेशत्वमात्रतः केन्द्राधिपत्यमात्रतो न ज्ञेया, त्रिकोणेशत्वाभावे केवलं कर्मनेतृत्वमात्रेण न शुभकारित्वमित्यर्थः ॥ १२ ॥

भाषा—पापग्रह केन्द्रेश होने से शुभफलदायक जो कहा गया है वह त्रिकोणेश भी हो तो जानना, केवल केन्द्रेश होने से शुभफलदायक नहीं होता है ॥ १२ ॥

अथ राहुकेत्वोः शुभाशुभत्वमाह—

**यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ।**

**तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ ॥ १३ ॥**

अ०—प्रबलौ तमोग्रहौ यत् यत् भावगतौ अपि यत् यत् भावेशसंयुतौ वा स्यातां तत् तत् फलानि अपि प्रदिशेताम् ॥ १३ ॥

सु०—यद्यदिति। प्रबलौ बलवन्तौ, तमोग्रहौ राहुकेतू यद्यद्भावगतौ यस्मिन् यस्मिन् भावे स्थितौ, अपि निश्चयेन, वा अथवा, यद्यद्भावेशसंयुक्तौ येन येन भावेशेन संयुतौ स्यातां, तत्तत्फलानि तानि तानि शुभाशुभफलानि प्रदिशेताम् ॥ १३ ॥

भाषा—प्रबल राहु और केतु जिस भाव में पड़े हों अथवा जिस भावेश के साथ बैठे हों उसी के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं ॥ १३ ॥

इति संज्ञाध्यायः प्रथमः।

## अथ योगाध्यायः

तत्र सामान्ययोगानाह—

**केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम् ।**
**इतरैरप्रसक्ताश्चेद् विशेषफलदायकाः ॥ १ ॥**

अ०—केन्द्रत्रिकोणपतयः चेत् इतरैः अप्रसक्ताः ते हि परस्परं सम्बन्धेन विशेषफलदायकाः भवन्ति ॥ १ ॥

सु०—केन्द्रत्रिकोणपतय इति । केन्द्रत्रिकोणपतयः केन्द्राणि प्रथमचतुर्थ-सप्तमदशमस्थानानि, त्रिकोणे नवमपञ्चमस्थाने तत्पतय इति केन्द्रत्रिकोणपतयः, चेद्यदि इतरैः केन्द्रत्रिकोणातिरिक्तस्थानाधिपैः त्रिषडायाधीशैरित्यर्थः अप्रसक्ताः सम्बन्धरहिताः स्युस्तर्हि, परस्परं मिथः, सम्बन्धेन विशेषफलदायकाः भाग्ययोग-कर्तारो भवन्ति ॥ १ ॥

भाषा—केन्द्र ( १, ४, ७, १० ) के स्वामी त्रिषडाय ( ३, ६, ११, ) के स्वामी से यदि सम्बन्ध न करे तो परस्पर सम्बन्ध होने से विशेष फलदायक होते हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थान्तरे चतुर्विधसम्बन्धानाह—

व्यत्यस्ताश्रयसम्बन्धश्चान्योन्यालोकसम्भवः ।
एकस्य राशौ संस्थित्या तदीशालोकनादपि ॥
सहवासाच्च संम्बन्धा इत्येते स्युश्चतुर्विधाः ।
अत्रापि पूर्वपूर्वाः स्युः सम्बन्धा बलवत्तराः ॥

भाषा—सम्बन्ध चार प्रकार से होते हैं । दोनों परस्पर स्थान में हों (१), परस्पर एक दूसरे को देखता हो ( २ ), एक दूसरे के स्थान में हो और दूसरा उसको देखता हो ( ३ ), दोनों एक स्थान में हों ( ४ ), ये क्रम से प्रबल होते हैं । जैसे पहला सम्बन्ध से दूसरा, दूसरे से तीसरा, तीसरे से चौथा प्रबल होता है । अतः सबसे प्रबल सम्बन्ध चौथा है ।

अथ केन्द्रत्रिकोणेशयोर्दोषयुक्तत्वेन न योगहानिरित्याह—

**केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम् ।**
**सम्बन्धमात्राद् बलिनौ भवेतां योगकारकौ ॥ २ ॥**

अ०—केन्द्रत्रिकोणनेतारौ स्वयं दोषयुक्तौ अपि सम्बन्धमात्राद् बलिनौ सन्तौ योगकारकौ भवेताम् ॥ २ ॥

सु०—केन्द्रत्रिकोणनेताराविति । केन्द्रत्रिकोणनेतारौ केन्द्रत्रिकोणस्वामिनौ, स्वयं दोषयुक्तौ नीचत्वास्तगतत्वादिदोषयुक्तौ, अपि निश्चयेन, सम्बन्धमात्रात् अष्टसु सम्बन्धेषु कस्माच्चिदपि सम्बन्धात्, बलिनौ योगकारकौ भाग्ययोगकारकौ भवेताम् । अत्र केन्द्रत्रिकोणेशयोः सम्बन्धवशादष्टौ योगा भवन्ति । तद्यथा—लग्नेशपञ्चमेशयोः सम्बन्धादेको योगः, चतुर्थेशपञ्चमेशयोः सम्बन्धाच्चतुर्थः, लग्नेशनवमाधिपयोः सम्बन्धात्पञ्चमः चतुर्थेशनवमाधिपयोः सम्बन्धात्षष्ठः, सप्तमेशनवमाधिपयोः सम्बन्धात्सप्तमः, दशमेशनवमाधिपयोः सम्बन्धादष्टम इति । २ ॥

भाषा—केन्द्रेश और त्रिकोणेश अपने आप दोष से युक्त हों तो भी सम्बन्ध मात्र से बली होते है, और भाग्य योगकारक होते हैं ॥ २ ॥

अथ ग्राह्यसम्बन्धानाह —

**निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः ।**
**एकत्रान्यतरो वाऽपि वसेच्चेद्योगकारकौ ॥ ३ ॥**

अ०—उभौ तौ व्यत्ययेन धर्मकर्मणोः निवसेताम् एकत्र वाऽन्यतरः अपि चेत् तदा योगकारकौ भवेताम् ॥ ३ ॥

सु०—निवसेतामिति । उभौ द्वौ, तौ केन्द्रत्रिकोणाधीशौ, व्यत्ययेन वैपरीत्येन, धर्मकर्मणोः केन्द्रत्रिकोणयोः निवसेताम् अर्थात् केन्द्रेशस्त्रिकोणे त्रिकोणेशः केन्द्रे तिष्ठेत्तदायमेकः सम्बन्धः । एकत्र एकस्थान एव निवसेताम् अर्थादुभौ केन्द्रे वा त्रिकोणे वर्तमानौ स्यातां तदाऽयं द्वितीयः सम्बन्धः । वाऽन्यतरः तयोर्मध्ये कश्चिदेकः अन्यस्य राशौ स्थितः, अर्थात् केन्द्रेशस्त्रिकोणे वा त्रिकोणेशः केन्द्रे वसेच्चेत्तदाऽयं तृतीयः सम्बन्धः स्यात् । पूर्वोक्तत्रयाणां सम्बन्धानां कस्यचिदेकस्य सत्वे तौ केन्द्रत्रिकोणाधीशौ योगकारकौ भवेताम् । अत्र सम्बन्धस्वरूपावलोकनेनैव प्रथमसम्बन्धाद् द्वितीयस्तस्मात् तृतीयो न्यून इति ज्ञायते ॥ ३ ॥

भाषा—केन्द्रेश त्रिकोण में और में त्रिकोणेश केन्द्र में हो तो पहला सम्बन्ध केन्द्रेश और त्रिकोणेश दोनों केन्द्र में वा त्रिकोण में हो तो दूसरा सम्बन्ध, केवल

केन्द्रेश त्रिकोण में वा त्रिकोणेश केन्द्र में हो तो तीसरा सम्बन्ध होता है। इसमें प्रथम सम्बंध से द्वितीय सम्बन्ध और द्वितीय सम्बन्ध से तृतीय सम्बन्ध न्यून है। अतः तीसरा सम्बंध सबसे न्यून है ॥ ३ ॥

अथ योगेषूत्कृष्टतामाह—

**त्रिकोणाधिपयोर्मध्ये सम्बन्धो येन केनचित् ।**
**बलिनः केन्द्रनाथस्य भवेद्यदि सुयोगकृत् ॥ ४ ॥**

अ०—त्रिकोणाधिपयोः मध्ये येन केनचित् यदि बलिनः केन्द्रनाथस्य सम्बन्धो भवेत् तदा स सुयोगकृत् भवति ॥ ४ ॥

सु०—त्रिकोणाधिपयोरिति । त्रिकोणाधिपयो; पञ्चमनवमाधिपयोर्मध्ये, येन केनचित् पञ्चमाधिपेन नवमाधिपेन वा, यदि चेत् बलिनः बलवतः केन्द्रनाथस्य केन्द्राधिपस्य, सम्बन्धो भवेत्तदा, स सम्बन्धः, सुयोगकृत् उत्कृष्ट-योगकारको भवेत् ॥ ४ ॥

भाषा—पञ्चमेश वा नवमेश में से किसी एक से यदि बली केन्द्रेश का सम्बन्ध हो तो उत्कृष्ट योगकारक होता है ॥ ४ ॥

अथ योगानां फलसमयमाह—

**दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणोः ।**
**दशाद्वयीमध्यगतस्तदयुक्शुभकारिणाम् ॥ ५ ॥**

अ०—प्रायशः योगकारिणोः दशाद्वयीमध्यगतः तदयुक्शुभकारिणां दशा अपि योगः भवेत् ॥ ५ ॥

सु० · दशास्वपीति । प्रायशः बाहुल्येन, योगकारिणोः योगकारकग्रहयोः दशाद्वयीमध्यगतः दशाद्वयसमाहारो दशाद्वयी तन्मध्यगतः एकस्य दशाऽन्य-स्यान्तर्दशा तन्मध्यगतः तदयुक्शुभकारिणां योगकारकग्रहसम्बन्धवर्जितानां शुभग्रहाणां, दशाप्रत्यन्तर्दशासु, अपि निश्चयेन, योगः शुभाप्तिर्भवेत् ॥ ५ ॥

भाषा—विशेष करके योगकारी ग्रह की दशा में उसके सम्बन्धी ग्रह की अन्तर्दशा में इन दोनों से सम्बन्ध रहित शुभग्रह की प्रत्यन्तर्दशा में शुभफल प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

अथ पापग्रहाणां सम्बन्धेन योगफलसमयमाह—

**योगकारकसम्बन्धात् पापिनोऽपि ग्रहाः स्वतः ।**

**तत्तद्भुक्त्यनुसारेण दिशेयुर्योगजं फलम् ॥ ६ ॥**

अ०—स्वतः पापिनः अपि ग्रहाः योगकारकसम्बन्धात् तत्तद्भुक्त्यनुसारेण योगजं फलं दिशेयुः ॥ ६ ॥

मु०—योगकारकेति । स्वतः स्वभावात्, पापिनोऽपि ग्रहाः योगकारकसम्बन्धात् योगकारकयोर्ग्रहयोः कस्माच्चिदेकादुक्तसम्बन्धान्यतमसम्बन्धात्, तत्तद्भुक्त्यनुसारेण तस्य तस्य भुक्तयोः दशा अन्तर्दशास्तदनुसारेण, योगजं फलं दिशेयुः दद्युः । ६ ॥

भाषा—स्वयं पापग्रह भी हों योगकारक ग्रह के साथ सम्बन्ध होने से अपनी दशा में, योगकारक की अन्तर्दशा में शुभ फल देते हैं ॥ ६ ॥

अथ भाग्ययोगान्तरमाह—

**केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकः ।**
**अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किं परम् ॥ ७ ॥**

अ०—केन्द्रत्रिकोणाधिपयोः एकत्वे (सति) योगकारकः स्यात् यदि ( पुनः ) अन्यत्रिकोणपतिना (सह) सम्बन्धः (तदा) परं किं (श्रेष्ठम्) । ७ ॥

मु०—केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरिति । केन्द्रत्रिकोणाधिपयोः केन्द्रेशत्रिकोणेशयोः, एकत्वे अभेदे, सति, य एव केन्द्राधिपः स एव त्रिकोणाधिप इत्यर्थः । योगकारकः स्यात् । यदि पुनः अन्यत्रिकोणपतिना अन्यत्रिकोणाधीशेन, सम्बन्धस्तदा परं किं श्रेष्ठं, न किमपीत्यर्थः । ॥ ७ ॥

अथ राहुकेत्वोर्योगकारकत्वमाह—

**यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ।**
**नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥ ८ ॥**

अ०—यदि तमोग्रहौ केन्द्रे वा त्रिकोणे निवसेतां ( तत्र ) अन्यतरेणापि नाथेन सम्बन्धात्तु योगकारकौ ( भवतः ) ॥ ८ ॥

सु०—यदि केन्द्र इति। यदि चेत्, तमोग्रहौ राहुकेतू, केन्द्रे (१, ४, ७, १०) वा त्रिकोणे (९,५) निवसेतां तत्र अन्यतरेण केन्द्रस्य वा त्रिकोणस्य वा नाथेन स्वामिना, केन्द्रे वर्तमानौ चेत् त्रिकोणाधिपेन त्रिकोणे चेत् केन्द्राधिपेनेत्यर्थः। तत्सम्बन्धात् योगकारकौ भवेतां भाग्ययोगकारकौ स्याताम् ॥ ८ ॥

भाषा—यदि राहु वा केतु केन्द्र में होकर त्रिकोणाधीश से सम्बन्ध करता हो वा त्रिकोण में होकर केन्द्रेश से सम्बन्ध करता हो तो भाग्ययोगकारक होता है ॥ ८ ॥

अथ योगभङ्गमाह—

**धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि।**
**तयोः सम्बन्धमात्रेण न योगं लभते नरः ॥ ९ ॥**

अ०—धर्मकर्माधिनेतारौ यदि रन्ध्रलाभाधिपौ (स्यातां तदा) तयोः सम्बन्धमात्रेण नरः योगं न लभते ॥ ९ ॥

सु०—धर्मकर्माधिनेताराविति। धर्मकर्माधिनेतारौ त्रिकोणकेन्द्राधीशौ, यदि रन्ध्रलाभाधिपौ अष्टमेशैकादशेशौ, (अत्रैतदुक्तं भवति त्रिकोणेशोऽष्टमेशः केन्द्रेशोऽष्टमेशो वा लाभेशो यदि भवेत्तदा) तयोः त्रिकोणकेन्द्रेशयोः, सम्बन्धमात्रेण केवलसम्बन्धेनैव, नरो योगं योगफलं न लभते न प्राप्नोति ॥ ९ ॥

भाषा—यदि त्रिकोणेश। अष्टमेश वा केन्द्रेश अष्टमेश होकर एकादशेश हो तो केन्द्रेश और त्रिकोणेश इन दोनों के सम्बन्धमात्र से योगफल नहीं होता ॥ ९ ॥

अथ प्रसंगाद् ग्रन्थान्तराद्राजयोगानाह—

कन्यामीननृयुग्मगेहैर्हरिधनुःकुम्भस्थितैः खेचरैः
सेनामत्तमतंगवाजिविपुलो राजा यशस्वी भवेत्।
तौलिच्छागवृषावसानगृहगैर्जातोऽखिलक्ष्मापतिर्गोचापान्त्यभकेन्द्रगैः पृथुयशाः पृथ्वीश्वरो जायते ।
कन्यामेषतुलामृगेन्द्रघटगैर्जातो महीपालको
दुश्चिक्यप्रतिभारसातलगतैर्बह्वर्थदेशाधिपः।
खेटा विक्रमबन्धुपुत्रगृहगा द्वौ वित्तधर्मस्थितौ
शेषौ लग्नकलत्रराशिसहितौ राजा भवेद्धार्मिकः ।
तारेशहोरासहिता नभोगा जातो यशस्वी मनुजाधिपः स्यात्।
सौम्यास्तपोऽभिगृहोपयाताः पापा रिपुव्योमगता नरेशः ॥

लग्नास्पदानंगगृहोपयाता बलान्विताः शोभनखेचरेन्द्राः ।
कुजार्कपुत्रौ नवमायसंस्थौ नृपो भवेत्सर्वगुणाभिरामः ॥
वर्गोत्तमांशोपगते विलग्ने चन्द्रेऽथवा चन्द्रविमुक्तखेटः ।
सुखास्पदानंगगृहोपयातैर्विलोकितैर्मानवनायकः स्यात् ।
अश्विन्यामुदयस्थिते भृगुसुते सर्वग्रहैरीक्षिते
जातो राजकुलाग्रजो रिपुकुलध्वंसी बहुस्त्रीरतः ।
हित्वा नीचनवांशमम्बरचरैरन्यार्द्यैः स्वभागान्वितै-
रेको लग्नगतो यदि क्षितिपतिः पश्चादिकैर्वित्तवान् ॥
शुक्रेऽरिनीचमपहाय कुटुम्बसंस्थे लग्नेश्वरे बलयुते पृथिवीपतिः स्यात् ।
चन्द्रेऽतिमित्रनिजभागगते निशायां शुक्रेक्षिते नृपतिरन्यविलोकहीने ॥
मीने मीननवांशके भृगुसुते लग्नास्थिते भूपतिः ।
स्वोच्चे लग्नगृहाधिपे बलयुते राजा शशांकेक्षिते ।
लग्नस्वामिनि तुंगमन्दिरगते नीचारिभागं विना
केन्द्रस्थानगते नभोगवियुते जातो महीपालकः ।
भारयस्थे निजतुंगमित्रभवने सम्पूर्णगात्रे विधौ
लग्नादास्पदवित्तराशिगतयोः शन्यारयोर्भूपतिः ।
चन्द्रे पूर्णकलान्विते बलयुते लग्नं विना केन्द्रगे
दृष्टे दानवमन्त्रिणा च गुरुणा राजा महीदानकृत् ।
एकस्मिन् परमोच्चगेऽतिसुहृदा दृष्टे यदि क्ष्मापति-
स्तत्तुल्यो भृगुनन्दने बलयुते लाभेऽथवा रिष्फगे ।
द्वित्रिव्योमचरेषु तुंगगृहगेष्विन्दौ कुलीरे स्थिते
लग्ने पूर्णबलान्विते नरपतिः सर्वत्र पूज्यो भवेत् ॥
सर्वे चोपचयस्थिताः शुभखगाः पापा विलग्नस्थिता
मानस्था यदि वा जितारिनिचयः क्रूरो महीपालकः
भानौ सप्तमगे निशाकरयुते तुंगादिवर्गस्थिते
सौम्यासौम्यनिरीक्षितेऽतिचपलो राजाऽथवा तत्समः ॥
चापार्धसिंहभवनोदयगे धराजे मित्रेक्षिते निजबलार्जितराज्यकर्ता ।
दुश्चिक्यधर्मसुतगा रविचन्द्रजीवा वीर्यान्विता यदि कुबेरसमो नृपालः ॥

नीचं गतो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः ।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥

नीचस्थिते ग्रहनवांशपतौ त्रिकोणे केन्द्रेऽथवा चरगृहे यदि जन्मलग्ने ।
तद्भावपे चरगृहांशसमन्विते वा जातो महीपतिरिति प्रबलोऽथवा स्यात् ॥

मानस्थानपतौ पराभवगते पारावतांशेऽथवा
स्वोच्चस्वर्क्षसुहृन्नवांशकगते राजाधिराजो भवेत् ।
जीवस्य व्ययगे शनौ सहजगे लाभेऽथवा भास्करे
रिस्फे लग्नपतौ तु निर्जरगुरावुर्वीशराजो भवेत् ॥
लग्ने नोचगृहे पुरन्दरगुरौ रन्ध्रे सपापग्रहे
तद्राश्यंशसमन्विते यदि तथा राजाधिराजो भवेत् ।
भाग्येशस्य नवांशपे तनयगे बन्धुस्थिते वा नृपो
दृष्टे वाशशिजे सुरेन्द्रगुरुणा युक्ते स राजप्रियः ॥
भाग्येशेन निरीक्षिते शशिसुते केन्द्रस्थिते भूभुजा
तुल्यत्वं समुपैति जातमनुजो लग्नस्थिते वाक्पतौ ॥
केन्द्रे वा यदि कोणगे रविसुते मूलत्रिकोच्चोच्चगे
लाभेशेन निरीक्षिते बलयुते भूपालतुल्यो भवेत् ॥
लग्ने शीतकरे गुरौ सुखगते कर्मस्थिते भार्गवे
तुङ्गस्वर्क्षगते दिवाकरसुते राजाऽथवा तत्समः ।
अन्त्योपान्त्यविलग्नवित्तसहजव्यापारगेहेषु वा
सौम्यव्योमचरेषु भूपतिसमो राजाधिराजप्रियः ॥
मन्दे चोत्तमवर्गके बलयुते नीचांशवर्ज्ये गुरौ
भानौ शोभनदृष्टिभागसहिते राजप्रियस्तत्समः ।
राहौ कर्मणि लाभगे रविसुते भाग्याधिपेनेक्षिते
लग्नेशे यदि नीचखेचरयुते पृथ्वीशतुल्यो भवेत् ॥
नीचंगता द्वित्रिचतुग्रहेन्द्राः षष्ठ्यंशके शोभनभागयुक्ताः ।
स्वतुंगराश्यंशसमन्विते वा धरापतिर्धार्मिकचक्रवर्ती ॥
लग्नात्कर्मशुभाधिपौ शुभगृहाद् व्यापारधर्मेश्वरौ
मानादास्पदभाग्यपौ च सहितावन्योन्यराशिस्थितौ ।

अन्योन्येक्षणकेन्द्रगौ धनपतेः सम्बन्धिनौ चेद्धनी
जातो यानपकाग्रपेक्षितयुतौ बह्वर्थयप्नाधिपः ॥
षट्सु ग्रहेषूच्चगृहस्थितेषु राजाधिराजोऽखिलभूपतिः स्यात् ।
उच्चं गतैः पञ्चभिरिन्द्रवंशे लग्नस्थिते सर्वजनावनीशः ॥
कुटुम्बसंस्थे रविजे चतुर्भिः स्वोच्चं गतैः सर्वमहीपतिः स्यात् ।
मेषोदयस्थे यदि चन्द्रपुत्रे स्वोच्चं गते देवगुरौ नृपालः ।
चन्द्रे वृषोदयगते यदि षड्भिरन्यैर्दृष्टेऽतिबाल्यवयसि क्षितिनायकः स्यात् ।
तुगंस्थितैकखचरे निजमित्रजातैरन्यैः समेति नरपालसमानभाग्यम् ॥
वर्गोत्तमे वा यदि पुष्करांशे शौरेन्दुदेवेन्द्रगुरौ नृपालः ॥
कर्मस्थिते शोभनदृष्टियुक्ते सम्पूर्णगात्रे शशिनि क्षितीशः ॥
गुरुसितयुतचन्द्रे चापगे चन्द्रसूनौ यदि तनुगृहयाते भूमिजे कन्यकायाम् ।
मृगसुखभवनस्थे भानुपुत्रे नृपः स्यादतिशयबलयुक्तः सर्वभूपालपूज्यः ॥
कन्यावसानयुगचापमृगाननस्थैः सौम्येन्दुभौमगुरुभानुसुतैर्नृपालः ।
मीनोदये शशिनि पूर्णतनौ बलाढ्ये स्वोच्चे कुजे रवियुते घटगे नरेशः ॥
मृगोदयस्थे यदि भूकुमारे कुलीरगे चन्द्रमसि क्षितीशः ।
धराजपूषामरवन्द्यमाना मृगाजकुम्भोपगता नरेशः ॥
लग्नाधितेतरयुते यदि पूर्णचन्द्रे शुक्रज्ञदेवगुरुदृष्टियुते च राजा ।
वर्गोत्तमांशसहिता.गुरुशुक्रभौमाः पापा न केन्द्रभवनोपगता नरेशः ।
शीर्षोदयेषु निखिलद्युचरेषु चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षणयुते कटके महीपः ।
लग्नाधिपे नवमगे दशमस्थिते वा लग्ने सुधाकरयुते पृथिवीपतिः स्यात् ॥
चापार्धं गतवान् सहस्रकिरणस्तत्रैव ताराधिपो
लग्ने भानुसुतेऽतिवीर्यसहिते स्वोच्चे च भूनन्दनः ।
यद्येवं भवति क्षितेरधिपतिः सन्त्यज्य शौर्यं भयाद्
दूरादेव हि तस्य यान्ति रिपवो दग्धाः प्रतापाग्निना ।
उपचयगृहसंस्था जन्मपो यस्य चन्द्रा-
च्छुभगृहभवांशं केन्द्रयाताश्च सौम्याः ।
सकलबलवियुक्ता ये च पापाभिधानाः
स भवति नरनाथः शक्रतुल्यो बलेन ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे स्वर्क्षे शशी जन्मनि यस्य जन्तोः ।
स शास्ति पृथ्वीं बहुरत्नपूर्णां बृहस्पतिः कर्कटगोपगश्चेत् ।।
यस्य त्रिकोणे रविरुच्चगोऽपि वा स्वराशिसंस्था रविशुक्रसौमजाः ।
तृतीयषष्ठाष्टमगा निशाकरात् कुर्वन्ति गोपालमिव क्षितीश्वरम् ।।
अर्केन्दू सुखराशिस्थौ मन्देन्दू दशमस्थितौ ।
कुजोदये च सञ्जातो यदि राजा न संशयः ।।
दिवाकरोदये सिंहे शुक्रांशर्कविवर्जिते ।
कन्यागते बुधे जातो नीचोऽपि पृथिवीपतिः ।।

रविशशिबुधशुक्रैर्व्योम्नि मित्रांशकस्थैर्न च रिपुभवनस्थैर्नाप्यदृश्यैर्न नीचैः ।
स भवति नरपुत्रो भूपतिः स्यात्प्रयाणे गजमदजलसेकैः सिच्यते यस्य रेणुः ।।

क्षमासुतः स्वोच्चमुपाश्रितो बली रवीन्दुवाचस्पतिभिर्निरीक्षितः ।
भवेन्नरेन्द्रो यदि कुत्सितस्तदा समस्तपृथ्वीपरिरक्षणक्षमः ।।
बुधोदये सप्तमगे बृहस्पतौ चन्द्रे कुलीरे सुखराशिगे मले ।
नियद्गते भार्गवनन्दने गृहे प्रशास्ति पृथ्वीमगदी निराकुलः ।।

प्रधानबलसंयुक्तः सम्पूर्णः शशलाञ्छनः । एकोऽपि कुरुते जातं नराधिपमरिन्दमम् ।।
देवमन्त्री कुटुम्बस्थो भार्गवेण समन्वितः । करोति वसुधानाथं निर्जितारातिमण्डलम् ।

लग्नेशे केन्द्रराशिस्थे कर्मेशे वृद्धिराशिगे ।
भाग्येशे लाभगे जातश्चिरं जीवी महीपतिः ।।
रविलुप्तकरः सौम्यः स्वस्थो मूलत्रिकोणगः ।
सर्वविद्याधिको राजा नेतरेषां खचारिणाम् ।।
मानपुत्रोदयस्थौ वा मन्दावनिसुतौ यदि ।
पूर्णेन्दौ गुरुराशिस्थे जातो राजा भविष्यति ।।
बली विलग्नाधिपतिश्च केन्द्रे भूपालयोगं कुरुते नराणाम् ।
तन्मित्रदृष्टे यदि नीचवंशे जातोऽपि राजा नृपवन्दितो वा ।।
जन्माधिपः स्वोच्चगृहे मृगाङ्कं पश्यत्यवश्यं यदि भूमिपालः ।
गजादिसेनातुरगादिसंघैर्जितारिकोटिर्जगति प्रजातः ।

लग्नं विहाय केन्द्रस्थे चन्द्रे पूर्णबलान्विते । गुरुभार्गवसंदृष्टे जातो राजा भवेन्नरः ।।
लग्नेशे केन्द्रभावस्थे नीचमूढारिमं विना नान्यग्रहयुते राजा सर्वभौमो भविष्यति ।।
गुरुचन्द्र दिवानाथाः सुतविक्रमधर्मगाः । जातो यदि महीपालः कुबेरसमवित्तवान् ।।

चापोदयस्थे बलिनि प्रभाकरे महीसुते कर्मगते सशीतगौ ।
उपान्त्यगे वा भृगुजे व्ययस्थिते सुरेन्द्रतुल्यो नृपतिः प्रजायते ।।
त्रिक्रमायारिगाः पापा जन्मपः शुभवीक्षतः ।
राजा भवति तेजस्वी समस्तजनवन्दितः ।

अथ मालिकायोगानाह—

लग्नादिसप्तगृहगा यदि सप्तखेटा जातो महीपतिरनेकगजाश्वनाथः ।
वित्तादिगोनिधिपतिः पितृभक्तियुक्तो धीरोग्ररुग्गुणवान् नरचक्रवर्ती ।।
जातो यदा त्रिक्रममालिकायां भूपः स शूरो धनिकश्च रोगी ।
सुखादिकश्चेद् बहुदेशभाग्यभोगो सदा दानपरो महीपः ।।
पुत्राद्याः यदि मालिका नरपतिर्यज्वाऽथवा कीर्तिमान्
जातः षष्ठगृहात् कश्चिद्धासुखप्राप्तो दरिद्रो भवेत् ।
कामादिर्गृहमालिका यदि बहुस्त्रीवल्लभं जयते
दीर्घायुर्धनवर्जितो नरवरः स्त्रीर्जितश्चाष्टमात् ।
धर्मादिर्गृहमालिका गुणनिधिर्यज्वा तपस्वी विभुः
कर्माद्या यदि धर्मकर्मनिरतः संपूजितः सज्जनैः
लाभाद्राजवरांगनामणिपतिः सर्वक्रियादक्षको
जातो रिष्फगृहाद् बहुव्ययकरः सर्वत्र पूज्यो भवेत् ।।

अथ प्रसंगाद् दरिद्रयोगानाह—

भाग्येश्वरादतिबलो निधनेश्वरो वा लग्नाधिपश्चिर गतावगुरुर्यदि स्यात् ।।
केन्द्राद् बहिर्दिनकरस्य कराभितप्तो लाभाधिपो यदि विहीनबलो दरिद्रः ।।

लाभारिव्ययरन्ध्रपुत्रगृहगा जीवारमन्देन्दु जा—
नीचस्थानगता यदा रविकरच्छन्नास्तदा भिक्षुकः ।
भाग्यस्थानगतो दिनेशतनयः सौम्येतरैरीक्षितो—
लग्नस्थः शशिनन्दनो रवियुतो नीचांशगो भिक्षुकः ।
जीवशुक्ररविनन्दनभूमिपुत्रा रन्ध्रारिरिष्फसुतकर्मगता यदि स्युः ।
लग्नेश्वरादतिबलो व्ययभावनाथो नीचस्थितो रविकराभिहतो दरिद्रः ।।
शुक्रार्यद्विजराजभूमितनया नीचस्थिता जन्मनि
व्योमाये नवमे कलत्रतनये जातो दरिद्रो भवेत् ।

लग्ने दानवपूजितेऽमरगुरौ पुत्रे धरानन्दने
लाभे रात्रिकरे तृतीयभवने नीचं गते भिक्षुकः ।
लग्ने चरे चरनवांशगते सितेन दृष्टे च नीचगुरुणा यदि भिक्षुकः स्यात् ।
जातो विनाऽमरपुरोहितलग्नराशिजीवे रिपुव्ययगते तु भवेद् दरिद्रः ॥
जातः स्थिरे लग्नगतेषु पापाः केन्द्रत्रिकोणोपगताश्च सर्वे ।
केन्द्राद् बहिःस्थानगताश्च सौम्या भिक्षाशनः स्यात्परयोषितश्च ॥
चरे विलग्ने निशि सौम्यषेटास्त्रिकोणकेन्द्रोपगता न वीर्याः ।
खलग्रहाः केन्द्रबहिःस्थिताश्चेद् भिक्षाशनं नित्यमुपैति जातः ॥
पापा नीचस्थानगाः पापकर्मा सौम्यः नीचस्थानगा रूढपापाः ।
जीवे नीचस्थानगे कर्मराशौ नीचे भौमे नन्दनस्थे तथैव ।
नीचांशगास्तु ग्रहदृष्टियाता जातस्य नीचं फलमाशु दद्युः ।
नीचंगतास्तु गनवांशकस्थाः सौम्यं फलं व्योमचराः प्रकुर्युः ॥

अथ दारिद्रयोगफलम्—

निर्भाग्यो विकलेन्द्रियो विषमधीर्दारात्मजैर्निन्दितो
भिक्षाशी विषमस्थितो विषमवाक् शिश्नोदरे तत्परः ।
अन्यायार्जनतत्परस्त्वनुदिनं मात्सर्यवाक् कण्टकी ।
नित्यं स्यात्परदाररतहृदयो नीचोऽधमूको जडः ॥
दरिद्रयोगे कलहप्रियः स्यात् कुष्ठी परेषां हितहृत्कृतघ्नः ।
वाचालको भूसुरभक्तिहीनः कुदारहीनः कुनखी च जातः ॥

इत्युडुदायप्रदीपे योगाध्यायो द्वितीयः ।

## अथायुर्विचाराध्यायः

तत्रादावायुःस्थानं मारकस्थानं चाह—

**अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ।**
**तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ १ ॥**

**अ०**—अष्टमं हि आयुषः स्थानम्, अष्टमात् अष्टमं च यत् अपि आयुषः स्थानमुच्यते । तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानम् उच्यते ॥ १ ॥

सु०— अथायुर्दायाध्यायो व्याख्यायते—अष्टममिति । अष्टमं जन्मलग्नादष्टमस्थानं हि निश्चयेन, आयुषः स्थानम् । यच्च अष्टमादष्टमं स्थानं जन्मलग्नात् तृतीयस्थानं, तदपि आयुषः स्थानम् उच्यते कथ्यते, तयोरपि आयुःस्थानयोरष्टमतृतीययोरपि, व्ययस्थानं पृथक् पृथक् तयोर्व्ययस्थानम् अष्टमस्य व्ययस्थानं सप्तमं, तृतीयस्य व्ययस्थानम् द्वितीयम्, अतः जन्मलग्नात् सप्तमं द्वितीयं च स्थानं, मारकस्थानम् उच्यते निगद्यते ॥ १ ॥

भाषा—जन्मलग्न से अष्टम स्थान निश्चय करके आयुःस्थान है। और अष्टम से अष्टम-तीसरा स्थान भी आयुःस्थान है। इन दोनों से द्वादश स्थान अर्थात् सप्तम और दूसरा स्थान मारक स्थान कहलाते हैं। १ ॥

अथ सप्तमापेक्षया द्वितीयस्य बलवत्त्वमाह—

**तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद् द्वितीयं बलवत्तरम् ।**

अ० तत्र अपि आद्यव्ययस्थानात् द्वितीयं बलवत्तरं भवति ।

सु०—तत्रापीति । तत्र सप्तमद्वितीययोर्मध्ये अपि निश्चयेन, आद्यव्ययस्थानात् सप्तमस्थानात्, द्वितीयं मारकस्थानं अर्थाज्जन्मलग्नाद् द्वितीयस्थानं, बलवत्तरम् अतिशयेन बलवत् भवतीति शेषः ॥

भाषा—इन दोनों मारकस्थानों में सप्तम से द्वितीय प्रबल मारक स्थान होता है।

अथ मारकनिर्णयमाह—

**तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः ॥ २ ॥**
**तेषां दशाविपाकेषु सम्भवे निधनं नृणाम् ।**
**तेषामसम्भवे साक्षाद् व्ययाधीशदशास्वपि ॥ ३ ॥**

अ०—तत् ईशितुः दशाविपाकेषु सम्भवे ( सति ) नृणां निधनं ( भवेत् ), ( तदसम्भवे ) तत्र गताः तेन संयुक्ताः ( ये ) पापिनः तेषां दशाविपाकेषु सम्भवे ( सति ) नृणां निधनं ( भवेत् ), तेषाम् असम्भवे साक्षात् व्ययाधीशदशासु अपि निधनं ( भवेत् ) ॥ २-३ ॥

सु०—तदीशितुरिति । तत् तस्य पूर्वप्रतिपादितमारकस्थानद्वयस्य, ईशितुः स्वामिनः, दशाविपाकेषु दशान्तर्दशादिरूपकालेषु, सम्भवे आयुर्दायावसानसमयं प्राप्ते सति नृणां मानवानां, निधनं मरणं भवेत् तदसम्भवे तत्र तस्मिन्

मारकस्थाने, गताः प्राप्ताः, तेन मारकस्वामिना, संयुताः अन्विताः ये पापिनः पापग्रहाः, तेषां दशाविपाकेषु नृणां निधनं भवेत्। तेषां मारकस्थानस्थितानां मारकेशेन संयुतानां पापग्रहाणाम्, असम्भवे साक्षाद् व्ययाधीशदशासु साक्षाद् व्ययाधीशा लग्नतो व्ययस्थानाधीशास्तेषां दशासु, अपि निश्चयेन, निधनं भवेत् ॥ २—३ ॥

भाषा—मारकेश की दशा अन्तर्दशा के समय में आयुर्दाय का अन्त समय उपस्थित होने पर मनुष्य की मृत्यु होती है। इसके असम्भव होने पर मारक स्थान में स्थित वा मारकेश से युक्त जो पापग्रह हों उनकी दशा-अन्तर्दशा में मनुष्य का मरण होता है। इसका असम्भव हो तो जन्मलग्न से बारहवें स्थान के पति की दशादि में मरण होता है ॥ २–३ ॥

अथ पूर्वोक्तासम्भवे निर्णयमाह—

**अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः।**

**क्वचिच्छुभानां च दशा ह्यष्टमेशदशासु च ॥ ४ ॥**

अ०—पुनः एतेषाम् अलाभे (सति) व्ययेशितुः सम्बन्धेन क्वचित् शुभानां दशा क्वचिच्च अष्टमेशदशासु हि ( निधनं भवेत् ) ॥ ४ ॥

सु०—अलाभ इति। पुनः भूयः एतेषां पूर्वोक्तानां योगानाम्, अलाभे अप्राप्ते, व्ययेशितुः द्वादशेशस्य, सम्बन्धेन सम्बन्धचतुष्टयेन, क्वचित् कुत्रचित्, शुभानां शुभग्रहाणां, दशा पाकः, मृत्युदा भवेत्। क्वचिच्च अष्टमेशदशासु जन्मलग्नादष्टमभवनाधीशदशासु, हि निश्चयेन, मनुष्याणां निधनं भवेत् ॥ ४ ॥

भाषा—यदि पूर्वोक्त ग्रहों की दशा न मिलती हो तो व्ययेश के सम्बन्धी शुभ ग्रहों की दशा मरण को देती है। इसका भी असम्भव हो तो अष्टमेश की दशा में मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

अथ पूर्वोक्तासम्भवे पुनर्निर्णयमाह—

**केवलानां च पापानां दशासु निधनं क्वचित्।**

**कल्पनीयं बुधैर्नॄणां मारकाणामदर्शने ॥ ५ ॥**

अ०—( पूर्वोक्तानामखिलानाम् ) मारकाणाम् अदर्शने ( सति ) केवलानां पापानां दशासु च क्वचित् बुधैः नॄणां निधनं कल्पनीयम् ॥ ५ ॥

सु०—केवलानामिति। पूर्वोक्तानामखिलानां मारकाणां मारकयोगानाम्, अदर्शने अलाभे, सति केवलानां मारकसम्बन्धिनापि रहितानां, पापानां पाप-

खेटानां, दशासु च पुनः क्वचित् कुत्रचित्, बुधैः पण्डितैः, नृणां मानवानां, निधनं मरणं, कल्पनीयम् ॥ ५ ॥

भाषा—यदि पूर्वोक्त किसी मारक योग की प्राप्ति न हो तो केवल पापग्रहों की दशा ही पण्डितों को मरण कहना चाहिए ॥ ५ ॥

अथ मारकत्वे शनेर्विशेषमाह—

**मारकैः सह सम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः ।**
**अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः ॥ ६ ॥**

अ०—पापकृत् शनिः मारकैः सह सम्बन्धात् इतरान् सर्वान् अतिक्रम्य निहन्ता एव भवति (अत्र) संशयो न (कार्यः) ॥ ६ ॥

सु०—मारकैरिति । पापकृत् त्रिषडायाधीशत्वप्रयुक्ताशुभलक्षणाक्रान्तत्वात् पापकर्ता, शनिः मारकैः पूर्वप्रतिपादितमारकस्थानाधिपैः, सह सम्बन्धात् उक्तसम्बन्धचतुष्टयात्, इतरान् सर्वान् मारकान् अतिक्रम्य उल्लङ्घ्य निहन्ता नाशकर्ता, एव निश्चयेन भवति, अत्र संशयो न सन्देहो न, विधेय इति शेषः ॥ ६ ॥

भाषा—पापी शनि मारक ग्रहों के साथ सम्बन्ध करता हो तो उन सब पूर्वोक्त मारकग्रहों का उल्लंघन करके स्वयं मारक होता है इसमें संशय नहीं ॥६॥

अथात्र प्रसंगादायुरानयनाय विचारो विधीयते—

तत्र जैमिनिसूत्रे—

आयुः पितृदिनेशाभ्याम् ॥ १ ॥
प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम् ॥ २ ॥
प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम् ॥ ३ ॥
मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम् ॥ ४ ॥
एवं चन्द्रमन्दाभ्याम् ॥ ५ ॥
पितृकालतश्च ॥ ६ ॥

सु०—पितृदिनेशाभ्यां लग्नेशाभ्याम्, आयुः आयुर्विचारो विधेयः ॥१॥

कथं विचार्यमित्याह—प्रथमयोरिति । प्रथमयोः चरराशिस्थयोः उत्तरयोः स्थिरद्विस्वभावराशिस्थयोः लग्नेशाष्टमेशयोः, दीर्घं दीर्घायुर्योगः स्यात् ॥ २ ॥

अथ मध्यायुर्लक्षणमाह—प्रथमद्वितीययोरिति । प्रथमद्वितीययोः चरस्थिरराशिस्थयोः, अन्त्ययोः द्विस्वभावराशिस्थयोर्वा लग्नेशाष्टमेशयोः, मध्यं मध्यायुर्योगः स्यात् ॥ ३ ॥

अथाल्पायुर्लक्षणमाह--मध्ययोरिति । मध्ययोः स्थिरराशिस्थयोः वा आद्यन्तयोः चरद्विस्वभावराशिस्थयोस्तयोः, हीनं हीनायुर्योगो भवेत् ।। ४ ।।

अथ द्वितीयप्रकारेण विचार्यते-एवमिति । एवं पूर्वोक्तदिशा, मन्दचन्द्राभ्यां शनिसोमाभ्याम्, आयुर्विचार्यम् ।। ५ ।।

पुनस्तृतीयप्रकारेण विचार्यते । पितृकालत इति । पितृकालतः लग्नहोरालग्नाभ्यां, चैवं विचार्यम् ।। ६ ।।

भाषा–लग्नेश और अष्टमेश पर से पहले आयुर्दाय का विचार करना चाहिए।१।

लग्नेश और अष्टमेश यदि चरराशि में हों अथवा एक स्थिर में और दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो दीर्घायु योग होता है ।। २ ।।

यदि एक चर में और दूसरा स्थिर में अथवा दोनों द्विस्वभाव में हो तो मध्यायु योग होता है । ३ ।।

यदि दोनों स्थिर में हों वा एक चर राशि में और दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु योग होता है ।। ४ ।।

इसी तरह शनि और चन्द्रमा पर से विचारना चाहिए ।। ५ ।।

तथा लग्न और होरालग्न पर से भी इसी प्रकार विचार करना ।। ६ ।।

अथ प्रसंगाद्धोरालग्नानयने मदीयपद्यम्—

घटिकादिकमिष्टं यद् द्विगुणं पञ्चभिर्भजेत् ।
लब्धं स्पष्टरवौ योज्यं होरालग्नं भवेद्धि तत् ।।

भाषा— घटिकादिक इष्ट जो हो उसका दूना करके पांच का भाग देकर जो लब्धि हो उसको तात्कालिक स्पष्ट रवि में जोड़े तो होरालग्न होता है ।।

अत्र त्रिविधानीतायुर्दायेषु प्रकारत्रयेण प्रकारद्वयेन समत्वे निर्णयमाह—

## संवादात् प्रामाण्यम् ।। ७ ।।

सु०—संवादादिति । संवादात् प्रकारत्रयागतेन प्रकारद्वयागतेन वा आयुषः समत्वे, प्रामाण्यं प्रकारत्रयागतेन प्रकारद्वयागतेन वा यदायुस्तदेव ग्राह्यम् ।। ७ ।।

भाषा—यदि तीनों प्रकार से वा दोनों प्रकार से एक चालकी आयु आवे तो वही ग्रहण करना चाहिए ।। ७ ।।

अथ प्रकारत्रयागतानामायुर्दायानां विसंवादे निर्णयमाह—

## विसंवादे पितृकालतः ।। ८ ।।

सु०—विसंवाद इति । विसंवादे प्रकारत्रयागतायुर्दाये भिन्ने भिन्ने समागते सति, पितृकालतः लग्नहोरालग्नाभ्यामागतायुरेव ग्राह्यम् ।। ८ ।।

भाषा—अगर तीनों प्रकार से भिन्न आयुर्दाय आवे तो लग्न और होराक्रम से आया हुआ आयुर्दायका ग्रहण करना चाहिए ॥ ८ ॥

अथात्र विशेषसूत्रमाह—

## पितृलाभगे चन्द्रे मन्दचन्द्राभ्याम् ॥ ९ ॥

सु०—पितृलाभग इति। पितृलाभगे लग्नस्थे वा सप्तमस्थे, चन्द्रे सति, मन्दचन्द्राभ्यां शनिसोमाभ्यां, समागतायुरेव ग्राह्यम्। अन्यथा लग्नहोरालग्ना-भ्यामागतमेवायुर्ग्राह्यमित्यर्थः ॥ ९ ॥

भाषा—अगर चन्द्रमा लग्न या सप्तम में हो तो शनि-चन्द्रमा परसे समागत आयुका ही ग्रहण करना चाहिए ॥ ९ ॥

एवं ग्रन्थान्तरेऽपि—

आदौ लग्नाष्टमेशाभ्यां योगमेकं विचिन्तयेत्।
जन्महोराविलग्नाभ्यां द्वितीयं परिचिन्तयेत् ॥
तृतीयं शनिचन्द्राभ्यां चिन्तयेत्त द्विजोत्तम!
योगत्रयेण योगाभ्यां सिद्धं यद् ग्राह्यमेव तत् ॥
योगत्रयविसंवादे लग्नहोराविलग्नतः।
लग्ने वा सप्तमे चन्द्रे चिन्तयेन्मन्दचन्द्रतः ॥

अस्यार्थं प्रागेव स्फुटीकृत इति।

## स्फुटार्थमायुर्बोधकचक्रम्—

| | १ योगः | २ योगः | ३ योगः |
|---|---|---|---|
| दीर्घायुः | चरभे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः | स्थिरभे लग्नेशः<br>द्विस्वभावेऽष्टमेशः | द्विस्वभावे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः |
| मध्यायुः | चरभे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः | स्थिरभे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः | द्विस्वभावे लग्नेशः<br>द्विस्वभावेऽष्टमेशः |
| अल्पायुः | चरभे लग्नेशः<br>द्विस्वभावेऽष्टमेः | स्थिरभे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः | द्विस्वभावे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः |

उदाहरणम्—

कस्यचिज्जन्मकुण्डलीयम्—

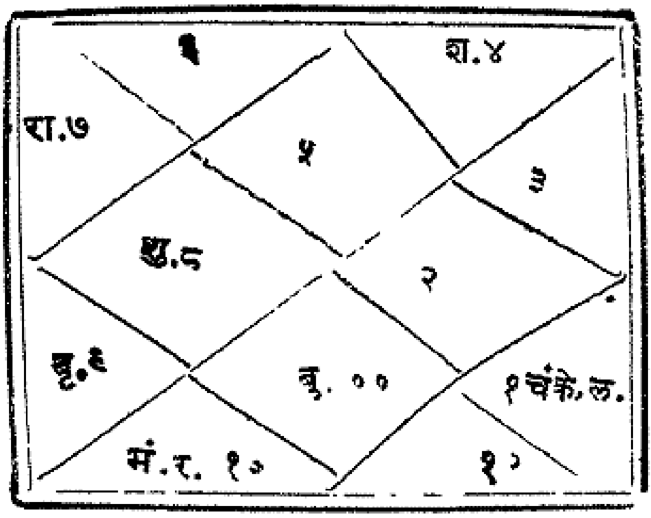


अत्र सूर्योदयादिष्टघट्यादिः=१७।२६ तात्कालिकोऽर्कः = ५।१५।४६।३१ । घटिकादिकमिष्टं = १७।२६, द्विगुणं = ३४।५२, पञ्चभिर्भक्तं लब्धं राश्यादिकं= ७।४।२४। इदं स्पष्टरवौ योजनीयं = तदा जातमत्र प्रयोजनीयहोरालग्नमानम् = ००।२०।१०।३१ ।

अथायुर्दायो विचार्यते—

तत्र प्रथमं लग्नेशाष्टमेशाभ्यां विचार्यते—

अत्र लग्नेशो गुरुः स्थिरराशौ वर्तते, अष्टमेशश्चन्द्रश्च द्विस्वभावराशौ तेन "प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम्" इति सूत्रेण दीर्घायुरायाति ।

अथ शनिचन्द्राभ्यां विचार्यते—

अत्र शनिचन्द्रयोर्द्वयोरपि द्विस्वभावराशौ वर्तमानत्वात् "प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम्" इति सूत्रेण मध्यायुरायाति ।

अथ लग्नहोरालग्नाभ्यां विचार्यते—

अत्र लग्नं द्विस्वभावराशौ वर्तते, होरालग्नं तु चरराशौ तेन "मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम्" इति सूत्रेण हीनायुरायाति ।

एवमत्र प्रकारत्रयेण भिन्ने समागते आयुषि "विसंवादे पितृकालतः" इति सूत्रेण हीनायुरेव ग्राह्यम् । परन्त्वत्र लग्ने चन्द्रस्य व्यवस्थितत्वात् "पितृलाभगे चन्द्रे मन्दचन्द्राभ्याम्" इति सूत्रेण मन्दचन्द्राभ्यामागतं मध्यमायुरेवास्य जातकस्येति ।

अथायुर्भेदानाह—

रसाङ्कै ९६ गंजाभ्रेन्दुभि. १०८ शून्यामार्कै १२०-
त्रिधा दीर्घमायुः कलौ सम्प्रदिष्टम् ।
चतुःषष्टि ६४ बाह्वद्रय ७२ शीति ८० प्रमाणै-
र्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात् ।।
तथा द्वित्रि ३२ षड्वह्नि ३६ शून्याब्धिवर्णै-४०
र्भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते ।
अथ दीर्घायुर्योगादिज्ञानाय लाघवेन कश्चिदाह—
अल्पायुर्लग्नपे भानोः शत्रौ, मध्ये च मध्यमम् ।
मित्रे लग्नेश्वरे तस्य दीर्घमायुरुदाहृतम् ।।

भाषा—लग्नेश यदि रवि का शत्रु हो तो अल्पायु, सम हो तो मध्यायु और मित्र हो तो दीर्घायु कहना चाहिये ।

अथ ग्रन्थान्तरादाकृष्यायुर्विचारः सविस्तर विलिख्यते—
आयुर्दायमनिष्टहेतुमुदयव्मार्योयुरीशार्कजै-
रुक्तं तत्सकलं तथापि निधनप्राप्ति प्रवक्ष्ये पुनः ।
अल्पायुर्व्ययगेऽथवा रिपुगते पापान्विते रन्ध्रपे
लग्नेशेन युते तु तत्र विबले जातोऽल्पजीवो नरः ।।
स्वस्थे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदयच्छिद्राधिपौ षष्ठगौ
रिष्फस्थौ यदि वा समेति मनुजो जातश्चिरायुर्बलम् ।
व्यापारोदयरन्ध्रराशिपतयः केन्द्रत्रिकोणायगा-
दीर्घायुर्विबलः सभानुतनया यद्यल्पमायुर्वदेत् ।।
कर्मेशरन्ध्रतनुपा बलशालिनश्चेज्जातश्चिरायुरिनन्दनयोश्च हीनाः ।
द्वावप्यतीव बलिनौ यदि मध्यमायुरेको बली लघुतरायुरनायुरन्यः ।।
रन्ध्राधिपे पापगृहोपयाते दुःस्थानगे पापयुतेऽल्पमायुः
शुभान्विते शोभनराशियुक्ते शुभेक्षिते रन्ध्रगते चिरायुः ।।
नाशस्थे तनुपेऽथवा निधनपे पापेन युक्तेक्षिते
मूढे व्ययगतेऽथवा रिपुगृहे जातो गतायुर्भवेत् ।
दीर्घायुर्निधतुङ्गगे शुभयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा

रन्ध्रे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदयं याते विलग्नाधिपे ॥
लग्नादन्त्यगृहाधिपे बलवती स्वर्क्षे चिरायुः सुखी
लग्नेशो यदि रन्ध्रपस्य बलिनौ केन्द्रस्थितौ चेत्तथा ।
आधानोदयराशितोऽष्टमगृहान्मेषूरणं जन्मभं
शुक्रज्ञामरवन्दितेक्षितयुतं यद्यायुरारोग्यभाक् ।
रन्ध्रेशे रिपुरन्ध्ररिष्फगृहगे तत्पाकभुक्तौ मृतिं
मन्दाक्रान्तगृहेशपाकसमये रन्ध्रेशभुक्तौ तथा ।
पाके रन्ध्रगृहाधिपस्य तदनुक्रान्तस्य भुक्तौ तु वा
खेटानां बलदुर्बलेन सकलं सञ्चिन्त्य यत्तद्वदेत् ॥
लग्नेशे निधनारिरिष्फगृहगे साहौ सकेतौ तु वा
होरारन्ध्रपसंयुतग्रहदशा जातस्य मृत्युप्रदा ।
तत्खेटान्वितराशिनायकदशा नाशप्रदा देहिनां
खेटानां प्रथमागतस्य फणिनः पाकापहारे क्रमात् ॥

व्यापाररन्ध्रतनुनाथशनैश्चराणां मध्ये विधुन्तुदयुतो विबलग्रहो यः ।
तत्पाकभुक्तिसमये निधनं नराणां तद्युक्तवीक्षकनभोगदशान्तरे वा ॥

नाशे नाशपतौ तु तद्ग्रहदशाभुक्तौ समेत्यामयं
लग्ने लग्नपतौ तु लग्नपदशाभुक्तौ शरीरार्तिभाक् ।
पश्चादामयनाशनं तनुसुखं मोदश्च सञ्जायते
रन्ध्रेशे बलसंयुते तनुपतेर्दाये मृतिर्देहिनाम् ॥

जातस्य जन्मसमये विबले विलग्ने लग्नेशरन्ध्रपतिपाकमतीव कष्टम् ।
पश्चादतीव सुखमेति विलग्ननाथे वीर्यान्विते निधनपस्य मृतिर्दशायाम् ॥

देहेशे च विनाशपे बलयुते केन्द्रत्रिकोणस्थिते
तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमये रोगापवादः फलम् ।
रन्ध्रेशस्तनुपश्च खेचरयुतौ केन्द्रत्रिकोणस्थितौ
रन्ध्रस्थानगतस्य पाकसमये मृत्युं समेति ध्रुवम् ॥
नो चेदष्टमखेचरो यदि तनुं प्राप्तेन सञ्चिन्तये-
न्मन्दे लग्नगतेऽथवाऽष्टमगते तत्पादभुक्तौ मृतिः ।
रन्ध्रेशोदयनायकौ सखचरौ युक्तग्रहो दुर्बलो-

यस्तस्य द्युचरस्य पाकसमये भुक्तौ च मृत्युं वदेत् ॥
लग्नात्पञ्चमराशिपेन सहितव्योमाटनानां दशा
तावशेषगृहगे मृत्युं दिनेशे सति ।
पुत्रेशेन वियच्चरेण सहितत्वाद्वेन सञ्चिन्तये
लग्नेशेन युताद्भभङ्गविहृतं संक्रान्तिपूर्वं दिनम् ।
त्रिकोणे केन्द्रे वा यदि पितृतनुक्षेत्रपतयो–
र्दशाभुक्तौ तेषामनुमरणमाहुर्मुनिगणाः ।
सभौमे मन्दार्क्ये फणियुजि तु वेन्दौ निजनगे
त्वपस्मारस्तस्मान्मरणमथवेन्दौ कृशतनौ ॥
चन्द्रे वित्तगतेऽथवा निधनगे जातो बहुस्वेदवान्
कर्मस्थानगते कुजे बुधयुते दुर्गन्धदेहो भवेत् ।
पापे रन्ध्रगते तु पापसहिते रोगप्रमादाकरः
सौम्यव्योमगृहेऽतिशोभनयुते जातः समोदः सुखी ॥

शीर्षोदयेषु चरमादिषु वित्तपस्य लग्नाधिपस्य भुजगस्य दशापहारे ।
पृष्ठोदये सति तदीयदृकाणपस्य तद्वीक्षितादिसहितस्य मृतिं वदेद्वा ।
पूर्वोक्तानि पद्यानि स्फुटान्येव ग्रन्थविस्तरभयान्न व्याख्यायते ।

अथ प्रसंगाद्गौरीजातकोक्तनक्षत्रायुरानयनमाह –

परमायुःप्रमाणेन गुणयेद् गतनाडिकाः ।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्याप्तं विशोधयेत् ॥
परमायुंषि पुंसश्च शेषमायुः स्फुटं भवेत् ।

भाषा - परमायु प्रमाण (१२०) से भयात को गुणा करके उसमे नब्बे का भाग देवे जो लब्धि आवे उसको परमायु की संख्या (१२०) में घटावे शेष स्फुटायु होती है ।

उदाहरण—जैसे पूर्वोक्त उदाहरण में भयात २५।२९ इतना है । इसको एकजातीय किया तो घटीजातीय भयात $\frac{१५२९}{६०}$, इतना हुआ । इसको १२० से गुणाकर नब्बे का भाग दिया तो ऐसा स्वरूप हुआ = $\frac{१५२९ \times १२०}{६० \times ९०}$ =

$\frac{१५२९ \times ४}{६० \times ३} = \frac{१५२९}{१५ \times ३} = \frac{१५२९}{४५}$ = लब्धवर्षादिमान = ३३।११।२२, इसको १२० में घटाया तो स्फुट वर्षादि नक्षत्रायु ८६।००।८ इतना हुआ।

इत्यायुर्दायाध्यायस्तृतीयः।

— o —

# अथ दशाफलाध्यायः

अथ दशाफलमाह—

**न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु।**
**शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः॥ १॥**
**आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः।**
**तेषामन्तर्दशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम्॥ २॥**

अ० - सर्वे ग्रहा स्वदशासु स्वभुक्तिषु आत्मभावानुरूपतः शुभाशुभफलं न दिशेयुः॥ १॥

आत्मसम्बन्धिनः ये वा निजसधर्मिणः ये च तेषाम् अन्तर्दशासु एव स्वदशाफलं दिशन्ति॥ २॥

सु० —न दिशेयुरिति। सर्वे सकलाः, ग्रहाः सूर्यादयः, स्वदशासु षडब्दादि-रूपासु, स्वभुक्तिषु स्वान्तर्दशासु, आत्मभावानुरूपतः आत्मनो यो भावः स्वभाव-स्तदनुरूपतस्तदनुसारतः, नृणां मनुष्याणां, शुभाशुभफलं न दिशेयुः न दद्युः, तस्य ग्रहस्य यः स्वभावस्तया फलं न दद्युस्ततोऽल्पं दद्युरेव स्वान्तर्दशायामन्यफलस्या-नवकाशादित्यर्थः। १॥

आत्मसम्बन्धिनः आत्मनः स्वस्य सम्बन्धिन सहावस्थानादिसम्बन्धचतुष्ट-येन समन्विताः, ये ग्रहाः, निजसधर्मिणः समानो धर्मः सधर्मः सधर्म एषामस्तीति सधर्मिणः निजेनात्मना सधर्मिण इति निजसधर्मिणः, ये च ग्रहाः, तेषां ग्रहाणाम्, अन्तर्दशासु स्वदशायामेव, स्वदशाफलं दिशन्ति॥ २॥

भाषा—सब ग्रह अपनी दशा में जो अपनी अन्तर्दशा उसमें अपने स्वभावानु-रूप शुभ वा अशुभ फल मनुष्यों को विशेष रूप से नहीं देते हैं, किन्तु सामान्य रूप से शुभ या अशुभ फल देते हैं॥ १॥

परन्तु जो ग्रह अपना सम्बन्धी हो अथवा सधर्मी हो उसकी अन्तर्दशा में अपनी दशा में दशाफल विशेष रूप से देते हैं ॥ १ ॥

अथात्मसम्बन्धिनां सधर्मिणां च ग्रहाणामभावे फलकल्पनामाह—

**इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् ।**
**तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभः ॥ ३ ॥**

अ० सूरिभिः दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् इतरेषां तत्तत्फलानुगुण्येन फलानि ऊह्यानि ॥ ३ ॥

सु० – इतरेषामिति । सूरिभिः पण्डितैः, दशानाथविरुद्धफलदायिनां दशायाः पाकस्य यो नाथः स्वामी तस्य विरुद्धं यत्फलं तद् दशानाथविरुद्धफलं तद्दातुं शीलं येषां ते दशानाथविरुद्धफलदायिनस्तेषाम्, इतरेषां स्वसम्बन्धसमानधर्मरहितानां ग्रहाणां, तत्तत्फलानुगुण्येन तस्य तस्य दशान्तर्दशास्वामिनोः फलानाम् आनुगुण्येन अनुगुणस्य भावः आनुगुण्यं गुणसाम्य तेन, फलानि दशाफलानि, ऊह्यानि प्रकल्पनीयानि । अत्राव विशेषः-ग्रहा द्विधा भवन्ति तत्रैके सम्बन्धिनोऽन्येऽसम्बन्धिन इति । तेऽपि षड्विधा भवन्ति । सम्बन्धिनः सधर्मिणः, सम्बन्धिनो विरुद्धधर्मिणः, सम्बन्धिनोऽनुभयधर्मिणः, असम्बन्धिनः सधर्मिणः, असम्बन्धिनो विरुद्धधर्मिणः, असम्बन्धिनोऽनुभयधर्मिण इति । तत्र ये सम्बन्धिनः सधर्मिणश्च सन्ति तेषां फलं सर्वथा उत्तममेव स्यात् । तेभ्यो न्यूनं फलं सम्बन्धिनामनुभयधर्मिणां, तेभ्योऽपि न्यूनं फलं सम्बन्धिनां विरुद्धधर्मिणाम् । एवमग्रेऽपि फलमूह्यं किं लेखबाहुल्येनेति ॥ ३ ॥

भाषा—दशास्वामी के सम्बन्धादि से वर्जित इसके विरुद्ध फल देने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा में दोनों फलों के मिलान से बुद्धिमानों को दशा-फल-कल्पना करनी चाहिए ॥ ३ ॥

अथात्र विशेषमाह—

**स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम् ।**
**दिशेत्सोऽपि तथा नो चेदसम्बन्धेन पापकृत् ॥ ४ ॥**

अ०–( सति सम्बन्धे ) केन्द्रपतिः स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ शुभं दिशेत्, सोऽपि तथा, नो चेत् असम्बन्धेन पापकृत् ( भवति ) ॥ ४ ॥

सु०—स्वदशायामिति । सति सम्बन्धे, केन्द्रपतिः लग्नचतुर्थसप्तमदशमभवन-स्वामी, स्वदशायां निजमहादशायां, त्रिकोणेशभुक्तौ त्रिकोणपतेरन्तर्दशायां शुभं शुभफलं दिशेत् दद्यात् । सोऽपि त्रिकोणाधीशोऽपि तथा पूर्ववत् फलं दिशेत् (अर्थात् स्वमहादशायां केन्द्राधीशान्तर्दशायां शुभं दिशेत्), नो चेत् सम्बन्धाभावश्चेत्, तदा असम्बन्धेन सम्बन्धरहितेन, पापकृत् अशुभकृद्भवतीति शेषः ।। ४ ।

भाषा—सम्बन्ध रहने से केन्द्रपति अपनी दशा में और त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है । वैसे ही त्रिकोणेश अपनी दशा में और केन्द्राधिप की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है । यदि सम्भव न हो तो सम्बन्ध न होने के कारण केन्द्रेश अपनी दशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में और त्रिकोणेश अपनी दशा में केन्द्रेश की अन्तर्दशा में पाप फल को देता है ।। ४ ।।

अथ राजयोगारम्भकालमाह—

**आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु ।**
**प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः ।। ५ ।।**

अ०—मारकभुक्तिषु राजयोगस्य ( यदि ) आरम्भः (भवेत्तदा ) पापभुक्तयः तम् आरभ्य क्रमशः प्रथयन्ति ।। ५ ।।

सु०—आरम्भ इति । मारकभुक्तिषु मारकग्रहान्तर्दशासु, राजयोगस्य आरम्भः प्रारम्भः, यदि भवेत्तदा, पापभुक्तयः पापग्रहान्तर्दशाः तं राजयोगम्, आरभ्य क्रमशः, प्रथयन्ति विस्तारयन्ति ।। ५ ।।

भाषा—अगर योगकारी ग्रह की दशा में उसके सम्बन्धी मारक ग्रह की अन्तर्दशा में राजयोग का प्रारम्भ हो तो पापी मारक ग्रह की अन्तर्दशा उस राजयोग को प्रारम्भ कर के धीरे से बढ़ाती है ।। ५ ।।

**तत्सम्बन्धिशुभानां च तथा पुनरसंयुजाम् ।**
**शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम् ।। ६ ।।**

अ०—तथा च तत्सम्बन्धिशुभानां पुनः असंयुजां योगकारिणां शुभानां तु संयोगः समत्वेन स्यात् ।। ६ ।।

सु०—तत्सम्बन्धीति । तथा च तत्सम्बन्धिशुभानां (तत्तस्य राजयोगकारकग्रहाणां सम्बन्धिनः सहावस्थानादिसम्बन्धचतुष्टयान्यतमसम्बन्धविशिष्टा ये शुभग्रहास्तेषाम् ) राजयोगकारकसम्बन्धिशुभग्रहाणां पुनः असंयुजां सम्बन्ध-

हीनानां, योगकारिणां योगसम्पादयितॄणां, शुभानां शुभग्रहाणां, तु संयोगः दशा न्तर्दशासंयोगः समत्वेन ( नात्यपकर्षेण नात्युत्कर्षेण इति ) फलं प्रथयन्तीति पूर्वश्लोकेन सम्बन्धः। अत्रायमाशयः-योगकारकग्रहाणां महादशासु तत्सम्बन्धिशुभग्रहाणामन्तर्दशासु तथा योगकारकग्रहाणां महादशासु तदसम्बन्धिशुभग्रहान्तर्दशासु मध्यमरूपेण फलं लभ्यत इति ॥ ६ ॥

भाषा—योगकारी ग्रहों की दशा में उनके असम्बन्धी ग्रहों की अन्तर्दशा में, और योगकारी ग्रहों की दशा में उनके असम्बन्धी ग्रहों की अन्तर्दशा में मध्यम रूप से फल होता है ॥ ६ ॥

अथात्रैव विशेषमाह—

**शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः ।**
**स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम् ॥ ७ ॥**

अ०—प्रसक्तस्य अस्य शुभस्य दशायां योगकारकाः ( ग्रहाः ) स्वभुक्तिषु कुत्रचित् योगजं फलं प्रयच्छन्ति ॥ ७ ॥

सु०—शुभस्यास्येति। प्रसक्तस्य सम्बन्धविशिष्टस्य अस्य योगकारकस्य, शुभस्य शुभग्रहस्य, दशायां महादशायां, योगकारकाः योगकारकग्रहाः, स्वभुक्तिषु निजान्तर्दशासु, कुत्रचित् कदाचित् योगजं राजयोगसमुद्भवं, फलं, प्रयच्छन्ति ददति ॥ ७ ॥

भाषा—योगकारी ग्रह आत्मसम्बन्धी शुभ ग्रह की महादशा में अपनी अन्तर्दशा में कहीं कहीं योगज शुभ फल देते हैं ॥ ७ ॥

अथ राहुकेत्वोर्विषये विशेषमाह—

**तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित् ।**
**अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ ॥ ८ ॥**

अ०—तमोग्रहौ शुभारूढौ ( स्यातां तदा ) केनचित् असम्बन्धेन अन्तर्दशानुसारेण योगकारकौ भवेताम् ॥ ८ ॥

सु०—तमोग्रहाविति। तमोग्रहौ राहुकेतू, शुभारूढौ शुभस्थानं गतौ, ( त्रिकोणस्थितौ ) स्यातां, तदा, केनचित् योगकारकग्रहेण, असम्बन्धेन सम्बन्धरहितेन, अन्तर्दशानुसारेण योगकारिमहादशायां निजान्तर्दशायां योगकारकौ योगफलदायकौ, भवेताम् ॥ ८ ॥

भाषा—अगर राहु या केतु त्रिकोण में स्थित हो तो किसी ग्रह से सम्बन्ध न होने पर भी योगकारी ग्रह की दशा में अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल को देते हैं ॥ ८ ॥

इति दशाफलाध्यायश्चतुर्थः ।

# अथ मिश्रकाध्यायः

अथ पापानां दशेशानां भुक्तिविशेषमाह—

**पापा यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम् ।**
**भुक्तयः पापफलदास्तत्संयुक्शुभभुक्तयः ॥ १ ॥**
**भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम् ।**
**अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम् ॥ २ ॥**

अ०—यदि दशानाथाः पापाः स्युस्तदा तदसंयुजां शुभानां भुक्तयः पापफलदाः भवन्ति, तत्संयुक्शुभभुक्तयः मिश्रफलदाः भवन्ति, तदसंयुजां योगकारिणां भुक्तयस्तु अत्यन्तपापफलदाः भवन्ति ॥

सु०—पापा इति । यदि दशानाथाः दशेश्वराः, पापा अशुभग्रहाः स्युस्तदा, तदसंयुजां दशाधिपसम्बन्धरहितानां, शुभानां शुभग्रहाणां, भुक्तयः अन्तर्दशाः, पापफलदाः अनिष्टफलप्रदाः भवन्ति । तत्संयुक्शुभभुक्तयः दशाधिपसम्बन्धिशुभग्रहान्तर्दशाः, मिश्रफलदा मिश्रं शुभाशुभं फलं ददतीति मिश्रफलदा भवन्ति, तथा तदसंयुजां तत्सम्बन्धरहितानां योगकारिणां भुक्तयः अन्तर्दशाः अत्यन्तपापफलदाः अतिशयेनानिष्टफलप्रदाः भवन्ति । १-२ ॥

भाषा—यदि महादशा के स्वामी पापग्रह हों तो उससे नहीं सम्बन्ध करने वाले शुभ ग्रह की अन्तर्दशा पाप फल को ही देती है । और पापी दशानाथके असम्बन्धी योग कारक ग्रहों की अन्तर्दशा अतिशय पाप फल देती है ॥ १-२ ॥

अथ मारकस्य भुक्तिवशान्मारकत्वमाह—

**सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु ।**
**हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु ॥ ३ ॥**

अ०—मारकः स्वेन सम्बन्धे सति अपि शुभभुक्तिषु न हन्ति। सति अपि असम्बन्धे पापभुक्तिषु हन्ति ॥ ३ ॥

सु०—सत्यपीति। मारको मारकग्रहः, स्वेन आत्मना, सम्बन्धे सत्यपि, शुभभुक्तिषु शुभग्रहान्तर्दशासु, न हन्ति न मारयति। सत्यपि असम्बन्धे सम्बन्धाभावे, पापभुक्तिषु पापान्तर्दशासु, हन्ति मारयति ॥३॥

भाषा—अपना सम्बन्ध हो तो भी मारकग्रह शुभ ग्रहों की अन्तर्दशाओं में नहीं मारता है। यदि अपना सम्बन्ध न भी हो पर पापग्रहों की अन्तर्दशा हो तो मारक ग्रह मारता है ॥ ३ ॥

अथ शनिभार्गवयोर्भुक्तिव्यत्ययेन शुभाशुभफलप्रदत्वमाह—

**परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।**

**व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम् ॥ ४ ॥**

अ०—सूर्यजभार्गवौ परस्परदशायां स्वभुक्तौ व्यत्ययेन विशेषेण शुभाशुभं प्रदिशेताम् ॥ ४ ॥

सु०—परस्परेति। सूर्यजभार्गवौ शनिशुक्रौ, परस्परदशायां परस्परस्य महादशायां, (शुक्रदशायां शनिः, शनिदशायां शुक्रः) स्वभुक्तौ स्वान्तर्दशायां, व्यत्ययेन वैपरीत्येन, (शुक्रफलं शनिः, शनिफलं शुक्र इति), विशेषेण शुभाशुभं शुभमशुभञ्च फलं प्रदिशेताम् प्रयच्छेताम् ॥ ४ ॥

भाषा—शनि और शुक्र परस्पर दशा में अपनी अपनी अन्तर्दशा आनेपर शुभ और अशुभ फल को व्यत्यय से विशेष रूपसे देते हैं। अर्थात् शनि की महादशा में शुक्र अपनी अन्तर्दशा आनेपर शनि का ही विशेष रूप से अशुभ फल देता है। इसी प्रकार शुक्र की महादशा में शनि को अपनी अन्तर्दशा आने पर शुक्र का शुभ अशुभ फल विशेष रूप से देता है ॥ ४ ॥

अथ प्रसङ्गाद् ग्रन्थान्तराच्छुभदां दशामाह—

स्वद्वादशांशके लग्ने नाथे वा स्वदृकाणगे।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्मुनयः कालचिन्तकाः ॥
स्वत्रिंशांशेऽथवा मित्रे त्रिंशांशे वा स्थितो यदि।
तस्य भुक्तिः शुभा प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥
मित्रक्षेत्रे स्वांशकस्थे मित्रस्य द्विरसांशके।
तस्य भुक्तिः शुभा प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥

बुद्धिक्षेत्रनवांशस्थे पुत्रस्य द्विरसांशके ।
मित्रद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ।।
नवो राशिनवांशस्थे धर्मस्य द्विरसांशके ।
गुरुद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ।।
सुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके ।
सुखद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ।।
विलग्ननाथस्थितभांशनाथे मित्रांशगे मित्रखगेन दृष्टे ।
सुहृद्दृक्काणस्थनवांशके वा तदास्य भुक्तिं शुभदां वदन्ति ।।

अथ दुःखदां दशामाह—

षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशा कष्टप्रदायिनी ।
एषा भुक्तिर्हि कष्टा स्यान्मारकस्य दशा यदि ।।
मारकेशेन षष्ठेशे युक्ते लग्नाधिपे यदि ।
तस्य भुक्तौ ज्वरप्राप्तिं प्राहुः कालविदो जनाः ।
सरोगेशशरीरेशश्चन्द्रषड्वर्गगो यदि ।
जलदोषस्तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः ।।
षष्ठेशयुतलग्नेशो बुधषड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेद्वायुर्वातो वा देहजाड्यकृत् ।
सारिनाथविलग्नेशो गुरुषड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेद्रोगः पीडा वा ब्राह्मणेन तु ।।
नक्षत्रेशो विलग्नेशो भृगुषड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेत्पीडा रोगः स्त्रीसङ्गमेन च ।।
सरोगे श विलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि ।
तस्य भुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोऽथवा नृणाम् ।।
लग्नेशरोगेशकयोर्भवेन्मारकभुक्तिषु ।
मृत्यौ स्थितैः साहिकमन्दकेतुभिर्मनो हिक्काश्वासविषूचिकाभिः
रोगो नराणामथ तस्य भुक्तौ भवेद्यदा मारकसंयुतिश्च ।।
केन्द्राधीश्वरकोणनायकदशास्वान्तर्दशाः शोभनाः
सामान्याश्च धनत्रिलाभभवनाधीशग्रहाणां दशाः ।

षष्ठाष्टव्ययभावनायकदशाः कष्टा भवेयुः सदा ।
नेतुर्लग्नमवेक्ष्य तत्तदधिपात्तत्तद्दशाभुक्तिषु ॥

अत्र विशेषमाह—

शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ फलदो भवेत् ।
पृष्ठोदयस्थः पाकान्ते सदा चोभयराशिगः ॥ स्पष्टम् ॥

अथ विख्यातिकारकराजयोगमाह—

**कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ ।**
**राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥ ५ ॥**

अ०—कर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ ( यदि तदा ) राजयोगौ इति प्रोक्तं, ( तथा सति जातः ) विख्यातो विजयी भवेत् ॥ ५ ॥

सु०—कर्मलग्नाधीति । कर्मलग्नाधिनेतारौ लग्नदशमाधीशौ, अन्योन्याश्रयसंस्थितौ अन्योन्यस्य परस्परस्य आश्रयः स्थानं तत्र संस्थितौ, कर्मेशो लग्नस्थाने, लग्नेशः कर्मस्थाने स्थितो यदि स्यात्तदा तौ राजयोगौ राजयोगकारकौ स्तः । अस्मिन् योगे जातः विख्यातः विशिष्टख्यातिमान्, विजयी संग्रामविवादादिषु विजयशाली भवेदिति ॥ ५ ॥

भाषा—दशम स्थान का स्वामी और लग्न का स्वामी दोनों परस्पर स्थानमें संस्थिति हों तो राजयोग होता है, इसमें उत्पन्न होने वाला विख्यात और विजयी होता है ॥ ५ ॥

अथ राजयोगान्तरमाह—

**धर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ ।**
**राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥ ६ ॥**

अ० - धर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ ( यदि तदा ) राजयोगौ इति प्रोक्तं, ( तथा सति जातः ) विख्यातः विजयी (च) भवेत् ॥ ६ ॥

सु०—धर्मलग्नाधीति । धर्मलग्नाधिनेतारौ नवमेशलग्नेशौ, अन्योन्याश्रयसंस्थितौ ( धर्मेशः कर्मस्थाने कर्मेशो धर्मस्थाने इति ) वा उभौ मिलित्वैकत्रसंस्थौ यदि स्यातां, तदा तौ राजयोगकारकाविति प्रोक्तं शास्त्रे प्रतिपादितम्, अस्मिन् योगेऽपि जातः विख्यातो विजयी भवेदिति ॥ ६ ॥

भाषा—धर्मेश और लग्नेश परस्पर स्थान में हो अर्थात् नवमेश लग्न में और लग्नेश नवम भवान में हो तो राजयोग होता है। इसमें उत्पन्न मनुष्य विख्यात और विजय पाने वाला होता है॥ ६॥

अथैवमन्येऽपि योगा ग्रन्थान्तरादाकृष्य लिख्यन्ते—

लग्नाधीशेऽर्थगे चेद्धनभवदपतौ लग्नयातेऽथवाऽस्याद्
बुद्धयाचारप्रवीणः परमसुकृतकृत्सारभृद्भोगशीलः।
भ्रातृस्थानेऽङ्गनाथे सहजभवनपे लग्नयातेऽल्पशक्तिः
सद्बन्धू राजपूज्यः कुलजनसुखदो मातृपक्षेण युक्तः॥

भाषा—अगर धनभाव में लग्नेश और लग्न में धनभाव का स्वामी हो तो धनवान् बुद्धिमान्, आचार में प्रवीण, श्रेष्ठ पुण्य करने वाला, बलवान् और भोग करने वाला होता है। अगर तृतीय भाव में लग्नेश और तृतीयेश लग्न में हो तो थोड़ा बल, श्रेष्ठ बन्धुओं से युक्त राजपूज्य, कुलजन को सुख देने वाला और मातृ पक्ष से युक्त होता है।

तुर्येशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ तुर्यगे स्यात् क्षमावां-
स्ताताज्ञाराजकार्यप्रगुणमतियुतः सद्गुरुः स्वीयपक्षे।
लग्नस्थे सूनुनाथे तनुजपतिगते लग्ननाथे मनस्वी
विद्यालङ्कारयुक्तो निजकुलविदितो ज्ञानवान्मानसक्तः॥

भाषा—अगर लग्नेश चतुर्थभवन में और लग्न में चतुर्थेश हो तो क्षमावान् पिता की आज्ञा करने वाला, राजकार्य में निपुण बुद्धिवाला, सज्जन गुरु वाला और अपने पक्ष से युक्त होता है। यदि पञ्चम भाव में लग्नेश और लग्न में पञ्चमेश हो तो मनस्वी, विद्या रूप भूषण से युक्त, अपने कुल में विख्यात, ज्ञानवान् और अभिमानी होता है।

षष्ठेशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ षष्ठगे व्याधिहीनो
नित्यं द्रोहादिसक्तो वपुषि स बलवान् द्रव्यवान् संग्रही स्यात्।
मूर्तीशे कामयाते मदनसदनपे मूर्तिगे तातसेवी
लोलस्वान्तोऽङ्गनायां भवति हि मनुजः सेवकः स्यालकस्य॥

भाषा—यदि षष्ठभाव में लग्नेश और षष्ठेश लग्न में हो तो व्याधिहीन, सर्वदा विरोध करने वाला, धनवान् और संग्रह करने वाला होता है। यदि लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हो तो पिता की सेवा करने वाला, स्त्री में चञ्चल चित्त और साले का सेवक होता है।

अङ्गेशे रन्ध्रयाते निधनगृहपतावङ्गगे द्यूतबुद्धिः
शूरश्चौर्यादिसक्तो निधनपदमियाद् भूपतेर्लोकतो वा ।
देहाधीशे शुभस्थे शुभभवनपतौ देहसंस्थे विदेशी
धर्मासक्तो नितान्तं सुरगुरुभजने तत्परो राजमान्यः ॥

भाषा—अष्ठमस्थान में लग्नेश और लग्न में अष्ठमेश हो तो जातक जूआ खेलने वाला शूर, चोरी आदि का काम करने वाला, राजा से या लोगों से मृत्यु पाने वाला होता है। अगर लग्नेश नवम स्थान में और नवमेश लग्न में हो तो विदेश में रहने वाला, धर्म में आसक्त, देवता और गुरु की सेवा करने में आसक्त और राजमान्य होता है।

कर्मस्थे लग्ननाथे गगनभवनपे लग्नगे भूपतिः स्यात्
ख्यातो लाभे च रूपे गुरुभजनरतो लोलुपो द्रव्यनाथः ।
लाभेशे लग्नयाते तनुभवनपतौ लाभसंस्थे सुकर्मा
दीर्घायुः क्षोणिनाथः शुभविभवयुतः कोविदो मानवः स्यात् ॥

भाषा—अगर दशम भवन में लग्नेश और लग्न में दशमेश हो तो राजा, लाभ और रूप में प्रसिद्ध, गुरु की सेवा में रत, लोलुप और द्रव्याधीश होता है। अगर लग्न में एकादशेश और एकादश में लग्नेश हो तो सुकर्म करने वाला, दीर्घायु, राजा, सुन्दर सम्पत्ति से युक्त और पण्डित मनुष्य होता है।

लग्नेशे रिष्फयाते व्ययसदनपतौ लग्नगे सर्वशत्रु-
र्बुद्धया हीनो नितान्तं कृपणतरमतिर्द्रव्य नाशी विलोलः ।
इत्थं तातादिकानामपि जनुषि तथा खेचराणां हि योगा-
द्वाच्यं होरागमज्ञैस्तदनु तनुपयुग्भार्गवे राजपूज्यः ॥

भाषा—यदि बारहवें स्थान में लग्नेश और लग्न में द्वादशेश हो तो सब जनों का शत्रु, बुद्धि से हीन, अत्यन्त कृपण बुद्धि वाला, द्रव्य का नाश करने वाला और चञ्चल होता है। इसी प्रकार जन्म समय में ग्रहों के योगों से जातक के पिता-माता इत्यादि के द्वारा शास्त्रज्ञको फलादेश कहना चाहिये।

सुविदित "दरभङ्गा" ख्ये प्रान्ते पत्रालये "बहेड़ा" ।
"जरिसो" नाम्ना ख्यातं नगरं भूदेववृन्दसंवलितम् ॥
अकरोत्तत्र निवासी श्रीमद् "बलदेव" शर्म्मणस्तनयः ।
श्री "अच्युतादिनन्दः" पराशर्य्यटीकनं विविधम् ॥

इत्युडुदायप्रदीपः समाप्तः ।

॥ श्रीः ॥

# अथ मध्यपाराशरी

— ० —

## अथ प्रथमः परिच्छेदः

अथ मङ्गलाचरणम्

**पराशरमुनिं नत्वा तस्य होरां निरीक्ष्य च ।**
**वक्ष्येऽप्युडुदशामार्गं पूर्वशास्त्रानुसारतः ॥ १ ॥**

टीकाकर्तृ मङ्गलाचरणम्—

वन्दामहे सुकमलासनवर्तमानां वाग्देवताममलवाग्विभवप्रदात्रीम् ।
वृन्दारकादिपरिवन्द्यपदारविन्दां श्रीशारदामविरतं भुवनैकसाराम् ॥

भाषा—पराशरमुनि को नमस्कार करके उनका किया हुआ फलित शास्त्र को देखकर प्राचीन शास्त्र के अनुसार नक्षत्रदशा के मार्ग को मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां राशीनां च कर्तव्यतामाह—

**आदित्यप्रमुखाः खेटास्तथा मेषादिराशयः ।**
**लोकस्यैवोपकारत्वं कर्तुमर्हन्ति सर्वदा ॥ २ ॥**

भाषा—रव्यादिग्रह और मेषादि राशि सदा लोगों के उपकार करने के लिये हैं ॥ २ ॥

अथ धनस्थानं सुखस्थानञ्चाह—

**प्रथमं नवमं चैव धनमित्युच्यते बुधैः ।**
**चतुर्थं दशमं प्रोक्तं सुखमेव मनीषिभिः ॥ ३ ॥**

भाषा—पण्डित लोग प्रथम और नवम स्थान को धन स्थान कहते हैं । तथा चतुर्थ और दशम स्थान को सुख कहते हैं ॥ ३ ॥

अथायुःस्थानं मारकस्थानञ्चाह—

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ४ ॥

भाषा—व्याख्यात ही है ॥ ४ ॥

अत्र विशेषमाह—

चन्द्रभानू विना सर्वे मारका मारकाधिपाः ।
षष्ठाष्टमव्ययेशास्तु राहुकेतू तथैव च ॥ ५ ॥

भाषा—चन्द्रमा और सूर्य को छोड़कर बाकी सब ग्रह मारक स्थान (२, ७) के स्वामी होने से मारक होते हैं। षष्ठेश, अष्टमेश, व्ययेश भी मारक होते हैं। तथा राहु और केतु मारक होते हैं ॥ ५ ॥

अथ खरद्रेष्काणपं वैनाशिकाधिपश्चाह—

आद्यन्तपौ च विज्ञेयौ चन्द्राक्रान्ताद् ग्रहौ नृणाम् ।
खरद्रेष्काणपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः ॥ ६ ॥

भाषा—चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो उस राशि से प्रथम और द्वादश इन दोनों स्थानों का स्वामी क्रमसे खरद्रेष्काणपति और वैनाशिकाधिप होता है। यथा चन्द्रमा जिस स्थान में हो उसका स्वामी खरद्रेष्काणपति और चन्द्रमा से बारहवें स्थान का स्वामी वैनाशिकाधिप होता है। इसका प्रयोजन आगे पड़ेगा ॥ ६ ॥

अथ मारके पुनर्विशेषमाह—

विपत्ताराप्रत्यरीशौ वधभेशस्तथैव च ।
मारका जातके प्रोक्ताः कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥ ७ ॥

भाषा—विपत् तारके स्वामी, प्रत्यरि का स्वामी और वध तारा का स्वामी को जातक में काल को जाननेवाले विद्वानों ने मारक कहा है ॥ ७ ॥

अथ राजयोगप्रस्तावनामाह—

अथापरं प्रवक्ष्यामि राजयोगादिसम्भवम् ।
ग्रहाणां स्थानभेदेन राशिदृष्टिवशात्फलम् ॥ ८ ॥

भाषा—इसके बाद ग्रहों के राशिवश से और दृष्टि के वश से जो राज-योगादिक, उसके फल को कहते हैं ॥ ८ ॥

अथ जन्मकालिककर्तव्यतामाह—

जन्मकाले तु सम्प्राप्ते लग्नं निश्चित्य पण्डितैः ।
तस्मिन्काले खेचराणां चारं निश्चित्य योजयेत् ॥ ९ ॥

भाषा—पहले जन्मकाल में विद्वानों को लग्न का निश्चय करना चाहिए। और उस काल में ग्रहों के सञ्चार का निश्चय करके रखना चाहिए ॥ ९ ॥

अथ पूर्वमायुःपरीक्षैव कार्येत्यत्र कारणमाह—

पूर्वमायुः परीक्ष्येत पश्चाल्लक्षणमेव च ।
नो चेत्तु लक्षणज्ञाने ह्यायासो व्यर्थमाप्नुयात् ॥१०॥

भाषा—पहले आयुर्दाय का निश्चय करके जातकों के लक्षण की परीक्षा करनी चाहिए। नहीं तो लक्षण ज्ञान में प्रयास करना व्यर्थ हो जायगा क्योंकि जिसकी आयुर्दाय नहीं है, उसके लक्षण ज्ञान करने से क्या लाभ ॥ १० ॥

तत आह—

पुनस्तन्वादयो भावाः स्थाप्यास्तेषां शुभाशुभम् ।
लाभं तृतीयं रन्ध्रञ्च शत्रुस्थानं व्ययं तथा ॥ ११ ॥
एषां योगेन यो भावस्तन्नाशं प्राप्नुयाद् ध्रुवम् ।

भाषा—फिर तन्वादि बारह भावों का आनयन करके स्थापन करे। अब उन भावों का शुभाशुभ कहते हैं। ग्यारहवें भाव, तृतीय भाव, आठवें भाव, रिपु भाव, व्यय भाव, इन भावों के सम्बन्ध में जो भाव पड़े वे सब निश्चय करके नाश को प्राप्त होते हैं ॥ ११½ ॥

चत्वारो राशयो भद्राः केन्द्रकोणशुभावहाः ॥ १२ ॥
तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभो भवेत् ।

भाषा—शुभ करने वाले केन्द्र (४, १०), कोण (९, ५) ये चारों भाव जिस चार राशियों में स्थित होवे चारो राशियाँ कल्याण देने वाली होती हैं ॥ १२ ॥

अथ केन्द्रसंख्यां तच्छुभत्वञ्चाह—

केन्द्राश्चतस्रो विख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १३ ॥
तेषां मध्ये तु शुभदौ कर्मबन्धू विशेषतः ।

भाषा—तत्त्वदर्शी मुनि लोग चार स्थानों ( १, ४, ७, १० ) का नाम केन्द्र कहते हैं । उन चारों में ( १०, ४ ) ये दोनों अधिक शुभफल दायक है ॥ १३½ ॥

अथ योगविभागमाह—

अथ योगविभागन्तु वच्मि पूर्वानुसारतः ॥ १४ ॥
पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजाः पुनः ।
विशेषतश्च त्रिदशत्रि कोणचतुरष्टमान् ॥ १५ ॥

भाषा—इसका अर्थ पूर्व में स्पष्ट किया गया है ॥१४–१५॥

अथ लक्ष्मीस्थानं विष्णुस्थानञ्चाह—

लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणः स्याद्विष्णुस्थानं तु केन्द्रकम् ।
तेषां संयोगमात्रेण चक्रवर्ती नरो भवेत् ॥१६॥

भाषा—त्रिकोण ( ९, ५ ) लक्ष्मी जी का स्थान है, और केन्द्र ( १, ४, ) ७, १० ) विष्णु का स्थान है, इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध होने से मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है । १६ ॥

अथान्यराजयोगमाह—

तपःस्थानाधिपो मन्त्रे मन्त्रनाथेऽथवा गुरौ ।
उभावन्योन्यसंदृष्टौ जातश्चेद् बहुराज्यभाक् ॥ १७ ॥

भाषा—तप स्थान ( ९ ) का स्वामी मन्त्र (पञ्चम) स्थान में हो, अथवा मन्त्रेश बृहस्पति हो, नवमे भाग का स्वामी और गुरु इन दोनों का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध हो तो बालक बहुत राज्य को भोग करने वाला होता है ॥१७॥

अथ पुनस्तमेवाह—

यत्र कुत्रापि संयुक्तौ तौ चापि समसप्तमौ ।
राजवंशोद्भवो बालो राजा भवति निश्चितम ॥ १८ ॥

भाषा—किसी भी कुण्डली मे पञ्चमेश और बृहस्पति इकट्ठा होकर सप्तम में हो तो राजवंश में उत्पन्न बालक निश्चय करके राजा होता है ॥ १८ ॥

अथ राजयोगान्तरमाह—

**वाहनेशे तथा माने मानेशे वाहने गते।**
**बुद्धिधर्माधिपाभ्यान्तु दृष्टौ चेद् बहुराज्यभाक् ॥१९॥**

भाषा—वाहनेश (चतुर्थेश) मान (नवम) स्थान में और मानेश (नवमेश) वाहन (चतुर्थ) स्थान में हो, पञ्चमेश और नवमेश से वे दोनों देखे जाते हों तो जातक बहुत राज्य को भोग करने वाला होता है ॥१९॥

अथ विशिष्टराजयोगमाह—

**मन्त्रेशकर्मेशसुखेशलग्ननाथास्तथा धर्मपसंयुताश्चेत्।**
**नृपोद्भवश्चेद्बहुवारणाश्वैः स्वतेजसा व्याप्तदिगन्तरालम् ॥२०॥**

भाषा मन्त्रेश (पञ्चमेश), कर्मेश (दशमेश), सुखेश (चतुर्थेश), लग्ननाथ (लग्नका स्वामी), ये सब नवमेश से अगर संयुक्त हो तो राजकुल में उत्पन्न हुआ बालक बहुत वारण (हाथी), अश्व (घोड़ा) इत्यादि वाहनों से समन्वित होता है और अपने तेज से देशान्तर को व्याप्त करता है ॥२०॥

पुनस्तमेवाह—

**सुखकर्माधिपौ चैव मन्त्रनाथेन संयुतौ।**
**धर्मनाथेन संदृष्टौ जातश्चेद् बहुराज्यभाक् ॥ २१ ॥**

भाषा—सुखेश और दशमेश पञ्चमेश से संयुक्त होकर नवमेश से देखा जाता हो तो बालक बहुत राज्यभागी होता है ॥ २१ ॥

पुनस्तमेवान्यथाह—

**सुतेश्वरो धर्मपसंयुतश्चेल्लग्नेश्वरेणापि युतो विलग्ने।**
**सुखेऽथवा मानगृहेऽथवा स्याद्राज्याभिषिक्तो यदि राजवंश्यः ॥२२॥**

भाषा—पञ्चमेश, नवमेश और लग्नेश से युत हो कर लग्न वा चतुर्थस्थान अथवा नवम गृह में हो तो राजवंश में उत्पन्न बालक राज्याधिकारी होता है ॥२२॥

इति जरितो निर्वाऽस्यच्युतानन्दीयमध्यपाराशरीटीकायां प्रथमः परिच्छेदः।

—०—

# अथ द्वितीयः परिच्छेदः

तत्र धनयोगप्रस्तावनामाह—

अथापरं प्रवक्ष्यामि धनयोगं विशेषतः ।
ग्रहाणां स्थानभेदेन राशिदृष्टिवशात्तथा ॥ १ ॥

भाषा—अब इसके बाद विशेष से ग्रहों के स्थान भेद से और दृष्टि के वश से धन योग को कहता हूँ ॥ १ ॥

ये ये ग्रहा धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ताश्च दृष्टाश्च सुखप्रदास्ते ।
रन्ध्रेश्वरारिव्ययपैर्युताः स्युः शोकप्रदा मारकनायकैश्च ॥२॥

भाषा—जो जो ग्रह नवमेश और पञ्चमेश से युत हो या देखे जाते हों वे सब शुभप्रद होते हैं और जो जो ग्रह अष्टमेश, षष्ठेश, व्ययेश और मारकेश इन सबों से युत हो वे सब शोक देने वाले होते हैं ॥ २ ॥

अथ धनयोगकल्पनायां किञ्चिदाह—

क्रूरसौम्यविभागेन स्वस्थानादिवशात्तथा ।
साहचर्याच्च योगानां धनयोगान् प्रकल्पयेत् ॥३॥

भाषा—पापग्रह और शुभग्रह के अपने अपने स्थान के वश से योगों के सम्बन्ध से धनयोग की कल्पना करनी चाहिए ॥ ३ ॥

अथ बहुद्रव्यनायकयोगानाह—

धर्मस्थाने गुरुक्षेत्रे गुरुशुक्रयुते तथा ।
पञ्चमाधिपयुक्ते वा बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ४ ॥

भाषा—जन्म लग्न से नवम स्थान गुरु के क्षेत्र (धनु, मीन) में पड़े, बृहस्पति और शुक्र से युत हो या पञ्चमेश से युत हो तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमे सोमजक्षेत्रे तस्मिन् सौम्ययुते यदि ।
लाभे सचन्द्रभौमस्तु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ५ ॥

भाषा—पञ्चमस्थान सोमज (बुध) के क्षेत्र (मिथुन, कन्या) में पड़े,

उसमें शुभग्रह होवे, चन्द्रमा और मंगल लाभ स्थान में होवे तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥ ५ ॥

**पञ्चमे तु भृगुक्षेत्रे तस्मिञ्छुक्रे ससोमजे ।**
**लाभे शनैश्चरयुते बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ६ ॥**

भाषा—पञ्चमस्थान शुक्र के क्षेत्र ( वृष, तुला ) में पड़े, उसमें बुध, शुक्र, युत होवे, एकादश स्थान में शनि होवे तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥६॥

**पञ्चमे तु रविक्षेत्रे तस्मिन् रवियुते यदि ।**
**लाभे देवेन्द्रपूज्ये तु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ७ ॥**

भाषा—अगर पञ्चमस्थान रवि क्षेत्र ( सिंह ) में पड़े, उसमें रवि होवे, और बृहस्पति ग्यारहवें भाव में होवे तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥ ७ ॥

**पञ्चमे तु शनिक्षेत्रे तस्मिन् सूर्यजसंयुते ।**
**लाभेश आत्मजयुते बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ८ ॥**

भाषा—पञ्चम स्थान शनिक्षेत्र ( मकर, कुम्भ ) में पड़े, उसमें शनि बैठा हो और शनि लाभेश से युत हो तो बहुत द्रव्य का स्वामी होता है ॥ ८ ॥

**पञ्चमे तु गुरुक्षेत्रे तस्मिन् गुरुयुते यदि ।**
**लाभे सचन्द्रसौम्ये तु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ९ ॥**

भाषा–पञ्चमस्थान अगर गुरु के क्षेत्र ( धनु, मीन ) में पड़े, उसमें गुरु बैठा हो और ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा सहित बुध हो तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥ ९ ॥

**पञ्चमे तु शशिक्षेत्रे तस्मिन् शशियुते यदि ।**
**लाभे भौमेन संयुक्ते बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ १० ॥**

भाषा—पञ्चमस्थान चन्द्रमा के क्षेत्र ( कर्क ) में पड़े, उसमें चन्द्रमा हो और ग्यारहवां भाव मंगल से युत होवे तो बहुत द्रव्य का नायक होता है ॥१०॥

अथायुतधनान्वितयोगमाह—

**भानुक्षेत्रे गते लग्ने तस्मिन् भानौ युते यदि ।**

यदि भौमेन गुरुणा दृष्टे स्यादयुतैर्धनैः ॥ ११ ॥

भाषा - सूर्य के घर ( सिंह राशि ) लग्न में पड़े, उसमें सूर्य बैठा हो, मंगल और बृहस्पति इन दोनों से देखा जाता हो तो अयुत प्रमाण ( १०००० ) धन (द्रव्य) से धनी होता है ॥११॥

अथ धनयशोर्चितयोगानाह—

चन्द्रक्षेत्रे गते लग्ने तस्मिंश्चन्द्रगते यदि ।

जीवभौमयुते दृष्टे जातो धनयशोर्चितः ॥ १२ ॥

भाषा चन्द्रक्षेत्र ( कर्क ) गत लग्न हो, उसमें चन्द्रमा बैठा हो, बृहस्पति और मंगल से युत हो या देखा जाता हो तो बालक धन और यश से पूजित होता है ॥ १२ ॥

भौमक्षेत्र गते लग्ने तस्मिन् भौमेन संयुते ।

गुरुचन्द्रयुते दृष्टे जातो धनयशोर्चितः ॥ १३ ॥

भाषा मंगल के क्षेत्र ( मेष, वृश्चिक ) लग्न में होवे, उसमें मंगल होवे तथा बृहस्पति और चन्द्रमा से युत या देखा जाता हो तो जातक धन, यश से पूजित होता है ॥ १३ ॥

बुधक्षेत्रगते लग्ने तस्मिन् सौम्ययुते यदि ।

गुरुचन्द्रयुते दृष्टे जातो धनयशोर्चितः ॥ १४ ॥

भाषा—बुध के घर ( मिथुन, कन्या ) में लग्न हो, उसमें बुध हो, और बृहस्पति, चन्द्रमा से युत हो या देखा जाता हो तो जातक धन, यश से पूजित होता है ॥ १४ ॥

अथ धनयशोऽन्वितयोगावाह—

शुक्रक्षेत्रगते लग्ने तस्मिञ्छुक्रेण संयुते ।

शनिसौम्ययुते दृष्टे जातो धनयशोऽन्वितः ॥ १५ ॥

भाषा—शुक्रक्षेत्र ( वृष, तुला ) लग्न में हो, उसमें शुक्र बैठा हो, शनि और बुध से युत हो या देखा जाता हो तो जातक धन, यश से युत होता है ॥ १५ ॥

शनिक्षेत्रगते लग्ने तस्मिञ्छनियुते यदि ।
बुधशुक्रयुते दृष्टे जातो धनयशोऽन्वितः ॥ १६ ॥

भाषा—शनि क्षेत्र ( मकर, कुम्भ ) लग्न में हो, उसमें शनि बैठा हो, बुध, शुक्र से युत या देखा जाता हो तो जातक धन, यश से युत होता है ॥ १६ ॥

इति जरिसो निवास्यच्युतानन्दीयमध्यपाशरीटीकायां द्वितीयः परिच्छेदः ।

# अथ तृतीयः परिच्छेदः

अथ दरिद्रयोगप्रस्तावनामाह—

**अथापरं प्रवक्ष्यामि दारिद्र्यं दुःखकारणम् ।**
**क्रूरखेटादियोगैश्च दारिद्र्यं सम्भवेन्नृणाम् ॥ १ ॥**

भाषा—अब इसके बाद दुःख के निदानभूत दरिद्र योग को कहता हूँ पापग्रहादि के योग से मनुष्यों को दरिद्र योग होता है ॥ १ ॥

अथ कष्टदायकग्रहानाह—

**ये ये ग्रहा धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ता न दृष्टा बहुदुःखदास्ते ।**
**रन्ध्रेश्वरारिव्ययपैर्युता ये क्षयप्रदा मारकनायकेन ॥ २ ॥**

जो जो ग्रह नवमेश और पञ्चमेश से न युत हों, न देखे जाते हों वे सब ग्रह बहुत दुःख देने वाले होते हैं । तथा जो जो ग्रह अष्टमेश, रोगेश, व्ययेश और मारकेश से युत हों वे मृत्यु को देने वाले होते हैं ॥ २ ॥

अथ निधनयोगमाह—

**लग्नाधिपे रिष्फगते रिष्फेशे लग्नमागते ।**
**मारकेशयुते दृष्टे जातस्य निधनं वदेत् ॥ ३ ॥**

भाषा—लग्नेश बारहवें भाव में हो, बारहवें भाव का स्वामी लग्न में हो, मारकेश ( द्वितीयेश,सप्तमेश ) से युत हो या देखा जाता हो तो जातक का निधन ( मरण ) कहना चाहिए ॥ ३ ॥

अथ निर्धनयोगानमाह—

**लग्नाधिपे शत्रुगृहे गते वा षष्ठेश्वरे लग्नगतेऽथवाऽस्ते ।**
**विलग्नपे मारकनाथदृष्टे जातो भवेन्निर्धनको मनुष्यः ॥ ४ ॥**

भाषा—लग्नेश शत्रुगृह में हो, या षष्ठेश लग्न या सप्तम भवन में हो, लग्नेश मारकेश से देखा जाता हो तो जातक निर्धन होता है ॥ ४ ॥

लग्नेन्दौ केतुसंयुक्ते लग्नेशे निधनं गते ।
मारकेशयुते दृष्टे जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥५॥

भाषा—लग्न, चन्द्रमा केतु से युक्त हो, लग्नेश अष्टम में हो और मारकेश से युत या दृष्ट हो तो जातक निर्धन होता है ॥ ५ ॥

अथ राजवंशोद्भवस्यापि निर्धनयोगमाह—

षष्ठाष्टमव्ययगते लग्नेशे पापसंयुते ।
मारकेशयुते दृष्टे राजवंशेऽपि निर्धनः ॥ ६ ॥

भाषा—लग्नेश पापयुत होकर षष्ठ, अष्टम, व्यय इन तीनों स्थानों में से किसी स्थान में हो, मारकेश से युत या देखा जाता हो तो राजवंश में उत्पन्न हुआ भी लड़का निर्धन होता है ॥ ६ ॥

अथ दरिद्रयोगमाह—

विलग्ननाथे रविणा सरिष्फनाथेन युक्ते यदि पापदृष्टे ।
मित्रात्मजे नाथयुतेऽथ दृष्टे शुभैर्न दृष्टे स भवेद्दरिद्रः ॥७॥

भाषा—रवि और व्ययेश से युत लग्नेश अगर पापग्रह से देखा जाता हो, शनि लग्नेश से युत हो या देखा जाता हो और अन्य भी किसी शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो जातक निर्धन होता है ॥ ७ ॥

अथ निर्धनयोगमाह—

मन्त्रेशो धर्मनाथश्च षष्ठे वा खे स्थितौ क्रमात् ।
दृष्टौ चेन्मारकेशेन जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ ८ ॥

भाषा—पञ्चमेश और नवमेश क्रम से छठे या दशवें स्थान में हो, अगर मारकेश से देखा जाता हो तो जातक निर्धन होता है ॥ ८ ॥

अथ निर्धनचञ्चलयोगावाह—

षड्भावेशे रन्ध्ररिष्फारिसंस्थे षड्भावस्था रन्ध्ररिष्फारिनाथाः ।
पापैर्दृष्टा वा युतास्तस्य नाशं दुःखाक्रान्तो निर्धनश्चञ्चलः स्यात् ॥

भाषा—जिस भाव का स्वामी आठवें, बारहवें और छठे स्थान में हो और अष्टमेश, व्ययेश और रोगेश जिस भाव में हो, पापग्रह से युत या दृष्ट हो उस भाव का नाश होता है, और जातक दुःख युक्त निर्धन और चञ्चल होता है ॥९॥

अथ पुनर्निर्धनयोगानाह—

चन्द्राक्रान्तनवांशेशो मारकेशयुतो यदि ।
मारकस्थानगो वापि जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ १० ॥

भाषा—जिस नवांश में जन्म हो उस नवांश का स्वामी चन्द्रमा से युक्त हो या मारक स्थान ( ७, २ ) में गत हो तो जातक निर्धन होता है ॥ १० ॥

पापग्रहे लग्नगते भाग्यकर्माधिपौ विना ।
मारकेशयुते दृष्टे जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥११॥

भाषा – लग्न में पापग्रह बैठा हो पर वह पापग्रह नवमेश या दशमेश न हो और मारकेश से युत दृष्ट हो तो बालक निर्धन होता है ॥ ११ ॥

विलग्नेशनवांशेशौ रिष्फषष्ठाष्टगौ यदि ।
मारकेशयुतौ दृष्टौ जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ १२ ॥

भाषा —लग्नेश और नवांशेश अगर बारहवें, आठवें या छठे स्थान में हो मारकेश से युत हो या देखा जाता हो तो जातक निर्धन होता है ॥ १२ ॥

अथ धननाशकमहावित्तकारकयोगावाह—

धने संस्थौ च भौमेन्दू कथितौ धननाशकौ ।
बुधेक्षितौ महावित्तं कुरुतस्तद्गतः शनिः ॥ १३ ॥

भाषा - मंगल और चन्द्रमा धन (२) स्थान में हों तो धन नाश करते हैं यदि धनस्थान गत मंगल और चन्द्रमा बुध से देखे जाते हों तो बहुत धन देते हैं। धनगत शनि भी बहुत धन देता है ॥ १३ ॥

अथ निःस्वतायोगं महाधनयुतयोगञ्चाह—

निःस्वतां कुरुते तत्र रविर्नित्यं यमेक्षितः ।
महाधनयुतं स्यात्तं शन्यदृष्टः करोत्यसौ ॥ १४ ॥

भाषा—धन भाव गत रवि शनि से देखा जाता हो तो जातक को निर्धन करता है। अगर धनगत रवि शनि से न देखा जाता हो तो जातक को बहुत धन धन से युत, विख्यात करता है ॥ १४ ॥

**धनभावगताः सौम्याः कुर्वन्त्येव धनं बहु ।**
**बुधदृष्टो गुरुस्तत्र निर्धनं कुरुते नरम् ॥ १५ ॥**

भाषा—सब शुभग्रह धन भाव में बैठे हों तो जातक को बहुत धन देते हैं। अगर धन भाव गत बृहस्पति, बुध से देखा जाता हो तो मनुष्य को निर्धन करते हैं ॥ १५ ॥

**बुधश्चन्द्रेक्षितस्तत्र सर्वस्वं हन्ति निश्चितम् ।**
**एतोद्ध विबुधैश्चिन्त्यं बलाबलविचारतः ॥ १६ ॥**

भाषा—धन भाव गत बुध चन्द्रमा से देखा जाता हो तो सब धन का नाश करता है। ग्रहों का बलाबल पहले विचार कर इन योगों का पण्डित विचार करे ॥ १६ ॥

इति मध्यपाराशरीटीकायां तृतीयः परिच्छेदः।

# अथ चतुर्थः परिच्छेदः

अथ प्रस्तावनामाह—

वक्ष्येऽहं सारमुद्धृत्य ज्योतिःशास्त्राम्बुधेस्ततः ।
दशा सौख्यप्रदा नृणां ग्रहाणां दृष्टियोगतः ॥ १ ॥

भाषा— अब इसके बाद ज्योतिःशास्त्र रूपी समुद्र से सार वस्तु को निकाल कर मनुष्यों को ग्रहों के दृष्टियोग से सौख्यप्रदा दशा को कहता हूँ ॥ १॥

अथ सूर्यादिमहादशावर्षसङ्ख्यामाह—

तनुर्नित्यसनादेयास्तया धान्यासटासना ।
नरेति संख्या विज्ञेयाः क्रमात्सूर्यादिवत्सराः ॥ २ ॥

भाषा—इस श्लोक से सूर्यादि ग्रहों की महादशा वर्ष संख्या जानने के लिये जैमिनि सूत्र के अनुसार व्यञ्जन वर्ण का ही निर्देश किये हैं । क, ट, प, य इत्यादि वर्ण से एकादि संख्या ग्रहण करनी चाहिए । जैसे क से एक, ख से दो, ग से तीन इत्यादि ञ पर्य्यन्त नव संख्या ग्रहण करनी चाहिए । इसी तरह ट से एक, ठ से दो, ड से तीन इत्यादि ध पर्य्यन्त नव संख्या, प से म तक एकादि पाँच संख्या और य से ह तक एक से आठ तक संख्या ग्रहण करते हैं । यहाँ न को शून्य और व्यञ्जन तथा स्वर को पद्य पूरणार्थ जानना चाहिए ।

अतः तनु = ०६, नित्य = १०, सना = ०७, देया = १८, तया = १६, धान्या—१९, सटा = १७, सना = ०७, नर = २० ये सूर्यादि ग्रहों के महादशा वर्ष हैं ॥ २ ॥

अथान्तर्दशानयनमाह—

स्वदशा रामगुणिता तद्दशागुणिता पुनः ।
खरामभागतो लब्धं फलं मासादिकं भवेत् ॥ ३ ॥

भाषा—अपनी दशा को तीन से गुणा कर गुणन फल को जिस ग्रह की

अन्तर्दशा लानी हो उसकी अन्तर्दशा से गुणा करे ३० का भाग देवे लब्धि मासादिक अन्तर्दशा होती है ॥ ३ ॥

**अन्तर्दशां विनिष्कृष्य स्वदशासंगुण्य यत्नतः ।**
**युगेन विभजेल्लब्धं दिनं तत्तद्दशाफलम् ॥ ४ ॥**
**स्वगुणेन हृताल्लब्धमन्तरान्तर्दशा भवेत् ।**
**एवं सूक्ष्मदशां ज्ञात्वा तथा प्राणदशामपि ॥ ५ ॥**

भाषा—पूर्व प्रकार से अन्तरदशा को निकाल कर के दिनात्मक बनावे, उसको अपने महादशा वर्ष से गुणा कर चार का भाग देवे, जो लब्धि आवे उसमें फिर ३० का भाग देने से लब्धि दिनादि अन्तरान्तर्दशा होती है ।

इस प्रकार से उपदशा का ज्ञान करके प्राणदशा का ज्ञान करे ॥ ४-५ ॥

अथ दशाफलप्रस्तावनामाह—

**आहुः शुभाशुभफलं नृणां कालविदो जनाः ।**
**एतत्कृते निर्णयिते ह्यायुषो निश्चयो भवेत् ॥ ६ ॥**

भाषा— दशा का निर्णय करके काल जानने वाले पंडित लोग मनुष्यों के शुभाशुभ फल को कहते हैं । और इसी निर्णय पर से आयु का भी निश्चय हो जाता है ॥ ६ ॥

अथ दशाफलान्याह—

**पञ्चमेशदशायां तु धर्मपस्य दशा तु या ।**
**अतीव शुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः ॥ ७ ॥**

भाषा—पञ्चमेश की महादशा में नवमेश की अन्तर्दशा अत्यन्त शुभ देने वाली है । ऐसा काल को जानने वाले मुनीश्वरों ने कहा है ॥ ७ ॥

**धमन्मनाथस्य तपोधिपस्य दशा शुभा राज्यसुतप्रदा स्यात् ।**
**सकोदिनावस्य सुखेश्वरस्य दशा तथा प्राहुरुदारचित्ताः ॥ ८ ॥**

भाषा—पञ्चमेश से युत नवमेश की महादशा शुभदा और राज्य, पुत्र

देने वाली है। तथा पञ्चमेश से युत चतुर्थेश की दशा उसी तरह फल देती है। ऐसा उदार चित्त वाले पण्डितों ने कहा है॥ ८॥

पञ्चमेशेन युक्तस्य ग्रहस्य शुभदा दशा।
तथा धर्मप्रयुक्तस्य दशा परमशोभना॥ ९॥

भाषा—पञ्चमाधीश से युत जो ग्रह हो उसकी दशा शुभ देने वाली है। इसी तरह नवमेश से युत ग्रह की दशा भी होती है॥ ९॥

पापदृष्टस्य खेटस्य दशा हानिकरा मता।
शुभयुक्तस्य खेटस्य दशा द्रव्यप्रदा भवेत्॥ १०॥

भाषा—पापग्रह से जो ग्रह देखा जाता हो उसकी दशा हानि करती है। शुभ ग्रह से युक्त ग्रह की दशा द्रव्य को देती है॥ १०॥

सपञ्चमेशलग्नेशदशा राज्यप्रदायिनी।
तथा धर्मप्रयुक्तस्य लग्नपस्य दशा मता॥ ११॥

भाषा—पञ्चमेश से युक्त लग्नेश की दशा राज्यको देती है। और धर्मेश से युत लग्नेश की भी दशा का फल इसी तरह पण्डितों ने स्वीकार किया है। ११॥

सपञ्चमेशस्य तपोधिपस्य दशा भवेद्राज्यसुखार्थलाभदा।
तथैव मानाधिपसंयुतस्य सुतेश्वरस्यापि दशा शुभा स्यात्। १२।

भाषा—पञ्चमेश से युत नवमेश की दशा राज्य, सुख, अर्थ लाभ को देती है। नवमेश से युत पञ्चमेश की दशा भी इसी तरह शुभ करती है॥१२॥

पञ्चमेशेन युक्तस्य मानेशस्य दशा शुभा।
सुखेशसहितस्यापि धर्मेशस्य दशा शुभा॥ १३॥

भाषा—पञ्चमेश से युत नवमेश की दशा शुभ है। और चतुर्थेश से सहित नवमेश की भी दशा शुभ है॥ १३॥

तथा शुभस्थावनमानपस्य तथैव मानार्थसुखप्रदा स्यात्।
दशा नृणां सौख्यकरी भवेद्धि सुखेशयुक्तस्य च मानपस्य। १४।

भाषा—नवम भाव स्थित नवमेश की दशा इसी तरह मान, अर्थ और सुख को देती है चतुर्थेश से युत नवमेश की दशा मनुष्यों को निश्चय करके सुख देने वाली होती है ॥ १४ ॥

**षष्ठस्य सप्तमस्यैको नायको मानराशिगः ।**
**दशा तस्य शुभा ज्ञेया तथा तेन युतस्य च ॥ १५ ॥**

भाषा—षष्ठस्थान और सप्तम स्थान इन दोनों में से किसी एक स्थान का स्वामी नवम स्थान में हो तो उसकी दशा शुभ होती है। इसी तरह नवमेश से युत षष्ठेश या सप्तमेश हो तो फल जानना चाहिए ॥ १५ ॥

**एको द्विसप्तमस्थाननायको यदि सौख्यगः ।**
**तेन युक्तदशा ज्ञेया शुभदाऽऽहुर्मनीषिणः ॥ १६ ॥**

भाषा—दूसरा और सप्तमस्थान में से किसी एक का स्वामी चतुर्थ भाव में होकर जिससे युक्त हो तो उस ग्रह की दशा शुभ देने वाली है। ऐसा महर्षियों ने कहा है ॥ १६ ॥

**षष्ठाष्टमव्ययाधीशाः पञ्चमाधिपसंयुताः ।**
**तेषां दशा च शुभदा प्रोच्यते कालवीत्तमैः ॥ १७ ॥**

भाषा—षष्ठेश, अष्टमेश और व्ययेश यदि पञ्चमेश से युत हो तो उनकी दशा काल को जानने वाले पण्डितों ने शुभ कही है ॥ १७ ॥

**सुखेशो मानभावस्थो मानेशः सुखराशिगः ।**
**तयोर्दशां शुभामाहुर्ज्योतिश्शास्त्रविदो जनाः ॥ १८ ॥**

भाषा—चतुर्थेश दशमभाव में, दशमेश सुखभाव में हो तो इन दोनों की दशा ज्योतिःशास्त्र को जाननेवाले पण्डित लोग शुभ कहते हैं ॥ १८ ॥

**सुखेशमानेशसुतेशधर्मपा एकत्र युक्ता यदि यत्र कुत्र ।**
**तेषां दशाराज्यफलप्रदास्तैर्युक्तग्रहाणामपि दृग्युतैर्वा ॥ १९ ॥**

भाषा—चतुर्थेश, दशमेश, पञ्चमेश और नवमेश जहाँ कहीं सब एक साथ

## अथ चतुर्थः परिच्छेदः

वक्ष्येऽहं सारमुद्धृत्य ज्योतिश्शास्त्राम्बुधेस्ततः ।
दशा सौख्यप्रदा नृणां ग्रहाणां दृष्टियोगतः ॥ १ ॥

ज्योतिषशास्त्र महासागर का सार भूत, जो तत्त्व जातक की सुखप्रद दशा है, उसका वर्णन करता हूँ ॥ १ ॥

तनुनित्यसनादेयास्तथा धान्यासटासना ।
नरेतिसंख्या विज्ञेयाः क्रमात्सूर्यादि वत्सराः ॥ २ ॥

जैमिनि ऋषि प्रणीत जैमिनि सूत्र में अकारादि हकार वर्णों से अंक संख्या का जैसा मापदण्ड माना गया है, उसी प्रकार इस मध्यपाराशरी रचयिता विद्वान् ज्योतिषी ने भी यहाँ पर अक्षरों से अंको के बोधक वर्णों का प्रयोग किया हैं ( जैमिनि ज्योतिष फलित में एक सूत्र ग्रन्थ है जो इससे प्राचीन होना चाहिए )

जैमिनि सूत्र की टीका में वृद्ध कारिका निम्न है—

कटपयवर्गभवैरिह पिण्डान्त्यैरक्षरैरङ्काः ।
नञे च शून्ये ज्ञेये तथा स्वरे केवले कथितम् ॥

क्रम इस प्रकार है ।

क से झ तक संख्या = ९, अर्थात् क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८, झ = ९ तथा ट १, ठ = २, ड = ३, ढ = ४, ण = ५, त = ६, थ = ७, द = ८, ध = ९, न = ०, तथा प = १, फ = २, ब = ३, भ = ४, म = ५, तथा य = १, र = २, ल = ३, व = ४, श = ५, ष = ६, स = ७, ह = ८, अ-आ-इ सभी० एवं न ञ = ० इस प्रकार की कल्पना ध्यान में रखते हुए इस श्लोक में हलन्त व्यञ्जन और स्वर को शून्य समझते हुए—

तनु = ६ वर्ष = सू० । नित्य = १० = चं०, न = ०, त = १ "वामगतिकाः अङ्काः" सना = ७ = मं, दे या = १८ रा० तया = १६ = बृ०, धान्या = १९ = शनि, सटा = १७ = बुध, सना = ७ केतु न० = र २ नर = २० = शुक्र इस प्रकार उक्त क्रम से सूर्यादिक ग्रहों की दशा के वर्षमान बताये गये हैं। सू० चं० मं० बु० बृ० शु० श० रा० के इस क्रम में सू०, चं०, मं० रा० बृ० श०, बु०, के० और शुक्र यह क्रम कैसे माना गया होगा ?

स्वदशा रामगुणिता तद्दशा गुणिता पुनः ।
खरामभागतो लब्धं फलं मासादिकं भवेत् ॥ ३ ॥

अपनी दशा के वर्ष मान को ३ से गुणाकर उस दशा में जिस ग्रह की अन्तरदशा जाननी है उसकी अन्तर्दशा से गुणा कर गुणन फल में ३० का भाग देने मासादिक लब्धि

उस ग्रह की अन्तर्दशा होती हैं। जैसे सूर्य में सूर्यान्तर समय ज्ञात करना है, अतः सूर्य वर्ष १=६ × ३=१८, १८ × ६ = १०८=दिन अर्थात् ० वर्ष ३ मास, और १८ दिन सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा का मान होता है। एवं चन्द्र में यदि शुक्र का अन्तर ज्ञात करना है तो १० × ३ = ३०, ३० × १० = ३०० दिन=१० मास=० वर्ष १० महीना और ० शून्य दिन इसी प्रकार सर्वत्र समझिए ॥ ३ ॥

अन्तर्दशां विनिष्क्रष्य स्वदशासंगुण्ययत्नतः।
युगेन विभजेल्लब्धं दिनं तद्दशाफलम् ॥ ४ ॥
स्वगुणेन हृताल्लब्धमन्तर्दशा भवेत्।
एवं सूक्ष्मदशां ज्ञात्वा तथा प्राणदशामपि ॥ ५ ॥

पूर्व नियम से दिनात्मक अन्तर्दशा समय निकाल कर पुनः इसे अपेक्षित ग्रह की महादशा वर्ष संख्या से गुणितकर गुणन फल में ४ का भाग देने से लब्धि में पुनः ३० का भाग देने से दिनादिक अन्तर में अन्तर्दशा मान होता है।

यथा सूर्य में सूर्यान्तर दशा = १०८ दिन × ६ ÷ १२० = ० वर्ष ० मास ५ दिन २४ घटी इसी प्रकार यह सूर्य दशा में सूर्यान्तर में सूर्य का ही प्रत्यन्तर होगा।

१०८ × १० ÷ १२० = ०।०।९।० एवं सर्वत्र समझिए ॥ ४ ॥ ५ ॥

आहुः शुभाशुभफलं नृणां कालविदो जनाः।
एतत्कृते निर्णयिते ह्यायुषो निश्चयो भवेत् ॥ ६ ॥

इस आधार से ज्योतिर्विद समाज से जातकों के शुभाशुभ फल विचार परम्परया आयु का भी निर्णय किया गया है ॥ ६ ॥

पञ्चमेशदशायां तु धर्मपस्य दशा तु या।
अतीवशुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः ॥ ७ ॥

दैवज्ञवर्यों ने पञ्चमेश की दशा में नवमेश ग्रह की अन्तर्दशा का समय सर्वोत्तम कहा हैं ॥ ७ ॥

समन्त्रनाथस्य तपोधिपस्य दशा शुभा राज्यसुतप्रदा स्यात्।
सकीर्तिनाथस्य सुखेश्वरस्य दशा तथा प्राहुरुदारचित्ताः ॥ ८ ॥

उदार विचार धारा के दैवज्ञों ने, पञ्चमेश युक्त नवमेश की दशा, तथा पञ्चमेश ग्रह से युक्त चतुर्थेश ग्रह की दशादि समयों में मानव की भाग्यवृद्धि कही हैं ॥ ८ ॥

पञ्चमेशेन युक्तस्य ग्रहस्य शुभदा दशा।
तथा धर्मपयुक्तस्य दशा परमशोभना ॥ ९ ॥

पञ्चमेश से युत तथा नवमेश युक्त ग्रह दशा उत्तम फलद होती है ॥ ९ ॥

पापदृष्टस्य खेटस्य दशा हानिकरा मता।
शुभयुक्तस्य खेटस्य दशा द्रव्यप्रदा भवेत् ॥ १० ॥

भाषा—पञ्चमभाव में या पञ्चम भाव के नवांश में या पञ्चम भाव के द्वादशांश में या मित्र के द्रेष्काण में गत जो ग्रह उसकी दशा शुभ देने वाली होती है ॥ ६ ॥

**तपोराशिनवांशस्थे धर्मस्य द्विरसांशके ।**
**गुरुद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥ ७ ॥**

भाषा—नवमराशि के नवांश में या नवम भाव के द्वादशांश में या बृहस्पति के द्रेष्काण में जो ग्रह हो उसकी दशा शुभ करने वाली होती है ॥ ७ ॥

**सुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके ।**
**सुखद्रेष्काणगे चापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥ ८ ॥**

भाषा—चतुर्थराशि के नवांश में या चतुर्थ भाव के द्वादशांश में या सुख भाव के द्रेष्काण में जो ग्रह हो उसकी दशा शुभ होती है ॥ ८ ॥

**विलग्ननाथस्थितभांशनाथे मित्रांशके मित्रग्रहेण दृष्टे ।**
**सुहृद्दृकाणस्य नवांशके वा तदस्य भुक्तिं शुभदां वदन्ति ॥९॥**

भाषा—लग्नेश जिस राशि में बैठा हो उसके स्वामी के नवांश में या मित्र के नवांश में हो, मित्र ग्रह से देखा जाता हो या मित्र के द्रेष्काणपति के नवांश में जो ग्रह बैठा हो उसकी दशा शुभ होती है ॥ ९ ॥

अथ कष्टप्रदां दशामाह—

**अथ वक्ष्ये विशेषेण दशा कष्टप्रदा नृणाम् ।**
**षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशा कष्टप्रदायिनी ॥ १० ॥**

भाषा—अब इसके बाद कष्ट देने वाली दशा को कहता हूँ । षष्ठेश, अष्टमेश और व्ययेश इनकी दशा कष्ट देने वाली होती है ॥ १० ॥

अथ ज्वरप्राप्तिदशामाह—

**मारकेशेन षष्ठेशे युक्ते लग्नाधिपे तथा ।**
**तस्य भुक्तौ ज्वरप्राप्तिः प्राहुः कालविदो जनाः ॥११॥**

भाषा—मारकेश से युक्त षष्ठेश तथा लग्नेश की दशा में ज्वर होता है। ऐसा कालज्ञों ने कहा है ॥ ११ ॥

अथाजीर्णजलदोषमरणदशामाह—

सरोगेशः शरीरेशश्चन्द्रषड्वर्गगो यदि।
जलदोषस्तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः ॥ १२ ॥

भाषा—षष्ठेश से युत लग्नेश चन्द्रमा के षड्वर्ग में गत हो तो उसकी दशा में जलदोष और अजीर्ण होता है। इसमें संशय नहीं ॥ १२ ॥

अथ वातदोषकारकदशामाह—

षष्ठेशयुक्तलग्नेशो बुधषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेद्वायुर्वातो वा देहजाड्यकृत् ॥ १३ ॥

भाषा—षष्ठेश से युक्त लग्नेश बुध के षड्वर्ग में गत हो तो उसकी दशा में वायु का प्रकोप होता है, या देह को दुर्बल करने वाला वातरोग होता है ॥ १३ ॥

अथ ब्राह्मणेन पीडाकरणदशामाह—

सारिनाथविलग्नेशो गुरुषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेद्रोगः पीडा वा ब्राह्मणेन तु ॥ १४ ॥

भाषा—अगर षष्ठेश से युक्त लग्नेश बृहस्पति के षड्वर्ग में हो तो उसकी दशा में रोग और ब्राह्मणों से पीड़ा होती है ॥ १४ ॥

अथ स्त्रीगमनेन रोगकरणदशामाह—

सषष्ठेशो विलग्नेशो भृगुषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेत् पीडा रोगः स्त्रीसङ्गमेन च ॥ १५ ॥

भाषा—अगर षष्ठेश से युक्त लग्नेश शुक्र के षड्वर्ग में गत हो तो उसकी दशा में पीड़ा तथा स्त्री के सङ्गम से रोग होता है ॥ १५ ॥

अथ सन्निपातकरणदशामाह—

सरोगेशो विलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोऽथवा नृणाम् ॥ १६ ॥

भाषा—अगर षष्ठेश से समन्वित लग्नेश शनि के षड्वर्ग में गत हो तो उसकी दशा में वात रोग और सन्निपात मनुष्यों को होता है ॥ १६ ॥

अथ शस्त्रघातादिकारकदशामाह—

लग्नेशरोगेशकयोर्भवेन्मारकभुक्तिषु ।
तदा ज्ञेयं महत्कष्टं शस्त्रघातादिकं भयम् ॥ १७ ॥

भाषा—लग्नेश और रोगेश की महादशा में मारकेश की अन्तर्दशा में बड़े भारी कष्ट और शस्त्रघातादिक का भय होता है ॥ १७ ॥

अथ रोगकरणदशामाह—

मृतौ स्थिताः सैंहिककेतुमन्दमहीसुताः श्वासविसूचिकाभिः ।
रोगो नराणामथ तस्य भुक्तौ भवेद्यदा मारकसंयुतिश्चेत् ॥ १८ ॥

भाषा—अष्टम भाव से राहु, केतु, शनि और मङ्गल स्थित हो तो उनकी महादशा में मारकेशकी अन्तर्दशा में श्वास विसूचिका रोग होता है ॥ १८ ॥

अथ पुनर्दशाफलप्रस्तावनामाह—

एवं भ्रात्रादिभावानां नायको यत्र संस्थितः ।
तत्तत्षड्वर्गयोगेन तत्तद्भावफलं वदेत् ॥ १६ ॥

भाषा—इसी तरह भ्रात्रादिभावों का स्वामी जिस भाव में स्थित हो उस भाव के पति के षड्वर्ग योग से उस भाव का फल कहना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ मृत्युकृद्दशामाह—

लग्नेशरोगनाथौ च विघ्नेशेन संयुतौ ।
मारकेशयुतौ क्रूरौ रोगनाथांशगौ यदा ॥ २० ॥
तस्य भुक्तौ विजावीयाद्व्यथा शस्त्रेण वा नृणाम् ।
शुभयोगेन बाधा स्यात्पापयोगेन मृत्युकृत् ॥ २१ ॥

भाषा—पापी लग्नेश और षष्ठेश, अष्ठमेश से युत हो या मारकेश से युत हो, या षष्ठेश के नवांश में हो तो उसकी दशा में मनुष्यों को शस्त्र से

व्यथा कहनी चाहिए। अगर शुभग्रह से युत हो तो कुछ भय नहीं। पाप ग्रह के योग होने से मृत्यु होती है ॥ २०–२१ ॥

**जीवांशजीववर्गेशान्मूलांशान्मूलवर्गतः ।**
**रोगादीन्प्रवदेत्तत्र तेषां भुक्तिवशात्फलम् ॥ २२ ॥**

भाषा—स्पष्ट हैं ॥ २२ ॥

अथ जम्बुक-व्याघ्र-कपिभीतितो वधकरणदशामाह—

**विलग्ननाथस्य नवांशनाथो रन्ध्रेशस्वस्थानपदृष्टियुक्तौ ।**
**मेषस्य षड्वर्गगतौ यदा तौ भुक्तौ तयोर्जम्बुकभीतितो वधः ।२३।**

भाषा—लग्नेश का जो नवांश हो उसका स्वामी और अष्टमेश जिस स्थान में बैठा हो उसका स्वामी इन दोनों से देखा जाता हो और मेष के षड्वर्ग में गत हो तो इन दोनों की दशा में सियार का भय होता है ॥ २३ ॥

**ओजवर्गगतौ तौ चेद्व्याघ्राद्भीतिं वदेन्नृणाम् ।**
**युग्मवर्गगतौ तौ चेत्कपिना नात्र संशयः ॥ २४ ॥**

भाषा—अगर वे दोनों विषमराशि के वर्ग में गत हों तो व्याघ्र से भय कहना। यदि समराशि के वर्ग में गत हों तो बानर से भय कहना चाहिए ॥ २४ ॥

अथान्यामपि भयदां दशामाह—

**कुलीरवर्गगौ तौ चेद्रासभाद्भयमादिशेत् ।**
**सिंहवर्गगतौ तौ चेद्भुक्तौ स्याद्व्याघ्रजं भयम् ॥ २५ ॥**

भाषा—अगर वे दोनों कर्क के षड्वर्ग में गत हों तो उनकी दशा में गदहे से भय होता है। सिंह के वर्ग में गत हों तो उनकी दशा में बाघ से भय होता है ॥ २५ ॥

**अलिवर्गगतौ भुक्तौ तयोः सारङ्गजं भयम् ।**
**अथ कार्मुकवर्गस्थौ भुक्तौ स्यादश्वजं भयम् ॥ २६ ॥**

भाषा—वृश्चिक के वर्ग में हों तो उनकी दशा में मृग से भय होता है। धनु के वर्ग में हों तो उनकी दशा में घोड़े से भय होता है ॥ २६ ॥

कन्यावर्गगतौ तौ चेद्भल्लूकाद्भयमादिशेत् ।
वणिग्वर्गगतौ तौ चेद्भुक्तौ तेषां मृगाद्भयम् ॥ २७ ॥

भाषा—कन्या के वर्ग में गत हों तो भालू से भय होता है। तुला राशि के वर्ग में गत हों तो उनकी दशा में मृग से भय होता है ॥ २७ ॥

मृगवर्गगतौ भुक्तौ तयोः कण्टकजं भयम् ।
मीनवर्गगतौ भुक्तौ मेषाश्वग्रहजं भयम् ॥ २८ ॥

भाषा—मकर के वर्ग में गत हों तो कांटे से भय होता है। अगर वे दोनों मीन के वर्ग में गत हों तो भेड़ा, घोड़ा और ग्रह इनसे उत्पन्न भय होता है ॥ २८ ॥

कुम्भवर्गगतौ तौ चेद् गोलाङ्गूलान्महद्भयम् ।
एवं देहादिभावानां षड्वर्गगतिभिः फलम् ॥ २९ ॥

भाषा—कुम्भ के वर्ग में गत हों तो गोलाङ्गूल से भय होता है। इस तरह लग्नादि भावों का षड्वर्ग की गति से फल जानना ॥ २९ ॥

अथ वृषघातान्मरणदां दशामाह—

लग्नेश्वरो रन्ध्रपतिश्च युक्तौ वृषे वृषांशे वृषभद्रिकाणे ।
स्थितौ भवेतां यदि वा वृषेण घातात्तयोर्वा मरणं हि भुक्तौ॥३०॥

भाषा—लग्नेश और अष्ठमेश दोनों एक स्थान में स्थित होकर वृष राशिमें या उसके नवांश में या उसके द्रकाण में स्थित हों तो उनकी दशा में वृष (बैल) से मनुष्य की मृत्यु होती है ॥ ३० ॥

वृषे युग्मांशगौ तौ चेद् व्याघ्रस्याघातजं भयम् ।
वृषे कर्कांशगौ तौ चेद्धन्वाद्यैः कल्पयेद्भयम् ॥ ३१ ॥

भाषा—वे दोनों वृष में स्थित होकर मिथुन के नवांशमें हों तो उनकी दशा में बाघ से आघातजन्य भय होता है। अगर वृष राशि में बैठकर कर्कांश में गत हों तो उनकी दशा में धनुष आदि से भय कहना ॥ ३१ ॥

वृषे कन्यांशगौ तौ चेत् कपिना नात्र संशयः ।
वृषे तुलांशगौ तौ चेद् व्याघ्रव्याघाततो मृतिः ॥ ३२ ॥

भाषा—यदि वृष में बैठकर कन्या के नवांश में हो तो उनकी दशा में बानर के आघात से भय कहना, अगर वृष राशि में बैठकर तुला में हो तो बाघ से भय कहना ॥ ३२ ॥

वृषे कौप्यंशगौ तौ चेदश्वात्पीडा प्रजायते ।
वृषे मृगांशेगौ तौ चेन्माहिषेण मृतिर्भवेत् ॥ ३३ ॥

भाषा—अगर वृष राशि में स्थित होकर धनु के नवांश में हो तो उनकी दशा में घोड़े से भय कहना । यदि वृष राशि में स्थित होकर मकर के नवांश में गत हो तो उनकी दशा में महिष से भय कहना ॥ ३३ ॥

वृषे कुम्भांशगौ तौ चेद् गोलाङ्गूलान्मृतिर्भवेत ।
वृषे मीनांशगौ तौ चेत्तयोर्भुक्तौ मृगाद्भयम् ॥ ३४ ॥

भाषा—यदि वृष राशि में स्थित होकर कुम्भ के नवांश में हो तो उनकी दशा में गोलाङ्गूल से मरण कहना । अगर वृष राशि में स्थित होकर मीन के नवांश में हो तो उनकी दशा में हरिण से भय कहना चाहिए ॥ ३४ ॥

एवं सञ्चिन्त्य मतिमान् पित्रादीनां मृतिं वदेत् ॥ ३४½ ॥

भाषा—इस तरह निश्चय करके माता-पिता इत्यादि का मरण कहना चाहिये ॥ ३४½ ॥

अथ सर्पान्मरणयोगमाह—

शरीरनाथो मरणाधिपेन युक्तो मृगेन्द्रे तु मृगाधिपांशाः ।
तयोर्विपाके भयमाखुना मृतिं सर्पात्सदा प्राहुरुदारचित्ताः ॥ ३५ ॥

भाषा—लग्नेश अष्टमेश से युत सिंह राशि में हो या मकर के स्वामी के नवांश में हो तो उन दोनों ( लग्नेश और अष्टमेश ) की दशा में मूस से भय और सर्प से मरण शास्त्रज्ञ उदार चित्तवाले ज्योतिषियों को कहना चाहिए ॥ ३५ ॥

अथ कप्यादिभिर्मरणयोगमाह—

सिंहे कन्यांशगौ तौ चेत्कपिना च तदा मृतिः ।
मृगराजे तुलांशस्थौ तयोर्भुक्तौ मृतिं वदेत् ॥ ३६ ॥

भाषा—लग्नेश और अष्टमेश सिंह राशि में होकर कन्या के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में बानर से मरण कहना चाहिए। अगर सिंह में बैठकर तुला के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में किसी विशेष कारण से मरण कहना चाहिए । ३६ ॥

अल्यंशगौ मृगेन्द्रे च तयोर्दाये सरीसृपात् ।
चापांशगौ यदा सिंहे तद्वर्षे श्वमृतिं वदेत् ॥ ३७ ॥

भाषा—अगर सिंह में बैठकर वृश्चिक के नवांश में हों तो उनकी दशा में साँप से मरण कहना चाहिए। जब वे दोनों सिंह में बैठकर धन नवांश में गत हो तो उस वर्ष में कुत्ते से मरण कहना चाहिए। ३७ ॥

मृगांशगौ मृगेन्द्रे च तयोर्दाये ज्वरान्मृतिः ।
कुम्भांशकगतौ तौ चेन्मृगराजे नृपाद्भयम् ॥ ३८ ॥

भाषा—सिंह में बैठकर मकर के नवांश में वे दोनों बैठे हो तो उनकी दशा में गदहे से मरण कहना चाहिए। अगर सिंह में बैठे हुए वे दोनों कुम्भ के नवांश में हों तो उनकी दशा में राजा से भय कहना चाहिए ॥ ३८ ॥

मीनांशकगतौ सिंहे सारङ्गाद्भयमेतयोः ।
सिंहे मेषांशगौ तौ चेद् गोमायोर्भयमादिशेत् ॥ ३९ ॥

भाषा—अगर सिंह में बैठकर मीनांश में गत हों तो सारङ्ग ( हाथी ) ( सारङ्गः पुंसि हरिणे चातके च मतङ्गजे इति मेदिनी ) से भय कहना चाहिये। अगर सिंह में बैठकर मेष के नवांश में गत हों तो गोमायु ( सियार ) ( स्त्रियां शिवा भूरिमायो गोमायुमृगधूर्तकाः इत्यमरः ) से भय कहना चाहिए ॥ ३९ ॥

वृषांशगौ च सूर्यर्क्षे तयोर्दाये शुना मृतिः ।
युग्मांशगौ तौ सिंहे च गोलाङ्गूलाद्भयं तयोः ॥ ४० ॥

भाषा—अगर सूर्य के राशि ( सिंह ) में बैठकर वे दोनों वृष के नवांश में हों तो उनकी दशा में कुत्ते के काटने से मरण कहना चाहिये। अगर सिंह में बैठकर मिथुन के नवांश में हों तो उनकी दशा में गोलाङ्गूल से भय कहना चाहिये ॥ ४० ॥

कर्कांशगौ तौ सिंहे तु ह्यग्निदाहान्मृतिं गृहे ।
एवं भ्रात्रादिभावानां तत्तद्भुक्तौ मृतिं वदेत् ॥ ४१ ॥

भाषा—अगर सिंह में बैठकर कर्क के नवांश में गत हो तो उनकी दशा में घर में अग्निदाह से मरण कहना चाहिए। इस तरह भाई आदि भावेश की दशा में भाई आदि का मरण कहना चाहिए ॥ ४१ ॥

अथ पुनर्वाजिकृतमरणयोगमाह—

देहाधिपो मृत्युपसंयुतश्च चापांशगो कार्मुकराशिगो चेत् ।
दायं तयोर्वाजिकृतं च मृत्युं वदन्ति तत्कालविदो महान्तः ॥४२॥

भाषा—लग्नेश, अष्टमेश से युत होकर धनु राशि में स्थिर होकर धनु के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में घोड़े से मरण कहना चाहिए। यह काल को जानने वाले बड़े लोग कहते हैं ॥ ४२ ॥

अथ धनुराशिस्थमकरादिनवांशगतयोस्तयोर्दशाफलमाह—

चापे मृगांशगौ तौ चेत्सारङ्गाद्भयमादिशेत् ।
हये कुम्भांशगौ तौ चेद्वराहाद्भयमादिशेत् ॥४३॥

भाषा—लग्नेश और अष्टमेश धनुराशि में स्थिर होकर मकर के नवांश में हो तो उनकी दशा में सारङ्ग (हाथी) से भय कहना चाहिए। अगर वे दोनों धनु राशि में बैठकर कुम्भ के नवांश में हों तो उनकी दशा में वराह ( सूकर ) से भय कहना चाहिए ॥ ४३ ॥

हये मीनांशगौ तौ चेत्पाके नक्राद्भयं भवेत् ।
मेषांशगौ तौ चापे तु तयोर्दाये चतुष्पदात् ॥ ४४ ॥

भाषा—अगर धनु राशि में स्थित होकर मीन के नवांश में हों तो उनकी दशा में नक्र ( गोह, नाक ) से भय कहना चाहिए। अगर धनु राशि में स्थिर होकर मेष के नवांश में स्थित हो तो उनकी दशा में चतुष्पद ( घोड़ा, बैल, गदहा, हाथी, इत्यादि ) से भय कहना चाहिए ॥ ४४ ॥

हये वृषांशगौ तौ चेद्रासभाद्भयमादिशेत् ।
युग्मांशगौ तु चापे तु वानराद्भयमादिशेत् ॥ ४५ ॥

भाषा—अगर धनु में स्थिर होकर वृष के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में गदहे से भय कहना चाहिए। अगर धनु में स्थिर होकर मिथुन के नवांश में बैठे हों तो उनकी दशा में बन्दर से भय कहना चाहिए॥ ४५॥

**कर्कांशगौ हयाङ्के तु चाखुना भयमेतयोः।**
**सिंहांशगौ हयाङ्के तु जम्बुकाद्भयमादिशेत्॥ ४६॥**

भाषा—अगर धनु राशि में बैठ कर कर्क के नवांश में गत हो तो उनकी दशा में मूसा से भय कहना चाहिए। अगर धनु राशि में स्थिर होकर सिंह के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में सियार से भय कहना चाहिए॥ ४६॥

**कन्यांशगौ तु चापे तु गोलांगूलाद्भयं वदेत्।**
**तुलांशगौ हयाङ्के तु उष्ट्रान्मरणमेतयोः॥ ४७॥**

भाषा—अगर वे दोनों धनु राशि में स्थिर होकर कन्या के नवांश में गत हों तो गोलांगूल से भय कहना चाहिए। अगर धनु में स्थिर होकर तुला के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में ऊँट से भय कहना चाहिए॥ ४७॥

**अल्यंशगौ हयाङ्गे तु तयोर्दाये सरीसृपात्।**
**एवं भ्रात्रादिभावानां फलमाहुर्मनीषिणः॥ ४८॥**

भाषा—अगर धनु राशि में स्थिर होकर वृश्चिक के नवांश में स्थिर हों तो उनकी दशा में सर्प से भय होता है। इस तरह भाई आदि से भावेश वश से विद्वानों ने फल कहा है॥ ४८॥

अथ मकरराशिस्थमकरादिनवांशगतयोस्तयोः फलमाह—

**विलग्नपो वैधननायकश्च मृगे मृगांशावगतौ च युक्तौ।**
**प्रीतिर्भवेदाशु तयोर्हि भुक्तौ विवाहहेतुः प्रवदन्ति सन्तः॥ ४९॥**

भाषा—लग्नेश और अष्टमेश मकर राशि में गत होकर मकर के नवांश में गत हों तो उनकी दशा में शीघ्र विवाह के वास्ते प्रीति होती है, ऐसा विद्वानों ने कहा है॥ ४९॥

**कुम्भांशगौ मृगाङ्गे च भल्लुकाद्भयमादिशेत्।**

झषांशगौ मृगाङ्के च सारङ्गाद्भयमेतयोः ॥ ५० ॥

भाषा—अगर मकर राशि में बैठकर कुम्भ के नवांश में हों तो उनकी दशा में भालू से भय कहना चाहिए। अगर मकर राशि में स्थित होकर मीन के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में सारंग (हाथी) से भय कहना चाहिये ॥ ५० ॥

मेषांशगौ मृगाङ्के तु जलाद्भयं विनिर्दिशेत् ।

वृषांशगौ मृगास्ये तु वज्राद्भयं विनिर्दिशेत् ॥ ५१ ॥

भाषा—अगर मकर में स्थित होकर मेष के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में जल से भय कहना चाहिए। अगर मकर में स्थित होकर वृष के नवांश में स्थित हों तो वज्र से भय कहना चाहिए।

युग्मांशगौ मृगाङ्के तु हरिणान्मृतिरेतयोः ।

कर्कांशगौ मृगास्ये तौ तयोर्दाये मृतिर्गजात् ॥ ५२ ॥

भाषा—अगर मकर राशि में स्थित होकर मिथुन के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में हरिण से मरण कहना चाहिए। अगर मकर राशि में स्थित होकर कर्क के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में हाथी से मरण कहना चाहिये ॥ ५२ ॥

सिंहांशगौ मृगाङ्के तु महापातकजं भयम् ।

कन्यांशगौ मृगाङ्के तु वानराद्भयमादिशेत् ॥ ५३ ॥

भाषा—अगर मकर में बैठकर सिंह के नवांश में गत हों तो महापातक का भय कहना चाहिए। अगर मकर में स्थित होकर कन्या के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में वानर से भय कहना चाहिए ॥ ५३ ॥

तुलांशगौ मृगास्ये तु नकुलान्मृतिरेतयोः ।

वृश्चिकांशगौ मृगास्ये तु मार्जारान्मृतिमादिशेत् ॥ ५४ ॥

भाषा—अगर मकर में स्थित होकर तुला के नवांश में स्थित हों तो उनकी दशा में नकुल (नेवला) से भय कहना चाहिए। अगर मकर राशि में स्थित होकर वृश्चिक के नवांश में स्थित हों तो बिल्ली से भय कहना चाहिए ॥ ५४ ॥

धन्वांशगो मृगास्ये तु रासभाद्भयमादिशेत् ।
एवं निश्चित्य मतिमान् पित्रादीनां फलं वदेत् ।। ५५ ।।

भाषा—अगर मकर राशि में स्थित होकर धनु के नवांश में गत हों तो गदहे से भय कहना चाहिए। इस तरह निश्चय करके पिता, माता, भाई इत्यादि का फल कहना चाहिए ।। ५५ ।।

इति मध्यपाराशरीटीकायां पञ्चमः परिच्छेदः ।

—:०:—

## अथ षष्ठः परिच्छेदः

अथ ग्रहाणां जातिभेदात्फलकथनार्थं प्रस्तावनामाह—

अथ वक्ष्ये खगेन्द्राणां जातिभेदात्फलागमम् ।
बालानां बोधनार्थाय सारं संगृह्य शास्त्रतः ।। १ ।।

भाषा—अब इसके अनन्तर शास्त्रों से सार निकाल कर बालकों के ज्ञान के लिये ग्रहों के जातिभेद से फल कहता हूँ ।। १ ।।

अथ ग्रहाणां जातिभेदानाह—

विप्रौ देवेज्यभृगुजौ क्षत्रियौ रविभूमिजौ ।
वैश्यौ निशाकरबुधौ शनिः शूद्रस्तमोऽन्त्यजः ।। २ ।।

भाषा—इसका अर्थ लघुपाराशरी में स्पष्ट किया गया है ।। २ ।।

अथ राशीनां विप्रादिविभागमाह—

मीनादयः क्रमादेते विप्रक्षत्रविशोऽन्त्रिजाः ।
एतेषां दृष्टियोगाभ्यां फलमाहुर्मनीषिणः ।। ३ ।।

भाषा—मीन से लेकर क्रम से बारह राशियां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, होते हैं। जैसे मीन ब्राह्मण, मेष क्षत्री, वृष वैश्य, मिथुन शूद्र, फिर कर्क ब्राह्मण, सिंह क्षत्री इत्यादि। इन राशियों के दृष्टि और योग से पण्डितों ने फल कहा है ।।३।।

अथ कारकग्रहानाह—

सूर्यो गुरुः कुजः सोमो गुरुर्ज्ञश्च सितः शनिः ।
गुरुश्चन्द्रेज्यमन्दाश्च क्रमशो भावकारकाः ॥ ४ ॥

भाषा—रवि, गुरु, मंगल, सोम, बृहस्पति, बुद्ध, शुक्र, शनि, बृहस्पति, सोम बृहस्पति और शनि क्रम से तन्वादि भाव कारक होते हैं ॥ ४ ॥

अथ मतान्तरेण तानेवाह—

पिता रविर्मातृकरः शशाङ्को भ्राता बुधार्की भृगुनन्दनश्च ।
भौमः सुतो मित्रग्रहो रविः स्याच्छत्रुग्रहौ राहुशनैश्चरौ स्तः ॥५॥

भाषा—रवि पितृकारक, चन्द्रमा मातृकारक, बुध, शनि और शुक्र भ्रातृकारक, मंगल पुत्रकारक, रवि मित्रकारक, और शत्रुग्रह राहु और शनैश्चर होते हैं । ५ ॥

अथ प्रकारान्तरेण तानेवाह—

पिता रविर्मातृकरः शशाङ्को भ्राता कुजो मातुलवर्गसौम्यः ।
पुत्रो गुरुर्भार्गवकामिनीशो मित्रे रवी राहुशनी च शत्रू ॥६॥

भाषा—स्पष्ट है ॥ ६ ॥

अथ सहायकग्रहानाह

शनिभौमौ पितृक्षेत्रे पक्षा जीवज्ञभार्गवाः ।
मातुर्भावे तु राजानौ रविचन्द्रमसौ स्मृतौ ॥ ७ ॥
भूसूनुर्नायको ज्ञेयो बुधः सूनुः प्रकीर्तितः ।
सचिवौ भृगुजीवौ च दृष्टियोगफलं पृथक् ॥ ८ ॥

भाषा—शनि और मंगल पितृ भाव में सहायक होते हैं । मातृभाव मे बृहस्पति, बुध और शुक्र सहायक होते हैं । रवि, चन्द्रमा राजा मंगल नायक, बुध कुमार, बृहस्पति और शुक्र मन्त्री हैं । इन सब ग्रहों के दृष्टि योग से अलग अलग फल होता है ॥ ७–८ ॥

अथ स्थानविशेषे पितृकारकमाह—

शनिं च मेषे पितरमाहुः कालविदो जनाः ।

**ग्रहाणां फलदातृत्वं तत्तत्पाके विनिर्दिशेत् ॥ ६ ॥**

भाषा—मेष राशि गत शनि हो तो पितृकारक होता है। ग्रहों को फल देने की शक्ति उनकी दशा में होती है ॥ ९ ॥

**यद्भावेशो यस्य षड्वर्गसंस्थस्तत्तत्पाके द्रव्यलाभो नराणाम् ।**
**यत्तद्द्रव्यं तस्य खेटस्य विन्द्यात्तद्द्रव्यं तस्य पाके वदन्ति ॥ १० ॥**

भाषा—जो भावेश जिस ग्रह के षड्वर्ग में स्थित हो उसकी दशा में मनुष्यों को द्रव्य लाभ होता है। किस ग्रह की दशा में किस द्रव्य की प्राप्ति होनी चाहिए, इसके लिये कहते हैं कि जिस ग्रह का जो द्रव्य हैं उस द्रव्य की प्राप्ति कहना चाहिए ॥ १० ॥

अथ पाकेशस्य ग्रहाणां नवांशगत्वेन फलमाह—

**पाकेशे भास्करांशस्थे भूपान्मानं विनिर्दिशेत् ।**
**अथवा पितृवर्गाद्वा चन्द्रांशान्मातृवर्गतः ॥ ११ ॥**

भाषा—दशा का स्वामी रवि के नवांश में स्थित हो तो राजा से मान होता है, अथवा पिता जनों के सम्बन्धी जनों से मान होता है। चन्द्रमा के नवांश में स्थित हो तो मातृवर्ग से सम्मान होता है ॥ ११ ॥

**कुजांशात् पुत्रवर्गेण नायकाद्वा फलं वदेत् ।**
**सौम्यांशाद् भ्रातृवर्गेण राजपुत्रेण वा फलम् ॥ १२ ॥**

भाषा - अगर दशा का स्वामी मंगल के नवांश में स्थित हो तो पुत्रवर्ग से अथवा सेनानायक से सम्मान होता है। बुध के नवांश में स्थित हों तो भ्रातृ-वर्ग से अथवा राजपुत्र से सम्मान होता है ॥ १२ ॥

**गुर्वंशे मातृवर्गेण सचिवाद्वा फलं वदेत् ।**
**शुक्रांशान्मातृवर्गेण स्त्रीवर्गाद्वा फलं भवेत् ॥ १३ ॥**

भाषा अगर दशा का स्वामी बृहस्पति के नवांश में स्थित हो तो मातृवर्ग या मन्त्री द्वारा फल कहना चाहिए। शुक्र के नवांश में स्थित हो तो मातृवर्ग या स्त्री वर्ग के द्वारा फल कहना चाहिए ॥ १३ ॥

जीवादि बृहस्पति-शुक्र चन्द्रमा ये मारक ग्रह हैं। यह स्थिति वृषराशिज जातक के जन्म से विचारना चाहिए ॥ १० ॥

भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः।
शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा ॥ ११ ॥

सूर्य मंगल और बृहस्पति पाप ग्रह हैं। मात्र शुक्र ही एक शुभ ग्रह है। मेषराशिस्थ के लिए शनियुत बृहस्पति पाप ग्रह कहा गया है; तद्वत् यहाँ समझिये। बृहस्पति स्वतन्त्र पाप नहीं है ॥ ११ ॥

नायं शशी निहन्ता स्यात्कारयेत्पापनिष्फलम्।
ज्ञातव्यानि द्वन्दजस्य फलान्येतानि सूरिभिः ॥ १२ ॥

मिथुन राशि लग्नज के लिए, केवल चन्द्रमा मारक नहीं होता अपि च पाप योग को निष्फल करने में चन्द्रमा समर्थ होता है ॥ १२ ॥

भार्गवेन्दुसुतौ पापौ भूसूताङ्गिरसौ शुभौ।
एक एव भवेत्साक्षात् भूसुतो योगकारकः ॥ १३ ॥

शुक्र-चन्द्रमा पाप ग्रह हैं। मंगल-गुरु शुभ ग्रह हैं। केवल मंगल ग्रह योगकारक होता है ॥ १३ ॥

निहन्ता कविरन्ये तु पापिनो मारकाह्वयाः।
कुलीरसभवस्यैवं फलान्यूहयानि सूरिभिः ॥ १४ ॥

कर्क राशिगत जातक के लिए शुक्र मारक होते हुए पाप ग्रह भी मारक होते हैं ॥ १४ ॥

रोहिणेयसितौ पापौ कुजजीवौ शुभावहौ।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं कुजशुक्रयोः ॥ १५ ॥

जैसे बुध-शुक्र पाप ग्रह हैं, वैसे मंगल-बृहस्पति शुभ ग्रह होते हैं। शुक्र-मंगल का योग शुभाय नहीं होता है ॥ १५ ॥

घ्नान्ति सौम्यादयः पापाः मारकत्वेन लक्षिताः।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहजस्य मनीषिभिः ॥ १६ ॥

बुधादि ग्रह मारक होने पर प्रबल होते हैं। सिंह लग्न राशि से उक्त विचार फल होता है ॥ १६ ॥

कुजजीवेन्दवः पापा एक एव भृगुः शुभः।
भार्गवेन्दुसुतावेव भवेतां योग कारकौ ॥ १७ ॥

चन्द्र, मंगल, गुरु पाप ग्रह होते हैं। केवल शुक्र शुभ होता है। ऐसी स्थिति में शुक्र और बुध योगकारक होते हैं ॥ १७ ॥

रवौ रसो विधोः पंक्तिर्भौमे सप्त विधुन्तुदे ।
अष्टादश सुराचार्ये षोडशैकोनविंशतिः ॥ ३ ॥
शनौ सप्तदश सौम्ये केतौ सप्त प्रकीर्तिताः ।
नखाः शुक्रस्य विज्ञेया विंशोत्तरशतं मतम् ॥ ४ ॥

अथान्तर्दशानयनमाह—

रव्यादीनां दशा गुण्या त्रिभिः स्वस्वदशाहृतः ।
घस्रादन-तर्दशामानं विंशोत्तरशतात्मके ॥ ५ ॥

भाषा— स्पष्ट है ॥ १-५ ॥

अथ मेषराशौ समुद्भूतबालकस्य मारकविचारे विशेषमाह—

मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ ६ ॥
परतन्त्रस्य जीवस्य पापकर्मापि निश्चितम् ।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ ७ ॥
मन्दादयो न हन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्भवे ॥ ८ ॥

भाषा— शनि, बुध और शुक्र पापग्रह हैं । बृहस्पति और रवि शुभ ग्रह हैं । अगर बृहस्पति के साथ शनि बैठा हो तो बृहस्पति में भी शुभत्व नहीं रहता है, क्योंकि परतन्त्र होकर बृहस्पति पाप करने वाला होता है, यह निश्चित है । अगर शुक्र मारकेश हो तो स्वयं शुक्र मारने वाला होता है । शनि आदि पापी ग्रह मारते नहीं हैं, जिसका मेषराशि में जन्म है, उसको यह फल होता है ॥ ६-८ ॥

अत्र वृषोद्भवे विशेषमाह—

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिशशिसुतौ ।
राजयोगकरः साक्षादेक एव रवेः सुतः ॥ ९ ॥

भाषा—बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा पाप ग्रह हैं, शनि और बुध शुभ ग्रह हैं। केवल एक शनि राजयोग कारक होता है ॥ ९ ॥

**जीवादयो ग्रहाः पापाः सन्ति मारकलक्षणाः।**
**बुधैस्तत्र फलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ॥१०॥**

भाषा—जीवादि ग्रह ( बृहस्पति, शुक्र चन्द्रमा ) मारक ग्रह होते हैं। इस तरह वृष राशि में उत्पन्न बालक का फल पण्डितों को जानना चाहिए ॥ १० ॥

अथ मिथुनोद्भवस्य विशेषतामाह—

**भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः।**
**शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा ॥११॥**

भाषा—मंगल, बृहस्पति, रवि पाप ग्रह हैं केवल एक शुक्र शुभ ग्रह है मेष राशि के लिए जैसे शनि से युत बृहस्पति पापग्रह माना गया है, वैसे यहां पर भी जानना, केवल बृहस्पति पाप ग्रह नहीं है ॥ ११ ॥

**नाशं शशी निहन्ता स्यात्कारयेत्पापनिष्फलम्।**
**ज्ञातव्यानि द्वन्द्वजस्य फलान्येतानि सूरिभिः ॥१२॥**

भाषा—चन्द्रमा पाप ग्रह होकर भी हानि कारक नहीं होता है, केवल निष्फल पाप को कराता है। इस तरह मिथुन में उत्पन्न का फल जानना ॥१२॥

अथ कुलीरसम्भवस्य विशेषमाह—

**भार्गवेन्दुसुतौ पापौ भूसुतांगिरसौ शुभौ।**
**एक एव भवेत्साक्षाद् भूसुतो योगकारकः ॥ १३ ॥**

भाषा—शुक्र और बुध पाप ग्रह है। मंगल और बृहस्पति शुभ ग्रह हैं। केवल एक मंगल योग कारक होता है ॥ १३ ॥

**निहन्ता कविरन्ये तु पापिनो मारकाह्वयाः।**
**कुलीरसम्भवस्यैवं फलान्यूह्यानि सूरिभिः ॥ १४॥**

भाषा—शुक्र मारक होता है और जो पाप ग्रह हैं वे भी मारक होते हैं। कर्क राशि में उत्पन्न का यह फल जानना ॥ १४ ॥

अथ सिंहोद्भवस्य फलमाह—

रौहिणेयसितौ पापौ कुजजीवौ शुभावहौ ।

प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं कुजशुक्रयोः ॥ १५ ॥

भाषा—रौहिणेय ( बुध ) और शुक्र पापग्रह हैं। मंगल और बृहस्पति शुभ ग्रह हैं। अगर शुक्र मंगल से युत हो तो शुभकारक नहीं होता है ॥ १५ ॥

घ्नन्ति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः ।

एवं फलानि ज्ञेयानि सिंहजस्य मनीषिभिः ॥ १६ ॥

भाषा—अगर मारक बुधादि पाप ग्रह हों तो मारक होते हैं। सिंह राशि में उत्पन्न बालक का फल पण्डितों को इस तरह जानना चाहिए ॥ १६ ॥

अथ कन्योद्भवस्य फलान्याह—

कुजजीवेन्दवः पापा एक एव भृगुः शुभः ।

भार्गवेन्दुसुतावेव भवेतां योगकारकौ ॥ १७ ॥

भाषा—मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा पापग्रह हैं। केवल एक शुक्र शुभ ग्रह है। शुक्र और बुध निश्चय करके योग कारक होते हैं ॥ १७ ॥

न हन्ता कविरन्ये तु मारकास्ते कुजादयः ।

प्रतीच्येत फलान्येवं कन्याराशिभवस्य हि ॥ १८ ॥

भाषा—शुक्र मारक नहीं होता है। अन्य कुजादि पापग्रह मारक होते हैं। कन्या राशि में उत्पन्न बालक के फल का इस तरह ज्ञान करना चाहिए ॥ १८ ॥

अथ तुलोद्भवस्य फलान्याह—

जीवार्कभूसुताः पापा शनैश्चरबुधौ शुभौ ।

भवेतां राजयोगस्य कारकौ चन्द्रचन्द्रजौ ॥ १९ ॥

भाषा—बृहस्पति, रवि और मंगल पाप ग्रह हैं। शनि और बुध शुभ हैं। चन्द्रमा और बुध राजयोगकारक होते हैं ॥ १९ ॥

कुजो न हन्ता जीवाद्याः परे मारकलक्षणाः ।

निहन्तारः फलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभुवः ॥ २० ॥

भाषा मंगल मारक नहीं होते हैं और जीवादि पापग्रह मारक होते हैं। इस तरह तुला राशि में उत्पन्न बालक का फल जानना चाहिए ।। २० ।।

अथ वृश्चिकजन्मनः फलमाह—

**सौम्यभौमसिताः पापाः शुभौ गुरुनिशाकरौ ।**
**सूर्यचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ ॥ २१ ॥**

भाषा—बुध, मंगल और शुक्र पाप ग्रह हैं, बृहस्पति और चन्द्रमा शुभ ग्रह हैं। और सूर्य, चन्द्रमा राजयोगकारक होते हैं ।। २१ ।।

**जीवो न हन्ता सौम्याद्याः परे मारकलक्षणाः ।**
**तत्तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः ॥ २२॥**

भाषा—बृहस्पति मारक नहीं होता, अन्य सौम्यादि पापग्रह मारक होते हैं। इस तरह वृश्चिकोत्पन्न बालक का फल जानना चाहिए ।। २२ ।।

अथ धनुर्जन्मफलमाह—

**एक एव कविः पापः शुभौ भौमदिवाकरौ ।**
**योगो भास्करसौम्याभ्यां न तु हन्तांशुमत्सुतः ॥२३॥**

भाषा—केवल एक शुक्र पापग्रह है। मंगल और सूर्य शुभ है। सूर्य और बुध राजयोग कारक होते हैं। अंशुमत्सुत (शनि) मारक नहीं होता ॥२३॥

**घ्नन्ति शुक्रादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः ।**
**ज्ञातव्यानि फलान्येवं धनुषश्च मनीषिभिः ॥ २४ ॥**

भाषा—शुक्र आदि पापग्रह मारकेश होने से मारक होते हैं, इस तरह धनु का फल पण्डितों को जानना चाहिए ।। २४ ।।

**कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ ।**
**स्वयं चैव न हन्ता स्यान्मन्दो भौमादयः परे ॥२५॥**
**तल्लक्षका निहन्तारः कविरेकः सुयोगकृत् ।**
**ज्ञातव्यानि फलान्येवं बुधैश्च मृगजन्मनः ॥ २६ ॥**

भाषा—मंगल, गुरु और चन्द्रमा पाप ग्रह हैं। शुक्र और बुध शुभ ग्रह

शुभ हैं। शनि मारक नहीं होता। अन्य भौमादि पाप ग्रह तल्लक्षण (मारक के लक्षण) होने से मारक होते हैं। केवल एक शुक्र योगकारक होता है इस तरह मकर राशि का फल जानना चाहिए॥ २५-२६॥

अथ कुम्भजन्मनः फलमाह —

जीवचन्द्रकुजाः पापा एको दैत्यगुरुः शुभः।
राजयोगकरो भौमः कविरेव बृहस्पतिः॥ २७॥
न हन्ता घ्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिताः।
एवमेव फलान्यूह्यान्येवं हि घटजन्मनः॥ २८॥

भाषा—बृहस्पति, चन्द्रमा और मंगल पापग्रह हैं। केवल एक दैत्यगुरु (शुक्र) शुभ है। मंगल और शुक्र राजयोगकारक हैं। बृहस्पति मारक नहीं होता, भौमादि पापग्रह (मंगल, चन्द्रमा, बृहस्पति) मारकेश होने से मारक होते हैं। इस तरह कुम्भ राशि का फल जानना चाहिए॥ २७-२८॥

अथ मीनजन्मनः फलमाह —

मन्दशुक्रांशुमत्सौम्याः पापा भौमविधू शुभौ।
महीसुतगुरू योगकारकौ नैव भूसुतः॥ २९॥
मारको मारकाभिज्ञौ मन्दज्ञौ घ्नन्ति पापिनौ।
इत्यूह्यानि बुधैस्तत्र फलानि झषजन्मनः॥ ३०॥

भाषा—शनि, शुक्र, रवि और बुध पापग्रह हैं। मंगल और चन्द्रमा शुभ ग्रह हैं। मंगल और बृहस्पति योगकारक होते हैं। मारक लक्षण लक्षित भी मंगल मारक नहीं होता। पापी शनि और बुध मारक लक्षण लक्षित होने से मारक होते हैं। इस तरह मीन का फल जानना चाहिए॥ २९-३०॥

अथ मारकविचारेऽस्य शास्त्रस्य विशेषतामाह—

एतच्छास्त्रानुसारेण मारकान्निर्दिशेद् बुधः।
चन्द्रसूर्यौ विना सर्वे मारकाः परिकीर्तिताः॥ ३१॥
स्वदशायां स्वभुक्तौ च नराणां निधनं नहि।
क्वचिद् भुक्तौ समिच्छन्ति स्वभुक्तौ न कदाचन॥३२॥

भाषा—पण्डित को इस शास्त्र के अनुसार मारक का निश्चय करना चाहिए चन्द्रमा और मंगल को छोड़कर सब मारक होते हैं। मारक अपनी दशा में नहीं मारता। किन्तु अपनी दशा में किसी अन्य के अन्तर्दशा में मारता है। अपनी अन्तर्दशा में नहीं ॥ ३१-३२ ॥

इति मध्यपाराशरीटीकायां सप्तमः परिच्छेदः।

—:०:—

# अथाष्टमः परिच्छेदः

अथ लग्नादिकं विचिन्त्यमित्याह—

**लग्नाच्चिन्त्यं मूर्तिकीर्तिसाङ्गोपाङ्गनिरूपणम्।**
**स्थितिस्वरूपसम्पत्तिर्जन्मलग्नगतं फलम् ॥ १॥**

भाषा—लग्न से अंग का सांगोपांगनिरूपण, कीर्ति का सांगोपांगनिरूपण, स्थिति, स्वरूप, सम्पत्ति और जन्मलग्नगत फल का विचार करना चाहिए ॥१॥

अथ धनस्थानादिकं विचिन्त्यमित्याह—

**धनं सुखं च भुक्तिं च सत्यं च बहुवक्तृताम्।**
**सव्यनेत्राल्पाहारश्च धनस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ २ ॥**

भाषा—धन, सुख, भोग विशेष, सत्य, बहुत बोलना, दक्षिण नेत्रादि तथा अल्पाहार का दूसरे स्थान से विचार करना चाहिए ॥ २ ॥

अथ भ्रातृस्थाने विचारणीयमाह—

**भ्रातृकण्ठौ विक्रमश्च क्षुधाभरणपात्रताम्।**
**भ्रातृस्थानफलं सर्वं तत्तन्नामफलं दिशेत् ॥ ३ ॥**

भाषा—तीसरे से भाई, कण्ठ, विक्रम, क्षुधा, भूषण, पात्रता, भ्रातृस्थानजन्य सब फल का विचार करना चाहिए ॥ ३ ॥

अथ बन्धुस्थाने विचारणीयमाह—

**बन्धुवाहनमातुश्च हिंसासवसुखगृहाः ।**
**मित्रवाहुरिदं सर्वं बन्धुस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ४ ॥**

भाषा—बन्धु, वाहन, माता, राज्यसुख, गृह, मित्र, वाहु ये सब चौथे भाव से विचारना चाहिए ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावाद्विचारणीयमाह—

**पुत्रो बुद्धिश्च मित्रं च देवताभक्तिरुत्तमा ।**
**हृदयं मातुलश्चैव सुतस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ५ ॥**

भाषा—पञ्चमस्थान से पुत्र, बुद्धि, मित्र, देवता-भक्ति, हृदय, मातुल इनका विचार करना चाहिए ॥ ५ ॥

अथ षष्ठाद्विचारणीयमाह—

**रिपुज्ञातिबलं रोगमुदर शत्रुरेव च ।**
**षष्ठस्थानादिदं नाम तत्तन्नामफलं दिशेत् ॥ ६ ॥**

भाषा—रिपु, ज्ञाति; बल, रोग, उदर, शत्रु, ये सब षष्ठस्थान के नाम हैं इसलिए इन सबका इससे चिन्तना करनी चाहिए ॥ ६ ॥

अथ सप्तमादष्टमाच्च विचारणीयमाह—

**कलत्रभोगश्छत्रं च दन्तवाभिश्च रोगवान् ।**
**गुदं सङ्कटके चैव आयुःस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ७ ॥**

भाषा—सप्तम से स्त्रीसम्बन्धी भोग, छत्र, दन्त, नाभि, रोग, इन सबों का विचार करना चाहिए । गुह्यस्थान, जीवन, मरण इनका अष्टम भाव से विचार करना चाहिए ॥७॥

अथ नवमस्थानाद्दशमाच्च विचारणीयमाह—

**भाग्यं तीर्थं च धर्मं च पितृस्थानमिति क्रमात् ।**
**मानराज्यत्यागकीर्तिः कर्मव्यापारमेव च ॥ ८ ॥**

भाषा—नवमभाव से भाग्य, तीर्थ, धर्म, पिता, गुरु इत्यादि का विचार

करता एवं मान, राज्य, दान, कीर्ति, कर्म, व्यापार इत्यादि का दशम भाव से विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ लाभाद् द्वादशच्चाविचारणीयमाह—

लाभं च ज्येष्ठभ्रातरं कर्णाङ्घमिति क्रमात् ।
रिष्फव्ययं पितृधनं वादयोषादिनाम च ॥ ९ ॥

भाषा—लाभ, ज्येष्ठ भाई, कर्ण-जङ्घादि का लाभस्थान से एवम् व्ययस्थान से व्यय, पितृधन, वाद-विवाद, योषादि का नाम इनका विचार करना चाहिये ॥९॥

अथ सजलनिर्जलराशीनाह—

कुम्भकर्कटगोमीनमकरालितुलाधरा: ।
सजला राशय: प्रोक्ता निर्जला शेषराशय: ॥ १० ॥

भाषा—कुंभ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला ये सजल राशि हैं। शेष (मेष, मिथुन, सिंह कन्या धन) ये सब निर्जल हैं ॥ १० ॥

अथ ग्रहविभागमाह—

रविभौमार्कजा शुष्का: सजलौ चन्द्रभार्गवौ ।
बुधवाचस्पती ज्ञेयौ सजलौ जलराशिगौ ॥ ११ ॥

भाषा—रवि, मंगल, शनि ये शुष्क ( अग्निग्रह ) हैं। चन्द्रमा और शुक्र सजलग्रह हैं। बुध और गुरु जल राशि में होने से सजल होते हैं ॥ ११ ॥

सुविदित "दरभंगा" ख्ये प्रान्ते पत्रालये "वहेड़ा" ख्ये ।
"अरिसो" नाम्ना ख्यातं नगरं भूदेववृन्दसंवलितम् ॥
अकरोत्तत्र निवासी श्रीमद् "बलदेव" शर्म्मणस्तनय: ।
"श्री अच्युतादिनन्द:" पाराशर्य्यंटीकनं हिन्द्याम् ॥

समाप्तेयं मध्यपाराशरी ।

—:०:—

# परिचय:

आसीद्विदेहविषयेऽखिललोकदक्षः
श्रीकश्यपान्वयभवोऽतिविशुद्धकर्मा ।
झोपाह्व "देवन" इति प्रथितो हि नाम्ना ।
भूमौ समैर्नरवरैरनिशं सुपूज्यः ॥ १ ॥

पुत्रेष्वनेकविधकौशलगुम्फितेषु
तस्य त्रयः समभवत्सुतरां सुयोग्याः ।
तत्रानुजो निखिललोकनितान्तशान्तः
स्वच्छाशयो द्विजवरो "जयदत्त" संज्ञः ॥ २ ॥

तस्याभवत्सुतकदम्बकसर्वयोग्य-
श्चास्मत्पितामहपिता किल "भाइनाथः" ।
जातो विशुद्धगुणवर्यपितामहो मे
"गोसाँइ" संज्ञ इह शान्तगुणैकमूर्तिः ॥ ३ ॥

तस्याभवन्निखिललोकहितैकदक्षाः
पुत्रा विवेकनिपुणा ह्यतिशान्तकान्ताः ।
पञ्चानघाश्चगुणसंवलितास्त्वमीषु
सर्वानुजो मम पिता "बलदेव" नामा ॥ ४ ॥

भूमौ सुरेन्द्र इव सर्वनरैः प्रतीक्ष्यः
शान्तः सदा प्रचुरदेवविदग्रगण्यः ।
कारुण्यपूर्णहृदयः परिपन्थिहीनः
आमर्षलोभरहितोऽतिविनीतवेषः ॥ ५ ॥

तत्तनया विविधधियः सप्तमिता लोकलोचनानन्दाः ।
ज्येष्ठस्तेषु सुहृदयः श्रीमान् "रघुवंश" नामास्ति ॥ ६ ॥

सर्वं गृहभारं ह्यादायामुष्मै पिता गतः स्वर्गम् ।
वसुपञ्चनागचन्द्रे ( १८५८ ) शाकेऽङ्कतिथौ नभः शुचौ चन्द्रे ॥ ७ ॥

तस्यानुजोऽल्पधिषणोऽयमच्युतानन्दनामाहम् ।
नेत्रारिनागचन्द्रे (१८६२) शाकेऽङ्कतिथौ मधोः शुचौ चन्द्रे ॥ ८ ॥

बोधं गुरुभ्य आप्य "श्रीगेनालाल" संज्ञेभ्यः ।
कारयामकार्षमस्य ग्रन्थस्य मनोहरीं टीकाम् ॥ ९ ॥

—:०:—

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला १३५

# लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी

'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेता

चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन
पोस्ट बॉक्स संख्या ११३८
वाराणसी-२२१००१ ( भारत )

## ज्योतिष ग्रन्थाः—

जन्मपत्र-विधान। सोदाहरण 'तत्वप्रभा' हिन्दी टीका सहित।
प० लषणलाल झा ३—५०

प्रश्नाङ्कचूडामणिः ध्वजादिप्रश्नगणना च। पण्डित सीताराम झा। १—००

चमत्कारचिन्तामणिः। पं० गणपति देव शास्त्री कृत सान्वय भावबोधिनी' हिन्दी टीका सहित १—५०

शीघ्रबोधः। दैवज्ञ श्रीकाशीनाथ प्रणीतः 'सरला' हिन्दी टीका सहित ६—००

ग्रहगोचरफलम्। 'शिशुतोषिणी' हिन्दी व्याख्या सहित १—००

पञ्चाङ्गविज्ञानम्। हिन्दी टीका सहित। १—००

गोलपरिभाषा। 'तत्त्वप्रकाशिका' हिन्दी टीका सहित १—००

शिशुबोधः। कलाधर शर्मा विरचित। 'विमला' हिन्दी टीका सहित १—५०

गंगालहरी। 'निर्मला' हिन्दी टीका सहित। श्री विश्वेश्वर झा १—००

प्रश्नभूषणम्। 'विमला' संस्कृत हिन्दी टीका सहित ४—००

लघुपाराशरी मध्यपाराशरी। 'सुबोधिनी' संस्कृत हिन्दी टीका सहित। पं० श्री अच्युतानन्द झा ४—००

ताजिकनीलकण्ठी। पं० गंगाधर मिश्र कृत 'जलदगर्जना' संस्कृतटीका 'गूढग्रन्थिविमर्षिनी' वासना 'उदाहरणचन्द्रिका' हिन्दी टीकासहित २५·००

वास्तुरत्नावली। सोदाहरण 'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १५—००

वास्तुपूजापद्धतिः। गृहे गृध्राहिपतनशान्तिपद्धतिः गृहप्रवेशपद्धतिश्च। स० प० अच्युतानन्द झा ४—००

कारकचक्रम्। श्री भवानन्दसिद्धान्तवागीशकृतम्। 'माधवी' टीका प्रदीप टिप्पणी सहितम्। सं० श्री ब्रह्मशंकरशास्त्री ३—००

व्युत्पत्तिप्रदर्शनम् तथा गूढाशुद्धिप्रदर्शनम्। पं० महादेव उपाध्याय २—००

धराचक्रम्। महर्षिलोमशकृतम्। 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित १—००

भावफलाध्यायः। (लोमशोक्त-भृगु-संहितोक्त-युग्म-संस्करण) सुबोधिनी विमला हिन्दी टीका सहित १—००

बृहज्जातकम्। 'विमला' हिन्दी टीका सहित। पं. अच्युतानन्द झा २०—००

अन्य प्राप्तिस्थान—चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, कचौड़ीगली, वाराणसी